भारतीय वैश्विक परिषद

हिंद महासागर में भारत और द्वीप राष्ट्र

भू-राजनीति और सुरक्षा परिप्रेक्ष्य विकसित करना

भारतीय वैश्विक परिषद
सप्रू हाउस, नई दिल्ली
2023

भारतीय वैश्विक
परिषद

हिंद महासागर
में
भारत और द्वीप राष्ट्र

भू-राजनीति और सुरक्षा
परिप्रेक्ष्य विकसित करना

भारतीय वैश्विक परिषद

सप्रू हाउस, नई दिल्ली

2023

© आईसीडब्ल्यूए फरवरी 2023

अस्वीकरण: इन लेखों में विचार, विश्लेषण और सिफारिशें लेखकों के हैं।

विषय-वस्तु

आमुख 5

प्रस्तावना 7

स्वागत अभिभाषण

विजय ठाकुर सिंह 11

मुख्य भाषण

हिंद महासागर: समुद्री शक्ति से महासागर समृद्धि तक

संजया बारु 13

दक्षिणी पड़ोस में द्वीप राष्ट्र:

श्रीलंका और मालदीव

भारत, श्रीलंका और मालदीव के दृष्टिकोण से समुद्री सुरक्षा के मुद्दे

एम पी मुरलीधरन 20

भारत और दक्षिणी पड़ोस: भू-राजनीतिक और सुरक्षा परिप्रेक्ष्य विकसित करने के लिए भारत का दृष्टिकोण

एन. मनोहरन 27

श्रीलंका के राजनीतिक-आर्थिक संकट में चीन; विदेश नीति और सुरक्षा परिप्रेक्ष्य

असंगा अबेयागूनसेकरा 36

मालदीव, हिंद महासागर क्षेत्र में जलवायु सुरक्षा और भू-राजनीति

अथौल्ला ए रशीद 44

दक्षिण पश्चिम हिंद महासागर में द्वीप राष्ट्र:

मेडागास्कर, सेशेल्स और मॉरीशस

टिप्पणियां

अनूप मुद्गल 52

भारत और पश्चिमी हिंद महासागर द्वीप राष्ट्र कुछ अवलोकन करते हैं

अदलुरी सुब्रमण्यम राजू 55

मॉरीशस और हिंद महासागर

प्रिया बहादूर 60

सेशेल्स की समुद्री अर्थव्यवस्था की रूपरेखा

मल्शिनी सेनारत्ने 66

मेडागास्कर की कूटनीति, फिहावनाना और हिंद महासागर में सामरिक प्रतिस्पर्धा

जुवेंस एफ रामासी 70

टिप्पणियां

आर एस वासन 77

कार्यक्रम 79

लेखकों के बारे में 83

आमुख

हिंद महासागर में भारत और द्वीप राष्ट्र: विकसित भू-राजनीति और सुरक्षा परिप्रेक्ष्य, भारतीय वैश्विक परिषद (आईसीडब्ल्यूए) द्वारा एक संपादित प्रकाशन, 6 सितंबर 2022 को परिषद द्वारा आयोजित एक वेब-आधारित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का परिणाम है। संगोष्ठी क्षेत्र में विकसित भू-राजनीति और भू-रणनीतिक मुद्दों और द्वीप राष्ट्रों द्वारा सामना किए जाने वाले समकालीन सुरक्षा मुद्दों पर हिंद महासागर द्वीप राष्ट्रों के विभिन्न दृष्टिकोणों को सामने लाने के परिषद के प्रयास का हिस्सा थी।

इस क्षेत्र में भारत की गहरी दिलचस्पी इसके ऐतिहासिक संबंधों और शांति और स्थिरता के प्रति प्रतिबद्धता से निर्धारित होती है। दशकों से, भारत ने हिंद महासागर के द्वीप राष्ट्रों के साथ एक बहुआयामी संबंध विकसित करके खुद को एक सुरक्षा प्रदाता के रूप में प्रस्तुत किया है, जिसमें समुद्री सुरक्षा सहयोग, प्राकृतिक आपदाओं और मानवीय आपात स्थितियों की प्रतिक्रिया भी शामिल है। इस क्षेत्र में भारत की बढ़ती भूमिका द्वीपीय देशों के साथ इसके बढ़ते आर्थिक और राजनीतिक संबंधों से भी स्पष्ट है। साथ ही, भारत एक साझा सुरक्षा परिप्रेक्ष्य/ढांचा विकसित करने की चुनौतियों, विभिन्न आंतरिक और बाहरी सामरिक बाधाओं और अतिरिक्त क्षेत्रीय शक्तियों के बढ़ते हितों के कारण क्षेत्र में शक्ति संतुलन के मुद्दों से अच्छी तरह से अवगत है। ये मुद्दे एक चुनौती बने हुए हैं और एक साझा सुरक्षा परिप्रेक्ष्य स्थापित करने और क्षेत्र की शांति, सुरक्षा और स्थिरता, विकास और समृद्धि के लिए दूरगामी प्रभाव हैं।

इसलिए, संगोष्ठी में पूर्व भारतीय राजनयिकों/चिकित्सकों, जिन्होंने हिंद महासागर के द्वीप राष्ट्रों, दक्षिणी और दक्षिण-पश्चिमी हिंद महासागर दोनों में सेवा की, पूर्व भारतीय नौसेना कर्मियों और भारत और श्रीलंका, मालदीव, मॉरीशस, सेशेल्स और मेडागास्कर के द्वीप राष्ट्रों के शिक्षाविदों को एक साथ जोड़ा। संगोष्ठी में विचार-विमर्श ने क्षेत्र की निरंतर विकसित भू-राजनीति में भारत और द्वीप राष्ट्रों के बीच समुद्री सुरक्षा सहयोग के लिए चुनौतियों और संभावनाओं को समझने में मदद की। यह प्रकाशन यह समझने में भी मदद करता है कि द्वीप राष्ट्र इस क्षेत्र में भारत की सामरिक भूमिका को कैसे अवलोकन करते हैं।

यह प्रकाशन, चिकित्सकों, विद्वानों और छात्रों के लिए मूल्यवान होगा जो हिंद महासागर क्षेत्र में द्वीप राष्ट्रों द्वारा सामना की जाने वाली सुरक्षा गतिशीलता और मुद्दों को समझने में रुचि रखते हैं।

विजय ठाकुर सिंह

महानिदेशक
भारतीय वैश्विक परिषद्
सप्रू हाउस

फरवरी 2023

प्रस्तावना

विकसित भू-राजनीति में, हिंद महासागर के द्वीप राष्ट्रों का सामरिक महत्व काफी बढ़ गया है। यह देखते हुए कि हिंद महासागर क्षेत्र 21वीं सदी में अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के एक प्रमुख आधार के रूप में उभर रहा है, प्रमुख अतिरिक्त-क्षेत्रीय शक्तियां हिंद महासागर क्षेत्र में पैर जमाने के लिए सक्रिय प्रयास कर रही हैं। इस संदर्भ में, छोटे लेकिन सामरिक रूप से महत्वपूर्ण द्वीप राष्ट्रों की भूमिका और स्थिति महत्वपूर्ण है। अपने सामरिक प्रभाव और सुरक्षा उपस्थिति का विस्तार करने के लिए प्रमुख शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा ने इन छोटे द्वीप राष्ट्रों को सौदेबाजी की शक्ति के साथ संपन्न किया है और लाभ को अधिकतम करने के लिए अपने सामरिक रूप से महत्वपूर्ण स्थान का लाभ उठाया है।

वैश्विक भू-राजनीतिक बदलाव और महान शक्ति प्रतिद्वंद्विता के परिणामस्वरूप हिंद महासागर क्षेत्र में सामरिक प्रतिस्पर्धा हो रही है। क्वाड और एयूसीयूस के सदस्य देशों की क्षेत्र में अपने पैर जमाने में बढ़ती दिलचस्पी को क्षेत्र में चीन की मुखर उपस्थिति के प्रत्युत्तर के रूप में भी देखा जा रहा है। सैन्य ठिकानों, श्रवण चौकियों, नौसेना निगरानी स्टेशनों, संयुक्त सैन्य अभ्यास, और/या रसद सहायता सुविधाओं के रूप में सुरक्षा उपस्थिति हिंद महासागर में संचालित करने के लिए नौसेना बलों की क्षमता को बढ़ा रही है। इससे हिंद महासागर से गुजरने वाली वैश्विक ऊर्जा और आर्थिक सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों की निगरानी में भी मदद मिलेगी। हिंद महासागर में महान शक्ति की राजनीति भी द्वीप राष्ट्रों के लिए नई कमजोरियां पैदा कर रही है। समुद्री डकैती, आतंकवाद, आईयूयू मत्स्यन जैसे गैर-पारंपरिक सुरक्षा खतरों में वृद्धि हुई है जो क्षेत्रीय सुरक्षा और स्थिरता के लिए चुनौती पैदा कर रहे हैं। प्रमुख शक्तियों की बढ़ती उपस्थिति और सामरिक प्रतिद्वंद्विता को तेज करने के संदर्भ में हिंद महासागर के द्वीपीय राष्ट्रों के साथ भारत का जुड़ाव आकार ले रहा है।

एक आर्थिक और सैन्य, विशेष रूप से नौसैनिक, शक्ति के रूप में भारत के उदय की गूंज पूरे क्षेत्र में महसूस की जाती है। भारत खुद को पारंपरिक और गैर-पारंपरिक सुरक्षा क्षेत्र दोनों में हिंद महासागर के राष्ट्रों के लिए "पसंदीदा सुरक्षा भागीदार" के रूप में देखता है। द्वीपीय देशों ने सबसे पहले प्रतिक्रिया देने वाले के रूप में समर्थन के लिए भारत की ओर देखा है। भारत ने सहायता के लिए कॉल का प्रत्युत्तर देने की मांग की है, चाहे वह मालदीव में जल आपातकाल हो या मेडागास्कर में चक्रवात के मद्देनजर राहत प्रयास। इसलिए, भारत की विदेश नीति में हिंद महासागर द्वीप राष्ट्रों को समझना और उनका पता लगाना आवश्यक है।

भारत पड़ोसी प्रथम नीति के ढांचे के भीतर और सागर (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) पहल के हिस्से के रूप में हिंद महासागर द्वीप देशों के साथ सख्ती से जुड़ रहा है। पिछले एक वर्ष में भारत ने आर्थिक संकट से निपटने के लिए श्रीलंका को काफी मदद दी है। मालदीव के मामले में, संबंध सुदृढ़ हुए हैं

और रक्षा और सुरक्षा सहयोग संबंधों के एक प्रमुख निर्माण खंड के रूप में उभरा है। सेशेल्स और मॉरीशस पश्चिमी हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की पहुंच में महत्वपूर्ण साझेदार हैं। भारत की अफ्रीका नीति और हिंद महासागर रणनीति पश्चिमी हिंद महासागर में एक साथ हैं। सेशेल्स और मॉरीशस की नियमित, उच्च स्तरीय यात्राओं ने संबंधों को घनिष्ठ किया है। भारतीय नौसेना प्रमुख की सेशेल्स यात्रा और 2022 में मॉरीशस के प्रधानमंत्री की आठ दिवसीय भारत यात्रा, इन राष्ट्रों को भारत द्वारा दिए जाने वाले महत्व को रेखांकित करती है। मेडागास्कर, कोमोरोस और फ्रांसीसी हिंद महासागर क्षेत्र भी दक्षिण-पश्चिम हिंद महासागर के साथ भारत के जुड़ाव में प्रमुखता से शामिल हैं।

> अपने रणनीतिक प्रभाव और सुरक्षा उपस्थिति का विस्तार करने के लिए प्रमुख शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा ने इन छोटे द्वीप राष्ट्रों को सौदेबाजी की शक्ति के साथ संपन्न किया है और लाभ को अधिकतम करने के लिए अपने रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थान का लाभ उठाया है।

इस पृष्ठभूमि में, 6 सितंबर 2022 को आयोजित 'हिंद महासागर में भारत और द्वीप राष्ट्र: विकसित भू-राजनीति और सुरक्षा परिप्रेक्ष्य' पर वेब आधारित आईसीडब्ल्यूए संगोष्ठी ने भारत, श्रीलंका, मालदीव, मेडागास्कर, मॉरीशस और सेशेल्स के वक्ताओं को इन और अन्य संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एकजुट किया जो भारत और इन द्वीप राष्ट्रों की सुरक्षा गतिशीलता को प्रभावित करते हैं। यह खंड संगोष्ठी के विषय पर वक्ताओं द्वारा साझा किए गए विभिन्न दृष्टिकोणों का एक परिणाम है।

वाइस एडमिरल (सेवानिवृत्त) एम पी मुरलीधरन का शोध-पत्र भारत और श्रीलंका और मालदीव के द्वीप राष्ट्रों के बीच समुद्री सुरक्षा के मुद्दों की जांच करता है। यह चेतावनी और निगरानी पोस्ट प्रदान करने में द्वीप राष्ट्रों के सामरिक महत्व पर प्रकाश डालता है, और महासागरों में गहराई से संचालन के लिए रसद आधार प्रदान करता है। भारत, श्रीलंका और मालदीव की सामरिक स्थिति, उन्हें हिंद महासागर क्षेत्र और उससे आगे जल की सुरक्षा और स्थिरता में एक अतिरिक्त हिस्सेदारी देती है। उनके त्रिपक्षीय सहयोग को बढ़ाने से आपसी चिंताओं को दूर करने के अलावा, पूरे क्षेत्र में समुद्री वातावरण में सुरक्षा और स्थिरता सुदृढ़ होगी, जिससे आर्थिक विकास और समृद्धि आएगी।

एन. मनोहरन के शोध-पत्र में कहा गया है कि इस क्षेत्र के उभरते भू-राजनीतिक और सुरक्षा दृष्टिकोणों में

तीन व्यापक रुझानों की पहचान की जा सकती है: एक अमेरिकी सामरिक मुद्रा है जिसने हिंद महासागर क्षेत्र में एक नई रुचि देखी है। दूसरा, न केवल क्षेत्रीय या उप-क्षेत्रीय स्तर पर, बल्कि वैश्विक स्तर पर एक शक्ति के रूप में चीन का उदय है। और तीसरा, हिंद-प्रशांत का एक नई भू-राजनीतिक अवधारणा के रूप में उभरना जिसने भारतीय दक्षिणी पड़ोस को एक नए महत्व के लिए प्रेरित किया है। शोध-पत्र में सामरिक, गैर-पारंपरिक सुरक्षा खतरों, आर्थिक और घरेलू मुद्दों जैसे अपने दक्षिणी पड़ोस की बात आने पर भारत के राष्ट्रीय हितों से जुड़ी चिंताओं के बारे में भी विस्तार से उल्लेख किया गया है।

असंगा अबेयागूनसेकरा के शोध-पत्र ने चीन के बाहरी प्रभाव पर विशेष ध्यान देने के साथ हाल ही में श्रीलंका के राजनीतिक-आर्थिक संकट की पृष्ठभूमि पर चर्चा की। राजनीतिक-आर्थिक नीतिगत फैसले क्या थे जिन्होंने संकट को जन्म दिया? संकट में चीन की क्या भागीदारी थी? श्रीलंका के संकट का भारत और हिंद महासागर की सुरक्षा पर क्या असर पड़ा? गोटबाया राजपक्षे ने श्रीलंका की विदेश नीति की मुद्रा को चीन की ओर क्यों झुकाया? श्रीलंका को किन क्षेत्रीय और वैश्विक पहलों से लाभ हो सकता है? अखबार का तर्क है कि श्रीलंका संकट ने हिंद महासागर क्षेत्र को दो आयामों में प्रभावित किया है। पहला, आर्थिक आयाम है, जहां भू-राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए चीन की भू-आर्थिक रणनीति का उपयोग किया गया, जिससे देश की संप्रभुता और क्षेत्रीय सुरक्षा को खतरा पैदा हो गया। दूसरा, सुरक्षा आयाम है, जहां सुरक्षा खर्च पर सीमित वित्तीय संसाधन श्रीलंकाई जल क्षेत्र की गश्त को प्रभावित कर सकते हैं, आतंकवाद विरोधी उपायों, मानव तस्करी के प्रयासों और समग्र समुद्री सुरक्षा क्षेत्र में भाग ले सकते हैं।

श्री अथाउल्ला ए रशीद के शोध-पत्र में कहा गया है कि हाल के वर्षों में, मालदीव ने चीन जैसे अतिरिक्त क्षेत्रीय नायकों के साथ बहुत करीबी विकास सहयोग संबंध विकसित किए हैं जो पारंपरिक क्षेत्रीय सिद्धांतों और प्रथाओं का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। 2013 से 2018 तक मालदीव में चीन के जुड़ाव के उदय ने क्षेत्र में एकल शक्तियों के उदय के बारे में भारत (और उसके हिंद-प्रशांत भागीदारों) सहित क्षेत्रीय नायकों के लिए कई चिंताएं पैदा कीं। हालांकि, 2018 के अंत में सत्ता में आई नई सरकार ने 'भारत-प्रथम' नीति को दोहराया और चीन के साथ किए गए कुछ प्रमुख निवेशों को खत्म कर दिया। यह शोध-पत्र हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) में मालदीव से संबंधित विदेशी साझेदारी और भू-राजनीति के चालकों का एक संक्षिप्त विश्लेषण भी प्रदान करता है। और मालदीव की नीतिगत प्राथमिकताएं एक द्वीप राष्ट्र में निहित अद्वितीय कमजोरियों से काफी प्रभावित होती हैं जो लगातार समुद्र के स्तर में वृद्धि से खतरे में है।

अदलुरी सुब्रमण्यम राजू का शोध-पत्र पश्चिमी हिंद महासागर में द्वीपों के साथ भारत के जुड़ाव के महत्व की पड़ताल करता है। अखबार में कहा गया है कि भारत के पश्चिमी हिंद महासागर द्वीपीय देशों के साथ सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंध हैं जो भारत को इस क्षेत्र में भू-राजनीतिक लाभ देते हैं। भारतीय प्रवासियों की उपस्थिति भी इस क्षेत्र के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने के लिए एक कड़ी के रूप में कार्य कर रही है। भारत ने विभिन्न कार्यों को करके इस क्षेत्र में अपनी रुचि का प्रदर्शन किया है जिसमें मानवीय सहायता, आपदा राहत, खोज और बचाव (एसएआर) आदि शामिल हैं। शोध-पत्र में हिंद-प्रशांत महासागर

पहल (आईपीओआई) के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया है, जो सात स्तंभों पर केंद्रित है: समुद्री पारिस्थितिकी, सुरक्षा, समुद्री संसाधन, क्षमता निर्माण, आपदा जोखिम में कमी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी और व्यापार और कनेक्टिविटी। यह पहल द्वीप राष्ट्रों के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे भू-राजनीति की तुलना में भू-अर्थशास्त्र पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं।

प्रिया बहादूर के शोध-पत्र में हिंद महासागर की सुरक्षा के प्रति मॉरीशस के दृष्टिकोण का विश्लेषण किया गया है। शोध-पत्र विशिष्ट सवालों के प्रत्युत्तर देने की कोशिश करता है जैसे कि क्या मॉरीशस की हिंद महासागर के बारे में कोई विशिष्ट नीति है या वर्षों से इस क्षेत्र को देखने के तरीके में बदलाव हुए हैं? क्या मॉरीशस की स्वतंत्रता के बाद उसकी निर्भरता और क्षेत्रीय जल से संबंधित कोई नीति थी? शोध-पत्र में कहा गया है कि मॉरीशस को हिंद महासागर के विभिन्न नायकों के साथ मिलकर काम करना जारी रखना चाहिए ताकि इस क्षेत्र के लिए एक सामंजस्यपूर्ण रणनीति तैयार की जा सके, जिसके प्रमुख पारगमन मार्गों का उपयोग दुनिया के लगभग दो तिहाई समुद्र-आधारित वाणिज्य द्वारा किया जाता है। मॉरीशस सरकार अपने सीमित संसाधनों के साथ अकेले हिंद महासागर के लिए एक विशिष्ट रणनीति तैयार करने के लिए आगे नहीं बढ़ सकती है क्योंकि कोई भी राष्ट्र अलग-थलग नहीं रह सकता है।

माल्शिनी सेनारत्ने के शोध-पत्र में बताया गया है कि सेशेल्स देश की समुद्री अर्थव्यवस्था क्षेत्रों को बनाकर, कायाकल्प करके और ऊपर उठाकर अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण पर केंद्रित है, लेकिन यह देश को पर्यावरण और सामाजिक-आर्थिक सिद्धांतों की दृष्टि खोने के बिना होना चाहिए जो इसके समुद्री अर्थव्यवस्था रोडमैप पर हस्ताक्षर या मार्गदर्शन करते हैं। द्वीप राष्ट्रों के तटों से परे साझेदारी और सहयोग इसलिए तत्काल और सबसे महत्वपूर्ण हो जाता है। भारत जैसे पसंद के प्रमुख भागीदारों के साथ जुड़ने से समुद्री सुरक्षा और निगरानी, अनुसंधान और सर्वेक्षण के साथ-साथ स्थानीय क्षमता विकास सहित कई समुद्री अर्थव्यवस्था के मोर्चों पर कई और काफी सफल सहयोग देखे गए हैं। सेशेल्स के समुद्री अर्थव्यवस्थाएजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए इस तरह के सहयोग और साझेदारी आवश्यक होगी।

जुवेंस एफ रामासी के शोध-पत्र में इस क्षेत्र में पड़ोसी और अतिरिक्त क्षेत्रीय राष्ट्रों की भागीदारी पर प्रकाश डाला गया है जो आईओआर में पुरानी और नई शक्तियों के बीच सामरिक प्रतिस्पर्धा का कारण बन रहा है। बहुध्रुवीय दुनिया में नई भू-राजनीतिक व्यवस्था की दहलीज पर नहीं होने के लिए, जिसमें हिंद महासागर सहित अफ्रीका थिएटरों में से एक है, यह दक्षिण-पश्चिम हिंद महासागर के राष्ट्रों पर निर्भर है, कि वे विभिन्न निकायों के भीतर अपनी राजनीतिक और राजनयिक आवाज सुनें। इसके लिए मेडागास्कर ने फिहवनन के सिद्धांत के साथ मिलकर एक पूर्ण कूटनीति शुरू की है जो *वसुधैव कुटुम्बकम* के भारतीय लोकाचार के समान है।

कमोडोर (सेवानिवृत्त) आर.एस. वासन के शोध-पत्र में कहा गया है कि वसुधैव कुटुम्बकम के विचार के ढांचे

के भीतर, भारत क्षेत्र के छोटे द्वीप राष्ट्रों के साथ जुड़ने के मामले में सही रास्ते पर है, जिसका अर्थ है कि दुनिया एक परिवार है। चीन के विपरीत, जिसने चेक बुक कूटनीति को आगे बढ़ाते हुए कई देशों को ऋण जाल में फंसाने के रास्ते पर ले गया है, भारत सागर की सच्ची भावना के साथ, क्षेत्र में भागीदारों के बीच एक साझा समृद्धि और सुरक्षा सुनिश्चित करना चाहता है।

नूतन कपूर महावर
समता मल्लेमपति

स्वागत भाषण

विजय ठाकुर सिंह

महानिदेशक, भारतीय वैश्विक परिषद

डॉ. संजया बारू, प्रतिष्ठित पत्रकार, लेखक और आईसीडब्ल्यूए के शासी निकाय के सदस्य, राजदूत अशोक कंठ और अनूप मुद्गल,

विशिष्ट पैनलिस्ट, अतिथि, और देवियों, और सज्जनों,

"हिंद महासागर में भारत और द्वीप राष्ट्र: भू-राजनीति और सुरक्षा परिप्रेक्ष्य विकसित करना" पर वेब-आधारित संगोष्ठी में आप सभी का स्वागत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है।

पिछले कुछ वर्षों में, आईसीडब्ल्यूए ने हिंद महासागर और व्यापक भारत-प्रशांत क्षेत्र के सामरिक मामलों पर बहुत ध्यान केंद्रित किया है।

हमने प्रमुख राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों की मेजबानी की है, समुद्री मुद्दों से निपटने वाली कई पुस्तकें और लेख प्रकाशित किए हैं। यह संगोष्ठी उस प्रक्रिया का हिस्सा है और पश्चिमी हिंद महासागर के द्वीप राष्ट्रों से सामरिक दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करने का एक प्रयास है।

हिंद महासागर भू-राजनीति में, छोटे द्वीप राष्ट्रों की चिंताओं और मुद्दों पर अक्सर विचार-विमर्श नहीं किया जाता है, भले ही वे सामरिक रूप से संचार के समुद्री मार्गों में स्थित हों और समुद्री सुरक्षा और सुरक्षा पर किसी भी चर्चा में महत्वपूर्ण महत्व रखते हैं, समुद्री अर्थव्यवस्थाओं के निर्माण पर, समुद्री कनेक्टिविटी बढ़ाने और सतत महासागर विकास के लिए साझेदारी का निर्माण करते हैं।

भारत और संगोष्ठी में भाग लेने वाले देशों के विशेषज्ञ हिंद महासागर के क्षेत्र से संबंधित हैं जहां भू-राजनीति पारंपरिक के साथ-साथ गैर-पारंपरिक सुरक्षा मुद्दों से आकार लेती है। इसके अलावा, अतिरिक्त क्षेत्रीय शक्तियां इस क्षेत्र में पैर जमाने की कोशिश कर रही हैं। उनकी बढ़ती उपस्थिति क्षेत्रीय सुरक्षा और स्थिरता के लिए एक नई चुनौती प्रस्तुत करती है।

भारत के हिंद महासागर के द्वीपीय देशों के साथ पारंपरिक रूप से घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंध हैं और उन्होंने उनके साथ सुदृढ़ राजनीतिक, आर्थिक, विकासात्मक और लोगों से लोगों के संबंध बनाए हैं।

हाल के वर्षों में, भारत अपनी सागर (अर्थात क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) पहल के हिस्से के रूप में हिंद महासागर द्वीप राष्ट्रों के साथ सख्ती से जुड़ रहा है।

> भारत के हिंद महासागर के द्वीपीय देशों के साथ पारंपरिक रूप से घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंध हैं और उन्होंने उनके साथ मजबूत राजनीतिक, आर्थिक, विकासात्मक और लोगों से लोगों के संबंध बनाए हैं।

मानवीय संकट के दौरान "पहले सहायक" के रूप में, भारत ने अपने "मिशन सागर" के हिस्से के रूप में सहायता प्रदान की है, चाहे वह 2004 की सुनामी हो या कोविड-19 महामारी के दौरान चिकित्सा सहायता हो।

एक निवासी राष्ट्र के रूप में, भारत ने खतरों का सामना करते हुए क्षेत्र में सुरक्षा सुनिश्चित करने के बारे में "चिंताओं को साझा किया है"-चाहे समुद्री डकैती हो या आतंकवाद और द्वीप राष्ट्रों के लिए अपने रक्षा और सुरक्षा बुनियादी ढांचे का निर्माण करने की आवश्यकता को समझता है। इस संदर्भ में, भारत ने रक्षा के लिए लाइन ऑफ क्रेडिट का विस्तार किया है और द्वीप राष्ट्रों की समुद्री सुरक्षा क्षमता को बढ़ाने के लिए डोर्नियर विमान जैसे सैन्य उपकरण उपहार में दिए हैं।

हमने हिंद महासागर की सामरिक गतिशीलता के प्रबंधन के लिए क्षेत्रीय संगठनों, हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (आईओआरए), हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी (आईओएनएस) में भी एक साथ काम किया है। हमें इन प्रक्रियाओं को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।

वेबिनार में हम यह समझने का प्रयास करेंगे:-

द्वीप राष्ट्र हिंद-प्रशांत क्षेत्र की उभरती भू-राजनीति को कैसे देखते हैं?उनकी प्रमुख चिंताएं क्या हैं?

क्षेत्र में अतिरिक्त-क्षेत्रीय शक्तियों की बढ़ती सैन्य उपस्थिति के बारे में उनके दृष्टिकोण क्या हैं?

द्वीपीय देश हिंद महासागर में भारत की भूमिका को कैसे देखते हैं?

क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय राजनीति को प्रखर करने में वे अपने राष्ट्रीय पथ को कैसे तैयार करते हैं?

जलवायु परिवर्तन, समुद्री अर्थव्यवस्था, आईयूयू (अवैध, अनियमित और असूचित) मत्स्यन और समुद्री शासन के बारे में चिंताएं इन द्वीप राष्ट्रों की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीतियों को कैसे प्रभावित करती हैं?

सार्थक चर्चा की आशा करता हूं। हमारे निमंत्रण को स्वीकार करने और आज हमारे साथ जुड़ने के लिए मैं आप सभी को धन्यवाद देती हूं।

हिन्द महासागर:
समुद्री शक्ति से महासागर समृद्धि तक

संजया बारू

यह संगोष्ठि ऐसे दिलचस्प समय में आयोजित की जा रही है जब भारत ने हाल ही में एक नया विमान कैरियर शुरू किया है और चीनी नौसेना का एक जहाज श्रीलंका की यात्रा करने आया था। यूरोपीय शक्तियों, विशेष रूप से ब्रिटेन और फ्रांस के हिंद महासागर में नए सिरे से रुचि दिखाने के साथ, पानी का यह निकाय जो 'शांति का क्षेत्र' बना हुआ है, ने वैश्विक ध्यान आकर्षित करना शुरू कर दिया है। इसलिए, इस भौगोलिक क्षेत्र के भीतर देशों के लिए यह ध्यान रखना प्रासंगिक है कि हिंद महासागर क्षेत्र में हमारे पास संघर्ष की एकमात्र स्मृति उन शक्तियों से जुड़ी है जिन्होंने बाहर से इस स्थान में प्रवेश किया है। हम कभी भी एक-दूसरे के साथ संघर्ष में नहीं रहे हैं।

समुद्री इतिहासकार के. एम. पन्नीकर ने अपने क्लासिक मोनोग्राफ, *इंडिया एंड द इंडियन ओशन: एन निबंध ऑन द सी पावर ऑन द इंफ्लुएंस ऑन द इंडियन हिस्ट्री* (1945) में लिखा है, "कोलंबस के अटलांटिक और मैगलन के प्रशांत क्षेत्र को पार करने से पहले मिलेनियम, हिंद महासागर वाणिज्यिक और सांस्कृतिक यातायात का एक सक्रिय मार्ग बन गया था[1]। फिर भी, लंबे समय से अकादमिक साहित्य और नीति विश्लेषण का अधिकांश ध्यान समुद्री सुरक्षा, समुद्री शक्ति और नौसेना रणनीति पर रहा है, जिसमें अखिल-महासागर आर्थिक विकास, समुद्री बुनियादी ढांचे में निवेश, समुद्री कनेक्टिविटी और वाणिज्य पर बहुत कम ध्यान दिया गया है।

> समुद्री अर्थव्यवस्था और मैरीटाइम डोमेन अवेयरनेस के विकास पर भारत का हालिया ध्यान, भले ही यह क्षेत्र एक अच्छा संकेत है। बार फिर बड़ी शक्ति प्रतिद्वंद्विता के साये में आ गया है, हिंद महासागर क्षेत्र के भीतर विकास और सुरक्षा के लिए

इसलिए, समुद्री अर्थव्यवस्थाऔर समुद्री डोमेन जागरूकता के विकास पर भारत का हालिया ध्यान, भले ही यह क्षेत्र एक बार फिर बड़ी शक्ति प्रतिद्वंद्विता की छाया में आ गया है, हिंद महासागर क्षेत्र के भीतर विकास और सुरक्षा के लिए अच्छा संकेत है[2]।

पन्नीकर ने निश्चित रूप से समुद्र के सामरिक महत्व पर जोर दिया और उनका मानना था कि हिंद महासागर और मलक्का जलडमरूमध्य, अदन की खाड़ी और मॉरीशस के पास महासागर के दक्षिणी विस्तार सहित इसके अंदर और बाहर जाने वाले सभी 'चोक पॉइंट्स' का "नियंत्रण" भारतीय हाथों में होना चाहिए, ताकि बाहरी आक्रमण से भारत की स्वतंत्रता की रक्षा की जा सके[3]। 15वीं से 18वीं शताब्दी के दौरान सभ्यता और पूंजीवाद के अपने कुशल अध्ययन में, इतिहासकार फर्नांड ब्राउडेल ने हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की प्रमुख उपस्थिति को रेखांकित किया[4]। अरब सागर, बंगाल की खाड़ी, मलक्का जलडमरूमध्य और दक्षिण चीन सागर-जिसे अब हिंद-प्रशांत कहा जाता है-को पूर्व-औद्योगिक, पूर्व-पूंजीवादी युग की "सभी विश्व अर्थव्यवस्थाओं में सबसे महान" के रूप में संदर्भित करते हुए[5]।

ब्राउडेल ने लिखा, "इन विशाल क्षेत्रों के बीच संबंध केंद्रीय रूप से तैनात भारतीय उपमहाद्वीप के दोनों ओर, अधिक या कम ताकत के पेंडुलम अभियानों की एक श्रृंखला का परिणाम था। स्विंग से पहले पूर्व और फिर पश्चिम को लाभ हो सकता है, कार्यों, शक्ति और राजनीतिक या आर्थिक प्रगति को पुनर्वितरित किया जा सकता है। हालांकि, इन सभी उतार-चढ़ावों के माध्यम से, भारत ने अपनी केंद्रीय स्थिति बनाए रखी: गुजरात और मालाबार और कोरोमंडल तटों पर उसके व्यापारी सदियों से अपने कई प्रतिस्पर्धियों के खिलाफ प्रबल थे-लाल सागर के अरब व्यापारी, खाड़ी के फारसी व्यापारी, या इंडोनेशियाई समुद्र से परिचित चीनी व्यापारी, जिनके लिए उनके कबाड़ अब नियमित आगंतुक थे[6]।

यूरोपीय लोगों के इस क्षेत्र में प्रवेश करने से पहले हिंद महासागर की भू-आर्थिकी ऐसी थी। जैसी कि इतिहासकार संजया सुब्रह्मण्यम ने नोट किया है, कलकत्ता, मद्रास और बॉम्बे के बंदरगाहों के महासागर के साथ भारत के लिंक बनने से बहुत पहले, भारत के "स्वतंत्र जहाज-मालिक व्यापारी" सूरत, मछलीपट्टनम, हुगली और कालीकट जैसे बंदरगाहों के माध्यम से दुनिया के साथ व्यापार करते थे[7]।

आशिन दास गुप्ता ने 'हिंद महासागर के व्यापारी की दुनिया' पर अपने विशाल शोध को इस प्रकार अभिव्यक्त किया: उन्होंने कहा, 'इसमें कोई संदेह नहीं है कि 17वीं सदी के बाद के समृद्ध वर्षों में ऐसे हजारों लोग हर वर्ष भारत के विदेशी व्यापार का ध्यान रखने और भारत को हिंद महासागर की दुनिया से जोड़ने के लिए निकलते थे। ये ऐसे लोग थे जिन्होंने बंदरगाह में रहते हुए हर तरह से वाणिज्यिक जहाजों की सेवा की। वे बोर्ड पर निर्यात कार्गो को एक साथ लाए; उन्होंने आयात की बिक्री की व्यवस्था की; उन्होंने यात्रियों के लिए अपनी यात्रा को वित्त पोषित करने की व्यवस्था करके नौकायन करना संभव बना दिया। वे सामान्य व्यापार में व्यापारी थे; वे विशेष वस्तुओं के व्यापारी थे; वे पैसे के व्यापारी थे और, सबसे ऊपर, वे बंदरगाह शहरों के दलाल थे। भारतीय समुद्री व्यापारी ने जादू की सदी में इस सेवा क्षेत्र पर

निर्भर किया और सहायता की, जो लगभग 1630 के दशक में शुरू हुई थी[8]।

> ऐतिहासिक रूप से, भारत कभी भी हिंद महासागर में वर्चस्ववादी शक्ति नहीं रहा है।

यह यूरोपीय व्यापारियों और नौसेनाओं का प्रवेश है जिसने दास गुप्ता को भारतीय समुद्री गतिविधि की "जादुई सदी" कहा। यूरोपीय उपनिवेशवाद ने अपने आसपास के पानी के साथ भारत के संबंधों की प्रकृति को बदल दिया। भारतीय उप-महाद्वीप के आसपास का पानी अब समृद्धि का पुल नहीं था, बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था के डी-औद्योगीकरण और विनाश का मार्ग बन गया और अधिकांश द्वीप क्षेत्रों को शाही वाणिज्य के लिए बंदी बना दिया। उदाहरण के लिए, मॉरीशस को यूरोपीय वाणिज्यवाद की जरूरतों को पूरा करने वाली वृक्षारोपण अर्थव्यवस्था बनने के लिए मजबूर किया गया था। ध्वज व्यापार का अनुसरण करता है। चूंकि यूरोपीय विजय समुद्र के माध्यम से आई थी, इसलिए समुद्र पर अधिकांश प्रवचन अपनी समुद्री आर्थिक क्षमता की सापेक्ष उपेक्षा के साथ सुरक्षा और रक्षा पर अत्यधिक केंद्रित थे[9]।

यह याद रखना उपयोगी है कि इतिहास के इस पूरे चरण के माध्यम से जब भारत की हिंद महासागर उपस्थिति और व्यक्तित्व था, इसे हमेशा महासागर में द्वीप राष्ट्रों द्वारा एक अवसर के रूप में देखा गया था और कभी भी खतरे के रूप में नहीं देखा गया था। ऐतिहासिक रूप से, भारत कभी भी हिंद महासागर में वर्चस्ववादी शक्ति नहीं रहा है। दरअसल, आज यह पूछने लायक है कि हिंद महासागर के द्वीपों पर कुछ पश्चिमी शक्तियों का झंडा क्यों लहरारहा है। यह पूछना भी उतना ही प्रासंगिक है कि चीन जैसे क्षेत्र के बाहर के देश यहां नौसैनिक अड्डे क्यों स्थापित करना चाहते हैं। ऐसी शक्तियों से हिंद महासागर क्षेत्र की स्थिरता और सुरक्षा वातावरण में किस प्रकार से परिवर्तन होने की संभावना है? क्या हमें, तटीय और द्वीप राष्ट्रों को चिंतित नहीं होना चाहिए?

जबकि भारत आज अमेरिका, फ्रांस और ब्रिटेन जैसे देशों के साथ सहकारी ढांचे के भीतर काम करता है, यह मेरे लिए स्पष्ट नहीं है कि उनके द्वीप क्षेत्र, सभी औपनिवेशिक संपत्ति, पश्चिमी शक्तियों के साथ एक अधीनस्थ संबंध के भीतर क्यों रहना चाहिए। इसी तरह, हिंद महासागर के तटीय और द्वीपीय देशों को बाहरी शक्तियों के सुरक्षा कैलकुलस से क्यों बांधना चाहिए? वास्तव में, इससे भी कम स्पष्ट है कि इस क्षेत्र में चीन की बढ़ती उपस्थिति को क्या प्रेरित करता है। क्या हिंद महासागर की सुरक्षा एक बार फिर 'बाहरी शक्तियों' के सामरिक हितों की बंदी बन गई है? हम, क्षेत्र के देश, इसके बारे में क्या कर रहे हैं? इस तरह के सवाल उत्तर-औपनिवेशिक समाजों के भीतर फैशन से बाहर हो गए हैं, लेकिन उन्हें पूछने और प्रत्युत्तर देने की आवश्यकता है।

व्यापार पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करना

आजादी के बाद भारत अंतर्मुखी हुआ और महासागर और विश्व अर्थव्यवस्थाओं पर बहुत कम ध्यान दिया। 1991 के बाद ही भारत सरकार ने हिंद महासागर में भारत की हिस्सेदारी के आर्थिक आयाम पर जोर देना शुरू किया। पूर्वी एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के उदय के साथ-साथ भारत के अपने आर्थिक विकास में तेजी ने पश्चिम एशिया से दक्षिण और पूर्वी एशिया में तेल के परिवहन के लिए संचार के समुद्री लेन की सुरक्षा सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर ध्यान आकर्षित किया। यदि तेल हिंद महासागर में बढ़ती मात्रा में स्थानांतरित होने लगा, तो माल भी तेजी से स्थानांतरित हो गया क्योंकि यूरोप और पश्चिम एशिया में एशियाई निर्यात में वृद्धि हुई। एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के उदय के साथ, हिंद महासागर ने वाणिज्य के क्षेत्र के रूप में अपना महत्व हासिल कर लिया। पश्चिमी हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की आर्थिक हिस्सेदारी पश्चिम एशिया में भारतीय समुदाय की तेजी से महत्वपूर्ण आर्थिक भूमिका से भी बढ़ी है। खाड़ी क्षेत्र में काम करने वाले भारतीयों से आवक प्रेषण समय के साथ भारत के विदेशी मुद्रा भंडार का एक महत्वपूर्ण घटक बन गया है। दूसरी ओर, खाड़ी में रह रहे भारतीयों की सुरक्षा और आपात स्थिति के दौरान उनकी तेजी से स्वदेश वापसी ने भारत की हिंद महासागर रणनीति में एक नया सुरक्षा आयाम जोड़ा है।

इस पृष्ठभूमि में और प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव के कार्यकाल के दौरान हिंद महासागर रिम पहल शुरू की गई थी, जिससे हिंद महासागर तटीय क्षेत्र का एक नया क्षेत्रीय समूह बना। आईओआरआई सतत विकास और क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग पर ध्यान केंद्रित करने के साथ आईओआरआई एसोसिएशन (आईओआरआई) में परिवर्तित हो गया। आईओआरआई का उद्देश्य आर्थिक उदारीकरण पर ध्यान केंद्रित करने और सीमा पार व्यापार और निवेश बाधाओं को कम करने के साथ महासागर क्षेत्र में सतत विकास और विकास को बढ़ावा देना है। मॉरीशस में मुख्यालय के साथ एक संगठन के रूप में आईओआरए ने बहुत धीमी गति से प्रगति की है, इसने कम से कम भारत में उन मुद्दों पर नीतिगत ध्यान केंद्रित करने में मदद की है जो जल्द ही भारत की 'समुद्री अर्थव्यवस्था' नीतियों को परिभाषित करने के लिए आए थे। आईओआरआईने छह प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान की है जो महासागर क्षेत्र की 'समुद्री अर्थव्यवस्था' को परिभाषित करने के लिए आए हैं। ये हैं:

1. समुद्री सुरक्षा,
2. व्यापार और निवेश सुविधा,
3. मत्स्य प्रबंधन,
4. आपदा जोखिम में कमी,
5. शैक्षिक और वैज्ञानिक सहयोग और
6. पर्यटन संवर्धन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान।
7.

ये आज भी इस क्षेत्र में हमारी केंद्रीय चिंताएं बनी हुई हैं।

तीन प्रमुख महासागर तटीय क्षेत्रों-प्रशांत, अटलांटिक और हिंद-में से हिंद महासागर क्षेत्र आर्थिक रूप से सबसे कम विकसित है। सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया और संयुक्त अरब अमीरात जैसे मुट्ठी भर देशों के अलावा, महासागर के आसपास के अधिकांश देशों को निम्न या मध्यम आय वाली अर्थव्यवस्थाओं के रूप में वर्गीकृत किया गया है। हिंद महासागर के पार ट्रांस-ओशन व्यापार अटलांटिक और प्रशांत के पार ट्रांस-महासागर व्यापार की तुलना में बहुत कम है, यह काफी समझ में आता है। वास्तव में, अधिकांश हिंद महासागर अर्थव्यवस्थाएं अटलांटिक और प्रशांत के आसपास के देशों के साथ व्यापार करती हैं। आईओआर के भीतर और बाहर कारोबार करने वाली एकमात्र प्रमुख वस्तु तेल है। क्षेत्र के सापेक्ष आर्थिक पिछड़ेपन को देखते हुए, क्षेत्र की सरकारों का ध्यान अपने आंतरिक आर्थिक विकास और बाकी दुनिया के साथ लाभकारी आर्थिक संबंध स्थापित करने पर होना चाहिए। आर्थिक विकास पर ध्यान केंद्रित करने की इस बुनियादी आवश्यकता को हिंद महासागर क्षेत्र के सुरक्षा कैलकुलस को परिभाषित करना चाहिए।

आर्थिक विकास पर ध्यान केंद्रित करने की इस बुनियादी आवश्यकता को हिंद महासागर क्षेत्र के सुरक्षा कैलकुलस को परिभाषित करना चाहिए।

इस समझ को देखते हुए, क्रॉस-ओशन कनेक्टिविटी के विकास, बंदरगाहों और बंदरगाहों के विकास, जहाज निर्माण और समुद्री क्षमता, मत्स्य पालन और खनिज अन्वेषण, समुद्र विज्ञान आदि पर ध्यान केंद्रित करना क्षेत्र की समुद्री अर्थव्यवस्था के विकास के लिए एजेंडा होना चाहिए[10]। समुद्री अर्थव्यवस्था एक देश की 'तटीय अर्थव्यवस्था' से अधिक है। इसमें मत्स्य पालन, नाव और जहाज बनाने, जहाज की मरम्मत और तोड़ने, बंदरगाह और शिपिंग, समुद्री जैव प्रौद्योगिकी, समुद्री निर्माण, गहरे समुद्र खनन, पर्यटन, समुद्री नवीकरणीय ऊर्जा, बीमा, वित्त और महासागर आपदा प्रबंधन से संबंधित गतिविधियां शामिल हो सकती हैं। इसमें देश की आबादी के बड़े हिस्से को रोजगार और आजीविका प्रदान करने और सतत विकास में योगदान करने की क्षमता है। मालदीव, मॉरीशस, सेशेल्स और श्रीलंका जैसी द्वीप अर्थव्यवस्थाओं में, किसी को समुद्री अर्थव्यवस्था के विकास की प्रासंगिकता और महत्व पर अधिक जोर देने की आवश्यकता नहीं है।

इसलिए, यह समझ में आता है कि भारत समुद्री अर्थव्यवस्था के विकास पर काफी जोर देता है। भारत की सुरक्षा और विकास के लिए हिंद महासागर की केंद्रीयता को रेखांकित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जून 2018 में सिंगापुर में आईआईएसएस शांगरी ला वार्ता में कहा, "हिंद महासागर ने भारत के अधिकांश इतिहास को आकार दिया है। यह अब हमारे भविष्य की कुंजी है। महासागर भारत के व्यापार और हमारे

ऊर्जा स्रोतों का 90% वहन करता है। यह वैश्विक वाणिज्य की जीवन रेखा भी है। हिंद महासागर विविध संस्कृतियों और शांति और समृद्धि के विभिन्न स्तरों के क्षेत्रों को जोड़ता है। यह अब प्रमुख शक्तियों के जहाजों को भी वहन करता है। दोनों स्थिरता और प्रतिस्पर्धा की चिंता जताते हैं[11]।

> सागर–क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास। दरअसल, सागर एक भू-आर्थिक निर्माण है जो समुद्री सुरक्षा और आर्थिक विकास और हिंद महासागर क्षेत्र के लिए आवश्यक सहयोग के बीच संतुलन बनाए रखता है। यह विकास और समृद्धि की आवश्यकता के साथ शक्ति और सुरक्षा की अनिवार्यताओं को संतुलित करता है।

भारत सरकार ने हिंद महासागर में भारत की सुरक्षा चिंताओं और क्षेत्र की साझा विकास प्राथमिकताओं को सुरक्षा और विकास के इस सूत्रीकरण में एक साथ लाया है जिसे सागर-क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास कहा जाता है। दरअसल, सागर एक भू-आर्थिक निर्माण है जो समुद्री सुरक्षा और आर्थिक विकास और हिंद महासागर क्षेत्र के लिए आवश्यक सहयोग के बीच संतुलन बनाए रखता है। यह विकास और समृद्धि की आवश्यकता के साथ शक्ति और सुरक्षा की अनिवार्यताओं को संतुलित करता है। परिणामतः, हिंद महासागर के लिए किसी भी समुद्री रणनीति और सिद्धांत को क्षेत्र के सभी देशों की सुरक्षा और विकासात्मक हितों को संतुलित करना चाहिए। दिसम्बर, 2004 में सुनामी के प्रति क्षेत्रीय प्रतिक्रिया ने अंतत हिंद महासागर क्षेत्र में विकास और सुरक्षा दोनों के लिए क्षेत्रीय दृष्टिकोण की प्रासंगिकता की पुष्टि की।

समुद्री डोमेन जागरूकता

ये सभी मुद्दे अब समुद्री डोमेन जागरूकता (एमडीए) नामक नीतिगत सोच में एक साथ आ गए हैं। अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन (आईएमओ) एमडीए को "समुद्री पर्यावरण से जुड़ी किसी भी गतिविधि की प्रभावी समझ के रूप में परिभाषित करता है जो सुरक्षा, सुरक्षा, अर्थव्यवस्था या पर्यावरण पर प्रभाव डाल सकता है। समुद्री डोमेन जागरूकता में सुधार के लिए भूमि-आधारित, समुद्र-आधारित, अंतरिक्ष-आधारित और साइबर-संबंधित प्रौद्योगिकियों के उपयोग ने कार्य को अत्यधिक प्रौद्योगिकी गहन और वित्तीय रूप से महंगा बना दिया है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, जापान और फ्रांस जैसी विकसित अर्थव्यवस्थाओं ने एमडीए में काफी निवेश किया है और भारत इस क्षेत्र में उनके साथ सहयोग कर रहा है। इसमें शामिल बुनियादी ढांचे और प्रौद्योगिकी लागत और आवश्यक मानव क्षमता को देखते हुए, छोटे द्वीप राष्ट्र बेहतर एमडीए हासिल करने में निवेश करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। एमडीए बुनियादी ढांचे और प्रौद्योगिकियों का विकास

भारत और आईओ द्वीप राष्ट्रों के लिए एक महत्वपूर्ण एजेंडा हो सकता है।

एमडीए में निवेश को आर्थिक और सुरक्षा दोनों दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए। द्वीप राष्ट्रों की अपनी समुद्री अर्थव्यवस्था क्षमता का दोहन करने की क्षमता उनके एमडीए पर निर्भर करती है। समान रूप से, ऐसे राष्ट्रों की सुरक्षा खतरों, विशेष रूप से समुद्र आधारित आतंकवादी हमलों से सुरक्षित-सुरक्षा करने की क्षमता भी एमडीए क्षमता पर निर्भर करती है। हिंद-प्रशांत क्षेत्र में एमडीए क्षमता बढ़ाने में भारत-जापान और भारत-फ्रांस सहयोग हिंद महासागर के द्वीप राष्ट्रों को लाभ पहुंचा सकता है यदि साझा कार्यक्रम प्रौद्योगिकी अनुकूलन, सूचना साझाकरण और बुनियादी ढांचे के विकास पर ध्यान केंद्रित करने के साथ तैयार किए जा सकते हैं। हिंद महासागर के द्वीपीय देश भारत और तटीय और द्वीपीय देशों के बीच आर्थिक सहयोग की संभावना के साथ-साथ क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियों से निपटने में सहयोग की आवश्यकता दोनों से अवगत हैं।

हिंद महासागर क्षेत्र की भू-राजनीति और भू-अर्थशास्त्र तटीय और द्वीप राष्ट्रों को क्षेत्रीय विकास और क्षेत्रीय सुरक्षा के ढांचे के भीतर काम करने के लिए मजबूर करते हैं, इस तथ्य से अवगत हैं कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की अवधि में हिंद महासागर संघर्ष का एक थिएटर नहीं रहा है, जबकि अटलांटिक और प्रशांत ऐसा ही है। उदाहरण के लिए, माल्विनास में ब्रिटिश कार्रवाई, क्यूबा के प्रति अमेरिकी दृष्टिकोण और ताइवान के लिए चीन के रवैये की तुलना करें। भारत ने हिंद महासागर क्षेत्र में अपने द्वीपीय पड़ोसियों के प्रति ऐसा रवैया कभी नहीं अपनाया है। इसके बजाय, इसने क्षेत्र के भीतर विकास और सुरक्षा को बढ़ावा देने की मांग की है। हिंद महासागर क्षेत्र के द्वीपीय गणराज्यों के साथ पारस्परिक लाभ और पारस्परिक अंतर-निर्भरता के संबंधों को बनाए रखना भारत के अपने हित में है, न कि बिग पावर प्रतिद्वंद्विता को क्षेत्र को अस्थिर करने की अनुमति देना।

दक्षिणी पड़ोस में द्वीप राष्ट्र श्रीलंका और मालदीव

भारत, श्रीलंका और मालदीव के दृष्टिकोण से समुद्री सुरक्षा के मुद्दे

एम पी मुरलीधरन

भारत, श्रीलंका और मालदीव के दृष्टिकोण से समुद्री सुरक्षा के मुद्दों की जांच करना महत्वपूर्ण है। पिछले कुछ दशकों के दौरान दुनिया को समुद्री क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करते हुए देखना उत्साहजनक है। हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) में स्थित अमेरिकी नौसेना विचारक और 19वीं सदी के इतिहासकार एडमिरल एटी महान के शब्दों की चमक सुनाई देती है। महान ने भविष्यवाणी करते हुए कहा था, "जो हिंद महासागर को नियंत्रित करता है वह एशिया को नियंत्रित करता है। यह सागर सात समुद्रों की कुंजी है। 21वीं सदी में दुनिया की किस्मत उसके पानी पर तय होगी। बेशक, एक मामूली बदलाव हुआ, अवधारणा को केवल आईओआर तक विस्तारित नहीं किया गया, क्योंकि 20वीं शताब्दी के अंत में, यह स्पष्ट हो गया कि हिंद महासागर को अलग-थलग या झील के रूप में नहीं देखा जा सकता है। शीत युद्ध के अंत में एक बहुध्रुवीय दुनिया का उदय और एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के विकास के साथ व्यापार और वाणिज्य के वैश्वीकरण का विस्तार हुआ, जिसने बदले में अरब की खाड़ी और अफ्रीका से अपने ऊर्जा और खनिज संसाधनों और इन देशों से एशिया, अफ्रीका और यूरोप के अन्य हिस्सों में तैयार उत्पादों के परिवहन का आह्वान किया, जिसके परिणामस्वरूप दोनों महासागरों के बीच शिपिंग में वृद्धि हुई। इस प्रकार, इस सदी के शुरुआती भाग में, रणनीतिकारों ने एक क्षेत्र के रूप में एशिया-प्रशांत की अवधारणा की कल्पना की और हिंद-प्रशांत शब्द दोनों महासागरों को एक सामरिक क्षेत्र या एक भू-आर्थिक और सुरक्षा क्षेत्र में जोड़ते हुए उभरा।

इस पहलू को भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2018 में शांगरी ला वार्ता में बहुत संक्षेप में रखा था जब उन्होंने कहा था कि 21वीं सदी में दुनिया की नियति हिंद-प्रशांत क्षेत्र में विकास के स्वरूप से गहराई से प्रभावित होगी। उन्होंने यह कहते हुए क्षेत्र के प्रति भारत के सामरिक दृष्टिकोण को आगे बढ़ाया कि "हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत का अपना जुड़ाव-अफ्रीका के तट से लेकर अमेरिका तक-समावेशी होगा। ... एक लोकतांत्रिक और नियम-आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को बढ़ावा देना, हम अपने समुद्र, अंतरिक्ष और वायुमार्ग को मुक्त और खुला रखने के लिए दूसरों के साथ काम करेंगे; हमारे राष्ट्र आतंकवाद से

सुरक्षित हैं; और हमारा साइबर स्पेस व्यवधान और संघर्ष से मुक्त है।...". महान ने भविष्यवाणी करते हुए कहा था, "जो हिंद महासागर को नियंत्रित करता है वह एशिया को नियंत्रित करता है। यह सागर सात समुद्रों की कुंजी है। 21वीं सदी में दुनिया की किस्मत उसके पानी पर तय होगी।

भू-रणनीतिक महत्व

समुद्रों का भू-रणनीतिक महत्व इस तथ्य से स्पष्ट होगा कि पृथ्वी का 70% हिस्सा समुद्र से ढका हुआ है। लगभग 2/3 आबादी तट से 100 मील के भीतर रहती है और संयुक्त राष्ट्र के 193 सदस्य राष्ट्रों में से 150 तटीय राष्ट्र हैं। दुनिया के 80% शहर और लगभग सभी प्रमुख व्यापार/वित्तीय केंद्र तट पर स्थित हैं। पिछले कुछ दशकों में दुनिया भर में उदारीकरण देखा गया है, जिससे विनिर्माण, व्यापार और पूंजी प्रवाह में राष्ट्रों के बीच घनिष्ठ सहयोग हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक निर्भरता बढ़ी है। संचार और परिवहन में नई प्रौद्योगिकियों के विकास ने व्यापार को भी बढ़ाया है, जो केवल और बढ़ेगा, क्योंकि अधिक विकासशील राष्ट्र वैश्वीकरण का लाभ उठाने की कोशिश करते हैं। शिपिंग अभी भी कार्गो के परिवहन का सबसे सस्ता रूप बना हुआ है। इसलिए वैश्विक समुद्री व्यापार मात्रा के हिसाब से विश्व व्यापार का लगभग 80% और मूल्य के हिसाब से 70% है। लगभग 54,000 जहाजों का अनुमान है कि $ 450 बिलियन समुद्री मार्गों पर चलते हैं और लगभग 14 मिलियन नौकरियां उत्पन्न करते हैं। आयात और निर्यात पर विचार करते हुए महासागरों में कुल व्यापार $ 35,000 बिलियन होने का अनुमान है। परिवहन के अलावा, महासागर भोजन (मछली), धातु, खनिज और ऊर्जा संसाधनों का भी एक प्रमुख स्रोत हैं। जैसे-जैसे भूमि पर प्राकृतिक संसाधन कम होते जाएंगे और गहरे समुद्र से संसाधनों के निष्कर्षण के लिए सस्ती प्रौद्योगिकियां उभरती हैं, समुद्रों का महत्व और बढ़ेगा।

यदि हम हिंद महासागर क्षेत्र को देखते हैं, तो यह देखा जाएगा कि इस क्षेत्र में दुनिया की आबादी का लगभग 33% हिस्सा है और विश्व समुद्री व्यापार का 50% हिस्सा है। कंटेनर यातायात का 50% और तेल और गैस में वैश्विक व्यापार का 70% आईओआर के माध्यम से चलता है। चूंकि विश्व तेल के 60% और 26% प्राकृतिक गैस भंडार के साथ फारस की खाड़ी इस क्षेत्र में स्थित है, दुनिया की प्रमुख तेल धमनियां हिंद महासागर के पानी के माध्यम से बहती हैं। हिंद महासागर के माध्यम से व्यापार दुनिया के लगभग सभी प्रमुख देशों की अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित करता है, इस प्रकार अधिकांश विश्व शक्तियों को इस क्षेत्र में पैर जमाने या कम से कम नियमित उपस्थिति के लिए प्रोत्साहित करता है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि भारत, श्रीलंका और मालदीव की प्राकृतिक भौगोलिक स्थिति उन्हें सामरिक रूप से आईओआर के माध्यम से व्यापार के मुक्त प्रवाह की रक्षा और सक्षम करने की स्थिति में रखती है। यह सच है, भले ही हम विस्तारित हिंद प्रशांत को एक क्षेत्र के रूप में देखें, जो दुनिया के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 60% और जनसंख्या का 65% है। वैश्विक समुद्री व्यापार का लगभग 60 प्रतिशत हिंद प्रशांत से होकर गुजरता है। भारत के मामले में, उसका अधिकांश व्यापार समुद्र के माध्यम से होता है और मात्रा के हिसाब से 90% व्यापार और मूल्य के हिसाब से 70% लगभग 750 बिलियन डॉलर है।

> इस क्षेत्र का भू-रणनीतिक मूल्य अतिरिक्त क्षेत्रीय शक्तियों की संख्या से स्पष्ट है जो ठिकानों की तलाश कर रहे हैं या क्षेत्र में परमाणु सक्षम बलों सहित अपने बलों को तैनात कर चुके हैं।

इस क्षेत्र का भू-रणनीतिक मूल्य उन अतिरिक्त क्षेत्रीय शक्तियों की संख्या से स्पष्ट है जो ठिकानों की तलाश कर रहे हैं या संबंधित राष्ट्रीय हितों के समर्थन में क्षेत्र में परमाणु सक्षम लोगों सहित अपने बलों को तैनात कर रहे हैं, जैसे कि संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस, चीन और कम आवृत्ति वाले कई अन्य देशों के नौसैनिक बल। क्षेत्र के विभिन्न पहलुओं और विशेष रूप से सुरक्षा कोण की जांच करते समय, एक पहलू जो उभरता है वह है चीन का उदय और पश्चिमी प्रशांत में इसका मुखर राजनीतिक और सैन्य व्यवहार और आईओआर में विस्तार। आईओआर में अपने विशाल आर्थिक हितों की रक्षा करने और समुद्री डकैती विरोधी गश्त में सहायता करने की आड़ में, पीपुल्स लिबरेशन आर्मी नेवी (पीएलएएन) दो दशकों से अधिक समय से आईओआर में नियमित रूप से प्रवेश कर रही है। अफ्रीका से लेकर मध्य पूर्व और दक्षिण एशिया तक ठिकानों और राजनयिक संबंधों की तथाकथित शैली चीन की उस रणनीति का हिस्सा है, जिसके तहत वह खुद को आईओआर में एक शक्ति या आने वाले वर्षों में एक शक्तिशाली खतरे के रूप में स्थापित करना चाहता है। पिछले कुछ वर्षों में, चीन ने 'सलामी स्लाइसिंग' या धीरे-धीरे छोटे बदलाव लाने या वृद्धिशील लाभ बनाने की कला में महारत हासिल की है, जिनमें से प्रत्येक अपने आप में कोई अलार्म नहीं उठा सकता है, लेकिन जब इसे समग्र रूप से लिया जाता है, तो यह लंबे समय में बड़े सामरिक बदलाव ला सकता है। समुद्री क्षेत्र में इसका उपयोग उसके आसपास के समुद्रों में द्वीप क्षेत्रों पर उसके दावों को बढ़ाने के लिए किया जा रहा है। पीएलएएन को आज लगभग 350 इकाइयों के साथ संख्या के मामले में सबसे बड़ी नौसेना माना जाता है, जिसमें विमान वाहक, क्रूजर, विध्वंसक और फ्रिगेट, पनडुब्बियां, उभयचर जहाज, माइन वारफेयर जहाज और सहायक सहायक शामिल हैं। पीएलएएन बलों का आधुनिकीकरण और उन्नयन कर रहा है और एक बहु-मिशन सक्षम बल के रूप में उभर रहा है। यह स्पष्ट है कि चीन दुनिया में या कम से कम हिंद प्रशांत क्षेत्र में पूर्व-प्रतिष्ठित शक्ति के रूप में उभरने की कोशिश कर रहा है। ताइवान के संभावित फ्लैश प्वाइंट के रूप में उभरने की याद दिलाने की आवश्यकता नहीं है और अगर ऐसा होता है तो पूरे हिंद-प्रशांत क्षेत्र में इसका असर होगा।

क्षेत्र के सामरिक दृष्टिकोण का अवलोकन करने के बाद, यह स्पष्ट होगा कि समुद्री सुरक्षा की एक प्रमुख भूमिका है। समुद्री सुरक्षा के लिए चुनौतियां राष्ट्र की आर्थिक भलाई अर्थात ऊर्जा, व्यापार और वाणिज्य, जीवित और निर्जीव संसाधनों, या सामाजिक स्थिरता के लिए उभर सकती हैं अर्थात, समुद्री क्षेत्र में अपराध या राजनीतिक शांति अर्थात समुद्री संप्रभुता, या यहां तक कि इसके लोगों के स्वास्थ्य अर्थात पर्यावरण के लिए भी। 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, यह स्पष्ट हो गया कि उच्च समुद्र पर पारंपरिक नौसेना टकराव से,

तटीय क्षेत्र में चुनौतियों और गैर-पारंपरिक समुद्री सुरक्षा चुनौतियों की ओर बदलाव हुआ था, जिसे एलआईएमओ (कम तीव्रता समुद्री संचालन) भी कहा जाता है। इसमें समुद्री आतंकवाद, समुद्री डकैती, नशीली दवाओं और मानव तस्करी, बंदूक चलाना, अवैध शिकार या आईयूयू (अवैध अनियमित और असूचित) मछली पकड़ना और संवेदनशील भूकंपीय और आर्थिक डेटा का अवैध संग्रह शामिल होगा। इनमें से कई खतरे गैर-राष्ट्र संस्थाओं से भी उभर सकते हैं, जिन्हें उन राष्ट्रों द्वारा अच्छी तरह से वित्त-पोषित किया जा सकता है जो पृष्ठभूमि में बने रहना चुनते हैं। यह स्पष्ट होगा कि समुद्री सुरक्षा के लिए चुनौतियां विविध और जटिल हैं और अक्सर राजनीतिक सीमाओं से परे हैं, बदले में सामान्य समुद्री हितों की रक्षा के लिए राष्ट्रों के बीच सहयोग का आह्वान करती हैं।

द्वीप राष्ट्र सामरिक महत्व

इस मोड़ पर, हमें समुद्री हितों की रक्षा में द्वीपों या द्वीप राष्ट्रों के महत्व को समझने की आवश्यकता है। सामरिक रूप से, द्वीपों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जैसे कि चेतावनी और निगरानी पोस्ट प्रदान करना, और महासागरों में गहराई से संचालन के लिए रसद आधार। आज, वे देशों को क्षेत्राधिकार के पानी को मापने के लिए बेसलाइन भी प्रदान करते हैं। समुद्र के कानून पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन (यूएनसीएलओएस) के लागू होने के बाद से, राष्ट्रीय सरकारें अपने क्षेत्रीय जल से परे विस्तारित विशेष आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) स्थापित करने में सक्षम रही हैं, जिसके भीतर वे कुछ संप्रभु और क्षेत्राधिकार अधिकारों को बनाए रखते हैं। ईईजेड बेसलाइन से 200 समुद्री मील तक बढ़ सकता है, जिससे यह समुद्री संसाधनों के दोहन के साथ-साथ रक्षा-गहन रणनीति प्रदान करने के लिए पानी का एक महत्वपूर्ण निकाय बन जाता है, जैसा कि महाद्वीप से देखा गया है और शक्ति प्रक्षेपण के लिए, जैसा कि समुद्र से देखा गया है। इसलिए यहां तक कि पहले दूरस्थ के रूप में अनदेखा किए गए द्वीप भी प्रमुखता में हैं क्योंकि वे ईईजेड में समुद्री संसाधनों के विस्तारित क्षेत्रीय दावों और अधिकारों के लिए आधार प्रदान करते हैं। इस सदी में समुद्री क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करने के साथ, द्वीपों का सामरिक महत्व कई गुना बढ़ गया है और यह स्पष्ट होगा कि क्यों प्रमुख शक्तियां और अधिक जो अपने क्षेत्र से परे पैर जमाना चाहते हैं, वे द्वीप राष्ट्रों की ओर देख रहे हैं। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, श्रीलंका और मालदीव की भौगोलिक स्थिति उन्हें आईओआर में महत्वपूर्ण सामरिक भूमिका देती है।

रणनीतिक रूप से, द्वीपों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जैसे कि चेतावनी और निगरानी पोस्ट प्रदान करना, और महासागरों में गहराई से संचालन के लिए रसद आधार। आज, वे देशों को क्षेत्राधिकार के पानी को मापने के लिए बेसलाइन भी प्रदान करते हैं।

भारत श्रीलंका का सबसे करीबी पड़ोसी है। दोनों देशों के संबंध 2,500 वर्ष से अधिक पुराने हैं और दोनों पक्षों ने बौद्धिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषाई संपर्क की विरासत का निर्माण किया है। हाल के वर्षों में, संबंधों को उच्चतम राजनीतिक स्तर पर घनिष्ठ संपर्क, बढ़ते व्यापार और निवेश, विकास, शिक्षा, संस्कृति और रक्षा के क्षेत्र में सहयोग के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय हित के प्रमुख मुद्दों पर व्यापक समझ द्वारा चिह्नित किया गया है। भारत और श्रीलंका के बीच व्यापक प्रशिक्षण और सेवा-से-सेवा संबंधों पर आधारित बढ़ते रक्षा संबंध भी हैं। दोनों देशों की चिंताओं की समानता, जिसमें संचार के अपने समुद्री मार्गों की सुरक्षा और संरक्षा के संबंध में, सुरक्षा सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता है। मार्च 2022 में कोलंबो में बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (बिम्सटेक) के लिए बंगाल की खाड़ी पहल (बिम्सटेक) की बैठक में भाग लेने के लिए भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर की यात्रा के दौरान, भारत और श्रीलंका ने समुद्री सुरक्षा का विस्तार करने के लिए रक्षा संबंधी समझौते सहित कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए। इसमें खोज और बचाव क्षेत्र में श्रीलंका की क्षमताओं को सुदृढ़ करने के लिए स्थापित किया जाने वाला एक संयुक्त समुद्री बचाव समन्वय केंद्र (एमआरसीसी), श्रीलंकाई नौसेना के लिए एक फ्लोटिंग डॉक और एक जहाज मरम्मत डॉक, डोर्नियर निगरानी विमान और भारत में अंतर्राष्ट्रीय संलयन केंद्र (आईएफसी) में श्रीलंका के एक संपर्क अधिकारी शामिल हैं। यह सब समुद्री बलों के बीच सहयोग को सुदृढ़ करेगा और समुद्री सुरक्षा को बढ़ाएगा।

भारत-मालदीव द्विपक्षीय साझेदारी भौगोलिक निकटता, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक संबंधों और साझा मूल्यों पर आधारित है। मालदीव के राष्ट्रपति की हालिया भारत यात्रा के दौरान, प्रधानमंत्री मोदी ने रेखांकित किया कि मालदीव भारतीयों के दिलों में और भारत की "पड़ोसी पहले" नीति में एक विशेष स्थान रखता है। मालदीव के राष्ट्रपति सोलिह ने अपनी सरकार की "भारत-प्रथम नीति" की पुष्टि की। नेताओं ने कई क्षेत्रों में इस पारस्परिक रूप से लाभकारी व्यापक साझेदारी को और सुदृढ़ और गहरा करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

मालदीव के राष्ट्रपति की हालिया भारत यात्रा के दौरान, प्रधानमंत्री मोदी ने रेखांकित किया कि मालदीव भारतीयों के दिलों में और भारत की "पड़ोसी पहले" नीति में एक विशेष स्थान रखता है। मालदीव के राष्ट्रपति सोलिह ने अपनी सरकार की "भारत-पहले नीति" की पुष्टि की।

1988 से, रक्षा और सुरक्षा भारत और मालदीव के बीच सहयोग का एक प्रमुख क्षेत्र रहा है। रक्षा साझेदारी को सुदृढ़ करने के लिए अप्रैल 2016 में रक्षा के लिए एक व्यापक कार्य योजना पर भी

हस्ताक्षर किए गए थे। भारत-मालदीव रक्षा और सुरक्षा साझेदारी, अंतर्राष्ट्रीय अपराधों और आपदा राहत के क्षेत्रों में क्षेत्रीय सहयोग का एक समय-परीक्षण उदाहरण है और हिंद महासागर क्षेत्र में स्थिरता प्रदान करता है। दोनों देश मानते हैं कि भारत और मालदीव की सुरक्षा एक-दूसरे से जुड़ी हुई है। एक प्रमुख समझ यह है कि क्षेत्र की सुरक्षा और स्थिरता पर एक-दूसरे की चिंताओं के प्रति सावधान रहें और अपने संबंधित क्षेत्रों का उपयोग दूसरे के लिए शत्रुतापूर्ण किसी भी गतिविधि के लिए न होने दें।

भारत मालदीव के राष्ट्रीय रक्षा बल (एमएनडीएफ) के लिए प्रशिक्षण के अवसरों की सबसे बड़ी संख्या प्रदान करता है, जो उनकी रक्षा प्रशिक्षण आवश्यकताओं का लगभग 70% पूरा करता है। एमएनडीएफ विभिन्न मिल-टू-मिल गतिविधियों जैसे संयुक्त ईईजेड गश्त, एंटी-नारकोटिकॉप्स, खोज और बचाव (एसएआर), सी-राइडर कार्यक्रम, मानवीय सहायता और आपदा राहत (एचएडीआर) अभ्यास, साहसिक शिविर, नौकायन रेगाटा आदि में भी भाग ले रहा है। भारतीय नौसेना ने एमएनडीएफ को हवाई निगरानी, चिकित्सा निकासी, एसएआर और संयुक्त हाइड्रोग्राफी के लिए हवाई संपत्ति प्रदान की है। चालू परियोजनाओं और क्षमता निर्माण पहलों के कार्यान्वयन के माध्यम से समुद्री सुरक्षा और सुरक्षा, समुद्री डोमेन जागरूकता और एचएडीआर में सहयोग बढ़ाने के लिए पहल की जा रही है।

प्रधानमंत्री मोदी ने दोनों देशों के बीच सहयोग का सारांश दिया था और मैं उद्धृत करता हूं, "हिंद महासागर में अंतर्राष्ट्रीय अपराध, आतंकवाद और नशीली दवाओं की तस्करी का खतरा गंभीर है। और इसलिए, रक्षा और सुरक्षा के क्षेत्र में भारत और मालदीव के बीच घनिष्ठ संपर्क और समन्वय पूरे क्षेत्र की शांति और स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण है। हमने इन सभी साझा चुनौतियों के खिलाफ अपना सहयोग बढ़ाया है। इसमें मालदीव के सुरक्षा अधिकारियों के लिए क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण सहायता भी शामिल है।

कोलंबो सुरक्षा सम्मेलन

भारत, श्रीलंका और मालदीव के बीच 2011 में त्रिपक्षीय सुरक्षा ढांचे के रूप में स्थापित कोलंबो सुरक्षा सम्मेलन समुद्री सुरक्षा और सुरक्षा, मानव तस्करी, आतंकवाद और साइबर सुरक्षा को कवर करते हुए सुरक्षा सहयोग के चार स्तंभों के साथ क्षेत्र और सहयोग में सुरक्षा की चिंताओं की जांच करने के लिए एक प्रमुख पहल रही है। मॉरीशस बाद में इस समूह में शामिल हो गया। माले में इसकी 5वीं बैठक में सदस्यता विस्तार के साथ-साथ मालदीव की पहल पर एक नया स्तंभ-मानवीय सहायता और आपदा राहत-जोड़ा गया। नवंबर 2021 में, भारत, मालदीव और श्रीलंका ने हिंद महासागर क्षेत्र को सुरक्षित रखने के लिए दो दिवसीय समुद्री अभियान चलाया। जुलाई 2022 में कोच्चि में आयोजित छठे कोलंबो सुरक्षा सम्मेलन में बांग्लादेश और सेशेल्स के प्रतिनिधिमंडलों ने पर्यवेक्षकों के रूप में भाग लिया। बैठक में पांच स्तंभों पर सहयोग के माध्यम से आईओआर में सुरक्षा बढ़ाने के लिए रोडमैप के कार्यान्वयन पर चर्चा की गई; समुद्री

सुरक्षा और सुरक्षा, आतंकवाद और कट्टरता का मुकाबला करना, तस्करी और अंतर्राष्ट्रीय संगठित अपराध का मुकाबला करना, साइबर सुरक्षा, महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे और प्रौद्योगिकी की सुरक्षा और मानवीय सहायता और आपदा राहत।

जुलाई 2022 में कोच्चि में आयोजित छठे कोलंबो सुरक्षा सम्मेलन में बांग्लादेश और सेशेल्स के प्रतिनिधिमंडलों ने पर्यवेक्षकों के रूप में भाग लिया।

चुनौतियों

क्षेत्र में सामरिक दृष्टिकोण पर वापस आते हुए, बदलते भू-राजनीतिक वातावरण के कारण क्षेत्र में सुरक्षा संरचना के लिए चुनौतियां उभरना जारी है, जो बदले में मौजूदा मंचों को सुदृढ़ करने और तटीय क्षेत्रों के बीच सहयोग के नए क्षेत्रों का पता लगाने का आह्वान करता है। सहयोग के लिए एक प्रमुख फोकस क्षेत्र समुद्री डोमेन या समुद्री डोमेन जागरूकता या एमडीए के ज्ञान या जागरूकता को बढ़ाने में होना चाहिए जैसा कि हम अब इसे कहते हैं। एमडीए को अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन (आईएमओ) द्वारा समुद्री डोमेन से जुड़ी किसी भी चीज की प्रभावी समझ के रूप में परिभाषित किया गया है जो सुरक्षा, सुरक्षा, अर्थव्यवस्था या पर्यावरण को प्रभावित कर सकता है। यह स्पष्ट होगा कि एमडीए निरंतर आधार पर आवश्यक है, ताकि खतरों की समय पर पहचान की जा सके और सामरिक और परिचालन दोनों स्तरों पर उन्हें दूर करने के लिए योजनाओं का विकास किया जा सके। आज के परिदृश्य में यह समुद्र और आसपास के तट के साथ, समुद्र के नीचे, हवा और अंतरिक्ष आधारित और साथ ही साइबर निगरानी में गतिविधियों की निगरानी करने का आह्वान करता है। इस संदर्भ में यह रेखांकित करने की आवश्यकता है कि भारत, श्रीलंका और मालदीव के पास महत्वपूर्ण ईईजेड हैं और ऐसे बड़े क्षेत्रों की निगरानी के लिए निगरानी क्षमता प्रीमियम पर है। एमडीए को बढ़ाने के लिए निकट सहयोग से अंतर्राष्ट्रीय गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों सहित शत्रुतापूर्ण खतरों की निरंतर निगरानी और पहचान करने में सक्षम होगा, एक सुसंगत सामरिक तस्वीर विकसित करने के लिए इनपुट का विश्लेषण करके और बदले में, निर्णय निर्माताओं को आवश्यकतानुसार कार्रवाई शुरू करने के लिए समय पर इसका प्रसार किया जाएगा। जहाजों, विमानों, यूएवी, अंतरिक्ष आधारित निगरानी और पानी के नीचे आधारित सेंसर द्वारा गश्त सभी समुद्री डोमेन डेटा एकत्र करने के लिए उपयोग की जाती है। भूगोल ने सभी तीन देशों को प्रभावी एमडीए का संचालन करने के लिए सुकर किया है। 2018 में गुरुग्राम में स्थापित सूचना संलयन केंद्र (आईएफसी-आईओआर) समुद्री जागरूकता बढ़ाने और जानकारी साझा करने के लिए क्षेत्र के देशों और बहुराष्ट्रीय एजेंसियों के साथ सहयोग करने में एक बड़ा कदम था। भारत-प्रशांत क्षेत्र में समुद्री स्थानों और संचार के समुद्री मार्गों की निगरानी बढ़ाने के लिए केंद्र के वर्तमान में 21 भागीदार देशों (उनमें से कई में केंद्र में स्थित संपर्क

अधिकारी हैं) और दुनिया भर में 22 बहुराष्ट्रीय एजेंसियों के साथ संबंध हैं।

समुद्री बलों अर्थात नौसेनाओं और तटरक्षकों ने हमेशा समुद्री राष्ट्रों के बीच संपर्क बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नियमित अंतराल पर जहाजों द्वारा बंदरगाहों का दौरा, संस्थागत द्विपक्षीय और बहुपक्षीय अभ्यास, समुद्री सीमाओं के साथ समन्वित गश्त, समुद्री डकैती विरोधी अभियान, खोज और बचाव के लिए सहायता, प्रमुख आपदाओं के बाद एचएडीआर, स्टाफ वार्ता, प्रशिक्षण और अन्य बातचीत ने सहयोग और सूचना साझा करने में मदद की है। ईईजेड को सुरक्षित रखने के लिए एक समन्वित गश्त एक तरीका है। 'सागर', आईपीओआई, हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी (आईओएनएस) और अभ्यास मिलन जैसे बहुपक्षीय मंचों और पहलों ने आईओआर में तटीय क्षेत्रों के बीच सहयोग बढ़ाया है। आईओएनएस भारतीय नौसेना के नेतृत्व में एक पहल है जो क्षेत्रीय चुनौतियों पर चर्चा करने के लिए क्षेत्र के सैन्य नेताओं को एक मंच प्रदान करती है। 2022 में अपने हालिया संस्करण में, मिलान एक द्विवार्षिक नौसैनिक अभ्यास था, जिसमें हिंद प्रशांत क्षेत्र के 40 देशों के समुद्री बलों ने संयुक्त रूप से समुद्र में अभ्यास किया था।

> भारत, श्रीलंका, मालदीव, मेडागास्कर, मॉरीशस और सेशेल्स के बीच अधिक सहयोग से सभी के सुरक्षा हित बढ़ेंगे।

> भारत, श्रीलंका और मालदीव के पास महत्वपूर्ण ईईजेड हैं और ऐसे बड़े क्षेत्रों की निगरानी के लिए निगरानी क्षमता प्रीमियम पर है। एमडीए को बढ़ाने के लिए निकट सहयोग निरंतर निगरानी और शत्रुतापूर्ण खतरों की पहचान करने में सक्षम होगा।

निष्कर्ष

आईओआर, 21वीं सदी में आर्थिक और सामरिक प्रतिस्पर्धा के लिए एक थिएटर के रूप में उभरा है, क्योंकि इसके माध्यम से समुद्री व्यापार, दुनिया के सभी प्रमुख देशों की अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित करता है। भारत, श्रीलंका और मालदीव की सामरिक स्थिति, उन्हें आईओआर और उससे आगे के जल की सुरक्षा और स्थिरता में एक अतिरिक्त हिस्सेदारी देती है। उनके त्रिपक्षीय सहयोग को बढ़ाने से आपसी चिंताओं को दूर करने के अलावा, पूरे क्षेत्र में समुद्री वातावरण में सुरक्षा और स्थिरता सुदृढ़ होगी, जिससे आर्थिक विकास और समृद्धि आएगी। मैं इस अवधारणा का विस्तार करते हुए कहना चाहूंगा कि भारत, श्रीलंका, मालदीव, मेडागास्कर, मॉरीशस और सेशेल्स के बीच अधिक सहयोग से सभी के सुरक्षा हित बढ़ेंगे। भारत

के विदेश मंत्री जयशंकर ने आईओएनएस का हवाला देते हुए सुरक्षा बढ़ाने के लिए बहुपक्षीय पहलों के लाभों पर अपनी पुस्तक 'द इंडिया वे-स्ट्रैटेजीज फॉर एन अनसर्टेन वर्ल्ड' में कहा, "इसने समुद्री मुद्दों की साझा समझ को बढ़ावा देने, क्षेत्रीय समुद्री सुरक्षा को बढ़ाने, क्षमताओं को सुदृढ़ करने, सहकारी तंत्र स्थापित करने, अंतःक्रियाशीलता विकसित करने और त्वरित प्रतिक्रिया प्रदान करने में मदद की है। उन्होंने आगे कहा कि "नीति से प्रदर्शन की ओर बढ़ते हुए, यह स्पष्ट है कि साझा सुरक्षा लक्ष्यों की खोज में एक साथ काम करने वाली नौसेनाओं का स्थिर प्रभाव पड़ता है"।

भू-राजनीतिक और सुरक्षा परिप्रेक्ष्य विकसित करने के लिए भारत का दृष्टिकोण

एन. मनोहरन

प्रस्तावना

स्थिर पड़ोस किसी भी देश की सुरक्षा और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण है। बिना किसी कारण के रोमन दार्शनिक, सेनेका ने प्रसिद्ध रूप से टिप्पणी की: "यदि तुम अपने लिए जीवित रहो तो अपने पड़ोसी के लिए जियो। और, हेसियोड के लिए, "एक बुरा पड़ोसी एक दुर्भाग्य है, जितना कि एक अच्छा एक महान आशीर्वाद है। वैश्विक राजनीति में पड़ोस के महत्व को बढ़ाने के लिए, कुछ लोग यह घोषणा करने की हद तक चले जाते हैं कि "सभी अंतर्राष्ट्रीय राजनीति स्थानीय है"। व्यापार के संदर्भ में, पड़ोसियों को आमतौर पर निकटता के कारण माल परिवहन में आसानी को इंगित करने के लिए "शून्य दूरी पर राष्ट्र" माना जाता है। लेकिन सुरक्षा के लिहाज से, जैसा कि कौटिल्य के मंडल सिद्धांत में कहा गया है, पड़ोसी देश के साथ संघर्ष की संभावना दूर के देश की तुलना में अधिक है।

भारत अपनी स्वतंत्रता के बाद से इस बिंदु पर ध्यान देने में विफल नहीं रहा है। समय-समय पर, विभिन्न प्रधानमंत्रियों ने अपनी पड़ोस नीतियों को स्पष्ट किया। जवाहरलाल नेहरू ने एक "पारिवारिक दृष्टिकोण" पनाया और स्पष्ट किया कि "पड़ोसी देशों का हमारे मंतव्य में पहला स्थान है[12]। 12 भारत को "पश्चिमी, दक्षिणी और दक्षिण-पूर्व एशिया की धुरी" के रूप में देखा गया था। इंदिरा गांधी और राजीव गांधी पड़ोसियों के प्रति अपने दृष्टिकोण में अधिक यथार्थवादी, मुखर और सक्रिय थे, जिसे "इंदिरा सिद्धांत" कहा जाता था। इंद्र कुमार गुजराल ने भारत के छोटे पड़ोसियों (जिसे "गुजराल सिद्धांत" कहा जाता है) के लिए गैर-पारस्परिकता के सिद्धांत को व्यक्त किया। मनमोहन सिंह ने कहा कि भारत अपनी विकास महत्वाकांक्षाओं को तब तक पूरा नहीं कर सकता जब तक हम दक्षिण एशिया में शांति और स्थिरता सुनिश्चित नहीं करते[13]। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ अपने दशकों पुराने सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक संबंधों को गहरा करने के लिए निरंतर प्रयास कर रहा है[14]। श्रीलंका और मालदीव सहित भारत का दक्षिणी पड़ोस अपनी "पड़ोसी पहले नीति" में एक विशेष स्थान रखता है। शोध-पत्र का उद्देश्य दक्षिणी पड़ोस में उभरते भू-राजनीतिक और सुरक्षा मुद्दों के लिए भारत के दृष्टिकोण को देखना है जिसमें

हिंद महासागर और दो द्वीप देश शामिल हैं: श्रीलंका और मालदीव।

> न केवल क्षेत्रीय या उप-क्षेत्रीय स्तर पर, बल्कि वैश्विक स्तर पर एक शक्ति के रूप में चीन के उदय ने वास्तव में हिंद महासागर क्षेत्र को प्रभावित किया है।

संदर्भ: हिंद महासागर क्षेत्र

भारत के दक्षिणी पड़ोस, विशेष रूप से हिंद महासागर क्षेत्र ने पिछले दो वर्षों में परिवर्तन देखा है। जो दो दशकों या उससे भी अधिक। इस संबंध में, क्षेत्र के विकसित भू-राजनीतिक और सुरक्षा दृष्टिकोण में तीन व्यापक रुझानों की पहचान की जा सकती है:

सबसे पहले, अमेरिकी रणनीतिक मुद्रा ने हिंद महासागर क्षेत्र में एक नई रुचि देखी है। वैश्विक राजनीति का "गुरुत्वाकर्षण का केंद्र" अब अपने आर्थिक और रणनीतिक कारणों से अटलांटिक और प्रशांत से हिंद महासागर में स्थानांतरित हो गया है। 19वीं शताब्दी के एक समुद्री विचारक अल्फ्रेड थायर महान को अक्सर जोर देने के लिए बुलाया जाता है वर्तमान वैश्विक राजनीति में हिंद महासागर का महत्व। रॉबर्ट कपलान ने अपने मानसून: हिंद महासागर और अमेरिकी शक्ति के भविष्य में इस महत्व को मजबूत किया है। इसलिए, अमेरिका ने हिंद-प्रशांत रणनीति को रेखांकित किया है "हिंद-प्रशांत में संयुक्त राज्य अमेरिका को अधिक मजबूती से लंगर डालने और इस प्रक्रिया में क्षेत्र को मजबूत करने के लिए। इसका केंद्रीय ध्यान यह क्षेत्र के भीतर और उससे परे सहयोगियों, भागीदारों और संस्थानों के साथ निरंतर और रचनात्मक सहयोग है[15]।

दूसरे, न केवल क्षेत्रीय या उप-क्षेत्रीय स्तर पर, बल्कि वैश्विक स्तर पर एक शक्ति के रूप में चीन के उदय ने वास्तव में हिंद महासागर क्षेत्र को प्रभावित किया है। हिंद महासागर के तटों, विशेष रूप से भारत के दक्षिणी पड़ोस में बीजिंग के पदचिह्न विशेष रूप से बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) के बाद वृद्धि हुई। चीन निवेश, सहायता, अनुदान, व्यापार और सैन्य सहायता के माध्यम से हिंद महासागर क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ा रहा है। विशेष रूप से, अधिकांश निवेश सड़कों, बंदरगाहों और बिजली संयंत्रों जैसी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में हैं। दक्षिण एशियाई में हिंद-प्रशांत के एक नई भू-राजनीतिक अवधारणा के रूप में उभरने से भारतीय दक्षिणी पड़ोस एक नए महत्व के लिए प्रेरित हुआ है। मोती की रणनीति। श्रीलंका और मालदीव को चीन इस "स्ट्रिंग" में महत्वपूर्ण "मोती" मानता है।

> हिंद-प्रशांत क्षेत्र के एक नई भू-राजनीतिक अवधारणा के रूप में उभरने से भारतीय दक्षिणी पड़ोस को एक नए महत्व की ओर अग्रसर किया गया है।

> अमेरिकी रणनीतिक स्थिति ने हिंद महासागर क्षेत्र में एक नई रुचि देखी है।

तीसरा, हिंद-प्रशांत क्षेत्र के एक नई भू-राजनीतिक अवधारणा के रूप में उभरने से भारतीय दक्षिणी पड़ोस को एक नए महत्व की ओर अग्रसर किया गया है। इस टेक्टोनिक भू-राजनीतिक, भू-आर्थिक और भू-रणनीतिक बदलाव के परिणामस्वरूप, अमेरिका, चीन और भारत के अलावा, इस क्षेत्र में ऑस्ट्रेलिया, जापान, फ्रांस, यूके, इंडोनेशिया और कोरिया जैसे कई मध्यम स्तर के नायकों की भागीदारी तेजी से स्पष्ट हो रही है। नया निर्माण क्षेत्र में भारत के बढ़ते कद और आकांक्षाओं को भी दर्शाता है[16]। इससे हिंद महासागर क्षेत्र में हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (आईओआरए), हिंद महासागर आयोग (आईओसी), हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी (आईओएनएस), चतुर्भुज सुरक्षा वार्ता (क्वाड), ऑस्ट्रेलिया, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका (एयूकेयूएस) आदि जैसी बहुपक्षीय और बहुपक्षीय व्यवस्थाओं के रूप में नए क्षेत्रवाद का उदय हुआ है।

भारत की चिंताएं

दक्षिण एशिया में, भारत इस क्षेत्र के सभी देशों के साथ सीमा साझा करने वाली 'गुरुत्वाकर्षण स्थिति' में है। जब भारत के दक्षिणी पड़ोस की बात आती है तो चार चिंताएं हैं जो भारत के राष्ट्रीय हितों से जूझती हैं:

पहली है सामरिक चिंता। इसके पड़ोस में स्थिरता भारत की सुरक्षा और विकास से निकटता से जुड़ी हुई है। स्वतंत्र भारत को अंग्रेजों से 'सामरिक एकता' के रूप में जाना जाता है, जो श्रीलंका और

मालदीव के कब्जे को भारत की रक्षा के लिए अनिवार्य मानता था। भारत इस क्षेत्र में भारतीय हितों के लिए हानिकारक किसी भी अतिरिक्त-क्षेत्रीय शक्तियों की भागीदारी के प्रति संवेदनशील है। इसलिए, भारत "मुक्त, खुले, समावेशी, शांतिपूर्ण और समृद्ध" हिंद महासागर क्षेत्र की अभिव्यक्ति के साथ ठीक है और शांति के क्षेत्र के रूप में हिंद महासागर की घोषणा का समर्थन करना जारी रखता है[17]।

दूसरी चिंता समुद्री डकैती, समुद्र में सशस्त्र डकैती, हिंसक कट्टरता, आतंकवाद, उग्रवाद, हथियारों और नशीली दवाओं की तस्करी, अवैध प्रवास, मानव तस्करी आदि जैसे गैर-पारंपरिक सुरक्षा खतरों पर है जो इस क्षेत्र को पीड़ित करते हैं। समुद्री डकैती और समुद्र में सशस्त्र डकैती इस क्षेत्र में सबसे अधिक प्रचलित हैं जो संचार की समुद्री लाइनों को खतरे में डालते हैं। क्षेत्र में राष्ट्रों की नाजुक प्रकृति के कारण हिंसक कट्टरता, आतंकवाद और उग्रवाद व्याप्त हैं। दुनिया के सबसे कुख्यात मादक पदार्थ क्षेत्रों 'गोल्डन क्रिसेंट' और 'गोल्डन ट्रायंगल' से निकटता के कारण, इस क्षेत्र में नशीली दवाओं की तस्करी की जाती है। विशेष रूप से, ये खतरे प्रकृति में अंतरराष्ट्रीय हैं और या तो क्षेत्र के भीतर उत्पन्न होते हैं या पारगमन के रूप में क्षेत्र का उपयोग करते हैं। धमकी देने वाले ज्यादातर गैर-राष्ट्र नायक हैं, लेकिन क्षेत्र में कुछ राष्ट्र नायकों के साथ मिलीभगत के बिना नहीं।

तीसरी चिंता आर्थिक संकट के रूप में है जिसने दक्षिणी पड़ोस, विशेष रूप से श्रीलंका को प्रभावित किया है। द्वीप का आर्थिक विकास जो पर्यटन, निवेश, वृक्षारोपण फसलों के निर्यात और प्रेषण जैसे निर्यात क्षेत्रों पर अत्यधिक निर्भर है, अत्यधिक कमजोर हो गया। पिछले दो वर्षों में श्रीलंकाई रुपये का अवमूल्यन बहुत बड़ा रहा है, विशेष रूप से अमेरिकी डॉलर की तुलना में। देश की क्रेडिट रेटिंग को घटाकर सीसीसी कर दिया गया है, जो निवेश में जोखिम को दर्शाता है, जिससे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रवाह और भी मुश्किल हो गया है। महामारी के दौरान पांच लाख से अधिक लोगों ने अपनी नौकरी खो दी; उनमें से 50 प्रतिशत अकेले पर्यटन क्षेत्र में थे। विदेशी मुद्रा भंडार अब तक के सबसे निचले स्तर पर आ गया कि देश दिवालिया हो गया। महंगाई दर दो अंक के आंकड़े पर पहुंच गई है। आर्थिक संकट ने, वास्तव में, आंतरिक असंतोष और राजनीतिक अस्थिरता को जन्म दिया। यूक्रेन में महामारी और युद्ध के कारण, संकट ने मालदीव को भी प्रभावित किया, हालांकि श्रीलंका की सीमा तक नहीं। निकटता में होने के कारण, भारत मूकदर्शक नहीं बन सकता था, बल्कि इन देशों तक पहुंचने और मदद करने के लिए।

> इसके पड़ोस में स्थिरता भारत की सुरक्षा और विकास से निकटता से जुड़ी हुई है।

चौथी चिंता दक्षिणी पड़ोस में कुछ घरेलू मुद्दों और उनके व्यापक प्रभावों से संबंधित है। श्रीलंका में चिंता सिंहली बहुसंख्यकवाद के व्यापक संदर्भ में जातीय मुद्दे और इस्लामी कट्टरपंथ को लेकर है. श्रीलंका में जातीय मुद्दे के समाधान पर भारत लगातार कहता रहा है कि वह अविभाजित श्रीलंका के ढांचे के भीतर

श्रीलंकाई समाज के सभी वर्गों को स्वीकार्य राजनीतिक रूप से बातचीत के जरिए समाधान के पक्ष में खड़ा है और लोकतंत्र, बहुलवाद और मानवाधिकारों के सम्मान के अनुरूप है[18]। भारत के लिए अंतरिम व्यवस्था के तौर पर 13वें संशोधन के प्रावधानों को पूरी तरह लागू करना और स्थायी समाधान के लिए इससे आगे जाना व्यावहारिक है। मालदीव में, पिछले एक दशक में, आईएसआईएस और पाकिस्तान स्थित मदरसों और जिहादी समूहों की ओर आकर्षित मालदीव के लोगों की संख्या में वृद्धि हुई है। आईएसआईएस के झंडे लिए इस्लामवादियों का विरोध प्रदर्शन द्वीप पर व्यापक रूप से हो रहा है। मालदीव के करीब 200 नागरिक कथित तौर पर आईएसआईएस के साथ लड़ रहे हैं। जनसंख्या के अनुपात के संदर्भ में, यह संख्या अन्य मुस्लिम बहुल दक्षिण एशियाई देशों की तुलना में काफी अधिक है। एटोल राष्ट्र में राजनीतिक अस्थिरता और सामाजिक-आर्थिक अनिश्चितता इस्लामी कट्टरवाद के मुख्य चालक हैं।

> रक्षा सहयोग भारत और मालदीव के बीच द्विपक्षीय संबंधों के प्रमुख स्तंभों में से एक है।

भारत का दृष्टिकोण

भारत इन भू-राजनीतिक और सुरक्षा चिंताओं को दो व्यापक स्तरों पर देख रहा है: द्विपक्षीय और बहुपक्षीय।

द्विपक्षीय:

मालदीव: 1988 में तख्तापलट के प्रयास से भारत द्वारा मालदीव को बचाने के बाद से रक्षा सहयोग भारत और मालदीव के बीच द्विपक्षीय संबंधों के प्रमुख स्तंभों में से एक है। सहयोग के कई घटक हैं: प्रशिक्षण, बुनियादी ढांचा, संवाद, सूचना साझाकरण और संयुक्त अभ्यास। दिलचस्प बात यह है कि रक्षा सहयोग के सभी पहलुओं को समेकित करने के लिए, अप्रैल 2016 में रक्षा के लिए एक व्यापक कार्य योजना पर भी हस्ताक्षर किए गए थे। भारत कई दशकों से मालदीव के सुरक्षा कर्मियों के प्रशिक्षण में शामिल है। मालदीव की रक्षा प्रशिक्षण आवश्यकताओं का 70 प्रतिशत भारत द्वारा पूरा किया जाता है। नई दिल्ली स्थानीय प्रशिक्षण सुविधाओं को सुदृढ़ करने में भी शामिल है, सबसे उल्लेखनीय माफिलाफुशी में मालदीव के राष्ट्रीय रक्षा बल के समग्र प्रशिक्षण केंद्र (सीटीसी) सुविधा और मालदीव रक्षा मुख्यालय को समायोजित करने के लिए एक इमारत है। मालदीव की दूरस्थता को देखते हुए, भारत निरंतर हवाई निगरानी के लिए मालदीव के तटीय रडार सिस्टम और हवाई परिसंपत्तियों में सहायता कर रहा है ताकि एटोल राष्ट्र की सुरक्षा बढ़ाई

जा सके। दोनों देश 2016 से रक्षा सचिव स्तर पर वार्षिक रक्षा सहयोग वार्ता और संयुक्त सैन्य-से-सैन्य वार्ता आयोजित कर रहे हैं। बड़े स्तर पर, मालदीव राष्ट्रीय रक्षा बल (एमएनडीएफ) आईओएनएस, गोवा समुद्री सम्मेलन और गोवा संगोष्ठी का भी हिस्सा है। दोनों देशों के सशस्त्र बल नियमित रूप से व्हाइट शिपिंग पर जानकारी साझा करते हैं। 2019 में हस्ताक्षरित आपराधिक मामलों में पारस्परिक कानूनी सहायता पर संधि के अनुसमर्थन के दस्तावेज के आदान-प्रदान ने दोनों देशों को "आपराधिक मामलों की जांच और मुकदमा चलाने में सहायता और समर्थन देने में सक्षम बनाया है[19]। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि यद्यपि दोनों देश पारस्परिक कानूनी सहायता से संबंधित प्रावधानों को कवर करने वाले अंतर्राष्ट्रीय/क्षेत्रीय सम्मेलनों का हिस्सा हैं (आपराधिक मामलों में पारस्परिक सहायता पर सार्क कन्वेंशन, अंतर्राष्ट्रीय संगठित अपराध के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन, नारकोटिक ड्रग्स और साइकोट्रोपिक पदार्थों में अवैध तस्करी के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन, भ्रष्टाचार के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन, हेग कन्वेंशन सहित)। और राष्ट्रमंडल योजना) एक केंद्रित द्विपक्षीय समझौते की आवश्यकता महसूस की गई और इस पर हस्ताक्षर किए गए[20]। दोनों देशों की सेनाएं एमएनडीएफ की क्षमता को सुदृढ़ करने के लिए एकुवर-इन, दोस्ती, एकाथा और ऑपरेशन शील्ड जैसे संयुक्त प्रशिक्षण अभ्यासों में शामिल हैं। दोनों देशों के बल संयुक्त विशेष आर्थिक क्षेत्र गश्त, खोज और बचाव मिशन, मादक पदार्थ विरोधी अभियान, समुद्री सवारी कार्यक्रम, मानवीय सहायता और आपदा राहत (एचएडीआर) अभ्यास, शिविर शिविर और नौकायन रेगाटा जैसी गतिविधियों में भी शामिल रहे हैं[21]।

दोनों देशों के बीच आतंकवाद, कट्टरपंथ और मादक पदार्थों की तस्करी से उत्पन्न होने वाले साझा खतरों से निपटने के लिए आवश्यक सहयोग को सुदृढ़ करने के लिए आतंकवाद का मुकाबला करने, हिंसक चरमपंथ का मुकाबला करने और कट्टरपंथ को कम करने पर एक संयुक्त कार्य समूह बनाया गया है[22]। मालदीव के बलों की क्षमता निर्माण में भारत की मदद उसके पुलिस बलों को भी दी गई है। मालदीव पुलिस सेवा और सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी के बीच एक समझौता ज्ञापन "प्रशिक्षण प्रबंधन और दोनों संस्थानों के बीच प्रशिक्षकों और प्रशिक्षुओं के आदान-प्रदान के क्षेत्र में आपसी सहयोग" के लिए मौजूद है[23]।

श्रीलंका: श्रीलंका के साथ, सुरक्षा सहयोग का दायरा मालदीव के समान है: रक्षा संवाद, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण में सहायता, संयुक्त अभ्यास और हथियारों और उपकरणों की आपूर्ति। द्विपक्षीय स्तर पर, भारत और श्रीलंका के पास 2012 से वार्षिक रक्षा वार्ता तंत्र है जो "दोनों देशों के वरिष्ठ रक्षा अधिकारियों को प्रतिवर्ष रक्षा और सुरक्षा से संबंधित मामलों से मिलने और चर्चा करने के लिए एक मंच प्रदान करता है[24]। सशस्त्र बलों के स्तर पर सहयोग के अलावा, दोनों देशों के बीच संकीर्ण समुद्री मार्ग का फायदा उठाने वाले नशीली दवाओं के तस्करों और अन्य संगठित अपराधियों के खिलाफ कदम उठाने, वास्तविक समय की खुफिया जानकारी और प्रतिक्रिया साझा करने की आवश्यकता और वैश्विक आतंकवादी समूहों और भगोड़ों सहित आतंकवादी संस्थाओं के खिलाफ संयुक्त रूप से काम करने के लिए दोनों देशों के बीच पुलिस प्रमुखों की वार्ता होती है। जहां भी वे मौजूद और सक्रिय हैं[25]।

श्रीलंका के साथ, सुरक्षा सहयोग का दायरा मालदीव के समान है: रक्षा संवाद, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण में सहायता, संयुक्त अभ्यास और हथियारों और उपकरणों की आपूर्ति।

भारत-श्रीलंका द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास-एसएलआईएनईएक्स-"अंतर-संचालन को बढ़ाने, आपसी समझ में सुधार करने और दोनों नौसेनाओं के बीच बहुआयामी समुद्री संचालन के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं और प्रक्रियाओं का आदान-प्रदान करने के लिए आयोजित किया जा रहा है[26]। दोनों देशों की सेनाएं "अर्ध-शहरी इलाकों में उग्रवाद और आतंकवाद विरोधी अभियानों" और "सशस्त्र बलों के बीच तालमेल और अंतर-संचालन" को बढ़ावा देने के लिए अभ्यास मित्र शक्ति में भी शामिल हैं[27]।

भारत श्रीलंका के रक्षा और पुलिस कर्मियों के प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण में भी गहराई से शामिल है। भारतीय सैन्य प्रशिक्षण प्रतिष्ठानों में श्रीलंकाई सैन्य कर्मियों के लिए 1500 से अधिक स्लॉट आरक्षित हैं। गहरे आर्थिक संकट के कारण श्रीलंका के लिए प्रशिक्षण शुल्क का भुगतान करने में असमर्थता के बावजूद, भारत विशेष सहायता कार्यक्रम (एसएपी) के तहत प्रशिक्षण जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध है[28]। दिलचस्प बात यह है कि श्रीलंका आतंकवाद विरोधी विशेष प्रशिक्षण के लिए चुनिंदा भारतीय सैन्य अधिकारियों की मेजबानी भी करता है। यह श्रीलंकाई सशस्त्र बलों द्वारा लिट्टे के सफल विनाश के मद्देनजर था।

भारत ने समय-समय पर श्रीलंकाई सशस्त्र बलों के लिए गैर-घातक हथियार प्रदान किए हैं। नई दिल्ली ने तस्करी (ड्रग्स, हथियार और मानव), तस्करी और अन्य समुद्री अपराधों को ट्रैक करने और मुकाबला करने के लिए श्रीलंकाई तटों पर गश्त को सुदृढ़ करने के लिए अपतटीय गश्ती जहाजों और डोर्नियर विमानों को भी उपहार दिया। वे खोज और बचाव कार्यों में श्रीलंका की क्षमताओं को भी बढ़ाएंगे[29]। यद्यपि श्रीलंका के साथ भारत के सुरक्षा सहयोग में चीन का दृष्टिकोण है, लेकिन इसके पीछे का इरादा अनिवार्य रूप से भारतीय पड़ोस को स्थिर करना है।

बहुपक्षीय:

बहुपक्षीय स्तर पर, दक्षिणी पड़ोस को संभालने में भारत का दृष्टिकोण विशिष्ट और व्यापक दोनों रहा है। दृष्टिकोण के पीछे तर्क समुद्री डोमेन जागरूकता, शिपिंग पर डेटा साझा करने, प्रशिक्षण, खोज और बचाव, तेल प्रदूषण, समुद्री डकैती और अवैध समुद्री गतिविधियों की प्रतिक्रिया जैसे मुद्दों पर तीन देशों के बीच सहयोग की आवश्यकता पर आधारित था।

विशेष रूप से, एनएसए स्तर की सुरक्षा वार्ताएं हैं जिन्हें अब दक्षिणी पड़ोस में सभी सुरक्षा खतरों को देखने के लिए विस्तारित किया गया है। गौरतलब है कि इन वार्ताओं को सुदृढ़ और संस्थागत बनाने के लिए, 2021 में भारत, श्रीलंका और मालदीव के बीच सुरक्षा सहयोग पर राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों (एनएसए) के लिए एक सचिवालय की स्थापना की गई थी।

तीनों देश तटरक्षक स्तर पर त्रिपक्षीय समुद्री सुरक्षा अभ्यास भी कर रहे हैं। 'दोस्ती' नामक द्विवार्षिक अभ्यास "दोस्ती को और सुदृढ़ करने, आपसी परिचालन क्षमता को बढ़ाने, और अंतःक्रियाशीलता का अभ्यास करने और मालदीव, भारत और श्रीलंका के तट रक्षकों के बीच सहयोग बनाने के लिए है[30]। दिलचस्प बात यह है कि यह अभ्यास 1991 में भारत और मालदीव के बीच द्विपक्षीय अभ्यास के रूप में शुरू हुआ था, लेकिन 2012 से श्रीलंका को शामिल करके त्रिपक्षीय हो गया।

व्यापक स्तर पर, आईओआरए, आईओएनएस, आईपीओआई, आईओसी, आईएफसी-आईओआर और बिम्सटेक जैसी बहुपक्षीय व्यवस्थाएं हैं जो भारत के दक्षिणी पड़ोस के कुछ भू-राजनीतिक और सुरक्षा मुद्दों को भी देखती हैं। इन व्यवस्थाओं में हिंद महासागर के तटवर्ती देशों की भागीदारी वास्तव में भारत के दक्षिणी पड़ोस दृष्टिकोण को व्यापक बनाती है। आईओआरए एकमात्र बहुपक्षीय संगठन है जो हिंद महासागर के सभी तटीय देशों को 23 सदस्य देशों और नौ संवाद भागीदारों के साथ एक मंच पर लाता है। यद्यपि समूह मुख्य रूप से आर्थिक सहयोग के लिए है, यह धीरे-धीरे समुद्री सुरक्षा और सुरक्षा और आपदा जोखिम प्रबंधन जैसे अन्य सुरक्षा क्षेत्रों को छूने के लिए बढ़ रहा है[31]।

आईओएनएस "क्षेत्रीय रूप से प्रासंगिक समुद्री मुद्दों पर चर्चा के लिए एक खुला और समावेशी मंच प्रदान करके हिंद महासागर क्षेत्र के तटीय राष्ट्रों की नौसेनाओं के बीच समुद्री सहयोग बढ़ाना चाहता है[32]। चर्चाओं के अलावा, आईओएनएस ने सदस्य नौसेनाओं के बीच मानवीय सहायता और आपदा राहत (एचएडीआर) संचालन में अंतःक्रियाशीलता बढ़ाने के लिए पहला समुद्री अभ्यास 2022 (आईएमईएक्स -22) आयोजित किया[33]। यह वृद्धि हिंद महासागर के देशों की नौसेनाओं के बीच आशाजनक सहयोग के लिए एक अच्छा संकेत है। नवंबर 2019 में बैंकॉक में चौथे पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में घोषित, हिंद-प्रशांत सागर पहल (आईपीओआई) का उद्देश्य "समुद्री सुरक्षा के आसपास कल्पना किए गए सात केंद्रीय स्तंभों" पर ध्यान केंद्रित करना है; समुद्री पारिस्थितिकी; समुद्री संसाधन; क्षमता निर्माण और संसाधन साझाकरण; आपदा जोखिम न्यूनीकरण और प्रबंधन; विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अकादमिक सहयोग; और व्यापार कनेक्टिविटी और समुद्री परिवहन[34]।

उन अतिरिक्त क्षेत्रीय खिलाड़ियों के बीच अंतर करना महत्वपूर्ण है जो अच्छे इरादों के साथ शामिल हैं और जो नहीं हैं। अपने दक्षिणी पड़ोस के प्रति भारत के दृष्टिकोण को तदनुसार अनुकूलित किया जाना चाहिए।

हिंद महासागर आयोग (आईओसी) में पर्यवेक्षक के रूप में भारत की स्वीकृति एक स्वागत योग्य विकास है जो भारत की सागर (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) पहल को बढ़ावा देगा। भारत में स्थित सूचना संलयन केंद्र-हिंद महासागर क्षेत्र (आईएफसी-आईओआर) का उद्देश्य "एक सामान्य सुसंगत समुद्री स्थिति चित्र का निर्माण करके और समुद्री सुरक्षा सूचना के रूप में कार्य करके क्षेत्र और उससे परे समुद्री सुरक्षा को सुदृढ़ करना है, भारत में स्थित संलयन केंद्र-हिंद महासागर पुनर्गठन (आईएफसी-आईओआर) का उद्देश्य "एक सामान्य सुसंगत समुद्री स्थिति चित्र का निर्माण करके और समुद्री सुरक्षा सूचना साझाकरण केंद्र के रूप में कार्य करके क्षेत्र और उससे परे समुद्री सुरक्षा को सुदृढ़ करना है[35]। फ्यूजन सेंटर में श्रीलंका और मालदीव सहित 11 साझेदार देश हैं।

बिम्सटेक विभिन्न अन्य क्षेत्रीय समूहों के विपरीत एक क्षेत्र संचालित सहकारी संगठन है। अब तक, 14 क्षेत्रों को मान्यता दी गई है, जिसमें सुरक्षा एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। सुरक्षा क्षेत्र में पहचाने गए उप-समूहों में नारकोटिक ड्रग्स, साइकोट्रोपिक पदार्थ और अग्रदूत रसायन, खुफिया साझाकरण, कानूनी और कानून प्रवर्तन मुद्दे, एंटी-मनी लॉन्ड्रिंग और आतंकवाद के वित्तपोषण का मुकाबला करना, मानव तस्करी और अवैध प्रवासन, और कट्टरता और आतंकवाद का मुकाबला करना शामिल है[36]। मालदीव वर्तमान में बंगाल की खाड़ी समूह का सदस्य नहीं है, लेकिन आम खतरों और निकटता को देखते हुए भविष्य में इसे शामिल किया जा सकता है।

कुल मिलाकर, हिंद महासागर में "क्षेत्रवाद" की भावना कमजोर दिख सकती है, लेकिन यह धीरे-धीरे हिंद महासागर के बढ़ते महत्व और एक अवधारणा के रूप में हिंद-प्रशांत के उद्भव से आकर्षण प्राप्त कर रहा है।

भावी राह

पड़ोस के महत्व को वाल्डो टोबलर के भूगोल के पहले नियम द्वारा इंगित किया गया है "सब कुछ बाकी सब कुछ से संबंधित है, लेकिन निकट की चीजें दूर की चीजों की तुलना में अधिक संबंधित हैं[37]। यह हर

मापदंड में भारत और उसके पड़ोसी देशों के लिए सच है। भारत के समग्र संदर्भ, विभिन्न चिंताओं और दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए आगे का रास्ता तदनुसार कैलिब्रेट किया जाना चाहिए।

> 'सागर' का अर्थ यह है कि भारत आर्थिक क्षमता और समुद्री क्षमता के साथ मदद करने के लिए तैयार है।

शुरुआत में, हिंद महासागर में भारत का नाम कुछ झटके पैदा कर सकता है। लेकिन भारत ने बार-बार दोहराया है कि जहां तक हिंद महासागर का संबंध है, इसमें अधिकार की कोई भावना नहीं है। साथ ही, उन अतिरिक्त क्षेत्रीय नायकों के बीच अंतर करना महत्वपूर्ण है जो अच्छे इरादों के साथ शामिल हैं और जो नहीं हैं। अपने दक्षिणी पड़ोस के प्रति भारत के दृष्टिकोण को तदनुसार अनुकूलित किया जाना चाहिए। सागर का अर्थ यह है कि भारत आर्थिक क्षमता और समुद्री क्षमता के साथ मदद करने के लिए तैयार है।

यह ध्यान रखना अच्छा है कि वर्तमान संदर्भ में मालदीव और एक हद तक श्रीलंका की "भारत प्रथम" नीतियों की तुलना में भारत की "पड़ोसी पहले" नीति के संदर्भ में एक पूरकता है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि इस दक्षिणी पड़ोस के साथ भारत के सुरक्षा संबंधों को खंडित तरीके से नहीं देखा जा सकता है। चूंकि सुरक्षा संबंधों में सुधार अन्य क्षेत्रों में सुधार के सीधे आनुपातिक है, इसलिए राजनीतिक, संस्कृति, अर्थशास्त्र और लोगों से लोगों जैसे संबंधों के अन्य क्षेत्रों को भी संबोधित करना अनिवार्य है।

> सरकारों से ज्यादा मालदीव और श्रीलंका के लोगों को भारत के ध्यान देने की आवश्यकता है।

भारत को इस तथ्य पर ध्यान देना चाहिए कि चूंकि भारत के दक्षिणी पड़ोस के देश लोकतंत्र हैं, इसलिए लोगों तक पहुंचना महत्वपूर्ण है। पड़ोस में आम आदमी का दिल जीतना महत्वपूर्ण है ताकि वे भारत विरोधी शासन का चुनाव न करें। इस संबंध में, भारत समग्र सुरक्षा घटक में मानव सुरक्षा को थोड़ा और गंभीर तरीके से शामिल करने पर विचार कर सकता है। सरकारों से ज्यादा मालदीव और श्रीलंका के लोगों को भारत के ध्यान देने की आवश्यकता है। इसी तरह, पश्चिम को मालदीव और श्रीलंका को काले और सफेद रंग में देखने के बजाय कैलिब्रेटेड तरीके से संभालना होगा।

आवश्यकता पड़ने पर भारत अपने पड़ोसियों तक पहुंचने में तत्पर रहता है, चाहे वह तख्तापलट का प्रयास

हो या प्राकृतिक या मानव निर्मित आपदाओं के दौरान विद्रोह या राहत हो या आर्थिक संकट का सामना करने पर भी। यह एक प्राकृतिक भौगोलिक लाभ है जो भारत के पास अपने दक्षिणी पड़ोस की तुलना में है-निकटता के अच्छे दर्द। भारत को इस पहलू को उजागर करने में संकोच नहीं करना चाहिए। 'अच्छे पड़ोस' को अनुमान से ज्यादा प्रदर्शित किया जाना चाहिए।

श्रीलंका के राजनीतिक-आर्थिक संकट में चीन; विदेश नीति और सुरक्षा परिप्रेक्ष्य

असंगा अबेयागूनसेकरा

यह शोध-पत्र चीन के बाहरी प्रभाव पर विशेष ध्यान देने के साथ श्रीलंका के हालिया राजनीतिक-आर्थिक संकट की पृष्ठभूमि का आकलन करने का प्रयास करता है। राजनीतिक-आर्थिक नीतिगत निर्णय क्या थे जिन्होंने संकट को जन्म दिया? संकट में चीन की क्या भागीदारी थी? श्रीलंका के संकट का भारत और हिंद महासागर की सुरक्षा पर क्या प्रभाव पड़ा? गोटबाया राजपक्षे ने श्रीलंका की विदेश नीति की मुद्रा को चीन की ओर क्यों झुकाया? क्षेत्रीय और वैश्विक पहलों पर चर्चा की जाएगी जिनसे श्रीलंका लाभान्वित हो सकता है।

अमेरिका-चीन और भारत-चीन जैसी महान शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा और प्रतिद्वंद्विता हिंद महासागर सुरक्षा गतिशीलता में दिखाई देती है। चीन की भागीदारी श्रीलंका का संकट है जो इस क्षेत्र और कई अन्य बीआरआई देशों के लिए एक सबक है। हिंद महासागर में श्रीलंका और मालदीव और प्रशांत महासागर में सोलोमन द्वीप जैसे तटीय क्षेत्रों को 2013 में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग द्वारा शुरू की गई बेल्ट एंड रोड पहल (बीआरआई) से बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए काफी चीनी धन मिला है। श्रीलंका में चीन द्वारा की गई बुनियादी ढांचा कूटनीति ने ऋण-से-इक्विटी स्वैप के कारण महत्वपूर्ण वैश्विक ध्यान आकर्षित किया, जहां चीन ने द्वीप राष्ट्र में सामरिक परियोजनाओं को प्राप्त करने के लिए दीर्घकालिक 99 वर्ष के पट्टे समझौतों पर हस्ताक्षर किए। राजमार्गों, बिजली संयंत्रों, जल परियोजनाओं, बंदरगाह परियोजनाओं और हवाई अड्डे के निर्माण से लेकर दूरसंचार क्षेत्रों तक, जहां हुआवेई और जेडटीई, चीनी दूरसंचार प्रदाता, देश की दूरसंचार रीढ़ के 80% से अधिक के साथ हावी हैं, श्रीलंका में महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में चीन के विस्तार और प्रभुत्व के स्पष्ट उदाहरण हैं।

भू-राजनीति और भू-अर्थशास्त्र ने श्रीलंका को इसकी सामरिक स्थिति के कारण प्रभावित किया है, जहां श्रीलंका पूर्व-पश्चिम सागर संचार लाइनों (एसएलओसी) पर है। मध्य पूर्व और अफ्रीका से चीन के ऊर्जा आपूर्ति मार्ग को सुरक्षित करना चीन की दीर्घकालिक विकास रणनीति के लिए प्राथमिकता है और ऊर्जा पथ को सुरक्षित करना चीन के लिए सर्वोपरि है। अपर्याप्त निवेश और दीर्घकालिक सामरिक सोच के प्रति प्रतिबद्धता श्रीलंका की विदेश नीति में एक प्राथमिक कमजोरी थी, जहां निर्णय विशुद्ध रूप से आर्थिक लाभ पर किए गए थे, और सामरिक प्रभावों को नहीं देखना प्रमुख सीमा थी, जिसने श्रीलंका की संप्रभुता और राष्ट्रीय सुरक्षा को भी खतरे में डाल दिया है। शीत युद्ध के दौरान अपनाई गई 'गुटनिरपेक्ष' विदेश नीति से श्रीलंका 'गुटनिरपेक्ष' सिद्धांतों के साथ एक 'संतुलित' विदेश नीति की ओर विकसित हुआ। अतीत में राष्ट्रपति महिंदा राजपक्षे जैसे राजनीतिक नेताओं ने 2010 में समझाया था कि 'उनकी सरकार श्रीलंका

की गुटनिरपेक्ष विदेश नीति को जारी रखेगी'[38]। उनके भाई गोटबाया राजपक्षे ने 2019 के चुनाव घोषणापत्र में स्पष्ट किया कि 'श्रीलंका की विदेश नीति गुटनिरपेक्षता और राष्ट्रों के बीच आपसी दोस्ती और विश्वास पर आधारित होगी'[39]। तटस्थता के प्रति प्रतिबद्धता जताते हुए, व्यवहार में, राजपक्षे विदेश नीति में संतुलन या तटस्थता बनाए रखने में विफल रहे। श्रीलंका में वर्तमान में विदेश नीति की कई गलतियां इस संबंध में श्रीलंका की सीमा की अनुपस्थिति को दर्शाती हैं।

अमेरिका-चीन और भारत-चीन जैसी महान शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा और प्रतिद्वंद्विता हिंद महासागर सुरक्षा गतिशीलता में दिखाई देती है।

चीन के भारी हस्तक्षेप के कारण श्रीलंका की विदेश नीति ने निष्क्रिय मुद्रा ले ली है, जो श्रीलंका की संप्रभुता के लिए खतरा बन गई है और दक्षिण एशिया की क्षेत्रीय सुरक्षा को प्रभावित कर रही है।

चीन जैसी बाहरी ताकतों द्वारा लगाए गए भू-आर्थिकी ने श्रीलंका की विदेश नीति को प्रभावित किया है। चीन श्रीलंका में सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार और दाता होने के नाते, आर्थिक हित ने चीन को अपनी भू-राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं को स्थापित करने के लिए आरामदायक पैंतरेबाज़ी की जगह दी है। चीन के भारी हस्तक्षेप के कारण श्रीलंका की विदेश नीति ने निष्क्रिय मुद्रा ले ली है, जो श्रीलंका की संप्रभुता के लिए खतरा बन गई है और दक्षिण एशिया की क्षेत्रीय सुरक्षा को प्रभावित कर रही है।

श्रीलंका में आर्थिक संकट के दो आयाम हैं। तरलता का मुद्दा है और दूसरा दिवालिया संकट है। तरलता का मुद्दा, जहां विदेशी भंडार महीने-दर-महीने कम होने लगा, और दिवालियापन, जहां देश ने अपने बाहरी ऋण को चुकाने की अपनी क्षमता खो दी, अंततः एक संप्रभु ऋण चूक का कारण बन रहा है।

राष्ट्रपति गोटाबाया राजपक्षे की सरकार ने अपने नीति मंडल द्वारा पेश की गई अति-राष्ट्रवादी आंतरिक नीति के कारण कई शुरुआती चेतावनियों को नजरअंदाज कर दिया। एसएलपीपी सरकार ने आर्थिक विशेषज्ञों और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की बाहरी सलाह को एक विवेकपूर्ण समाधान के रूप में नहीं बल्कि वित्तीय बोझ के रूप में देखा। राष्ट्रपति गोटाबाया ने उन्हीं नीतिगत भूलों को स्वीकार किया जो

उन्होंने की थीं[40]।

श्रीलंका संकट में चीन एकमात्र कारक नहीं है, बल्कि यह एक महत्वपूर्ण कारक है। 2019 से 2022 तक अन्य बाहरी कारक थे। 2019 में ईस्टर संडे आतंकी हमले, इसके बाद महामारी और यूक्रेन युद्ध ने पर्यटकों के आगमन को प्रभावित किया। पर्यटन आय में भारी गिरावट आई, जिससे अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई।

श्रीलंका संकट में चीन एकमात्र कारक नहीं है, बल्कि यह एक महत्वपूर्ण कारक है।

निरंकुश शासन और सुधार

राजपक्षे के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा शुरू किए गए सुधारों, जिसमें कर कटौती और अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाले बाहरी कारक शामिल थे, ने अर्थव्यवस्था के राजस्व प्रवाह को खत्म करने के लिए गंभीर प्रभाव डाला। इस प्रकार, राजपक्षे के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा प्रयोग की गई अतिराष्ट्रवादी आंतरिक नीति की जांच करते समय, रात भर रासायनिक उर्वरक प्रतिबंध के साथ आयात सब्सिडी जैसे निर्णयों ने अर्थव्यवस्था को सीधे प्रभावित किया। इसके अलावा, सिविल सेवा में अट्ठाईस सैन्य नियुक्तियों के साथ भारी सैन्यीकरण, कार्यकारी शाखा द्वारा न्यायिक हस्तक्षेप, लोकतांत्रिक पतन, और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा प्रारंभिक चेतावनियों की अस्वीकृति ऐसी चिंताएं थीं जिन्होंने संकट को जन्म दिया।

निरंकुश मॉडल, जिसे राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे ने भारी सैन्यीकरण के साथ एकीकृत करके लोकतांत्रिक मॉडल को बदलने के लिए चीन के भारी दबाव कारक के साथ पेश किया, ने मानवाधिकारों की चिंताओं को और कम कर दिया, जो जिनेवा यूएनएचआरसी द्वारा पहले से ही उठाई गई चिंताओं को और बढ़ा रहा है। यूएनएचआरसी में श्रीलंकाई सरकारों की स्थिति के लिए चीन का समर्थन निरंकुश शासन के चीनी समर्थन को दर्शाता है। श्रीलंका सरकार ने शिनजियांग 41 में चीन की मानवाधिकार चिंताओं में मदद करके चीन से मानवाधिकार समर्थन का प्रत्युत्तर दिया[41]।

राजनीतिक दल स्तर पर, सीसीपी (चीनी कम्युनिस्ट पार्टी) और राजपक्षे की राजनीतिक पार्टी, एसएलपीपी (श्रीलंका पोडुजाना पेरामुना) का घनिष्ठ सहयोग था। सीसीपी फंडिंग ने एसएलपीपी और घरेलू राजनीतिक एजेंडे को प्रभावित किया, जिससे राष्ट्रपति गोटाबाया और उनके सुदृढ़ सैन्य सर्कल के साथ महत्वपूर्ण निर्णय लेने की प्रक्रिया पर हावी होने के साथ एक केंद्र-भारी मॉडल बन गया। गोटबाया के नेतृत्व वाली सरकार के

तहत वरिष्ठ मंत्रियों के साथ प्रतिद्वंद्विता इस कारक के साथ शुरू हुई, जहां अधिकांश वरिष्ठ मंत्री निर्णय लेने की प्रक्रिया में नहीं थे[42]।

श्रीलंका के पास गोटबाया राजपक्षे के नेतृत्व वाली सरकार के तहत अपनी पहली सैन्य, विदेश सचिव नियुक्त की गई थी, जिसका विदेश नीति पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा था। श्रीलंका द्वारा अपनाई गई संतुलित विदेश नीति चीन की ओर झुकी हुई थी, एक चीन की विदेश नीति जिसे गोटबाया राजपक्षे ने अपने कार्यकाल के दौरान पेश किया था, ने पूरे देश को प्रभावित किया। श्रीलंका द्वारा अमेरिका के मिलेनियम चैलेंज कॉरपोरेशन (एमसीसी) विकास सहायता अनुदान को खारिज करने और भारत तथा जापान के ईस्ट कंटेनर टर्मिनल (ईसीटी) परियोजना को राष्ट्रीय सुरक्षा के बहाने खारिज करने से राजपक्षे के नेतृत्व वाली सरकार के दौरान चीनी एजेंसी और प्रभाव का पता चलता है। चीनी पोर्ट सिटी परियोजना[43] की त्वरित स्वीकृति और चीन से अधिक महत्वपूर्ण उधार चीन के प्रति संरेखण को दर्शाता है।

थिंक-टैंक स्तर पर, कोलंबो में निजी थिंक टैंक के लिए चीन से वित्तीय और तकनीकी सहायता एक और कारक था। माना जाता है कि ऐसे ही एक थिंक टैंक ने चीनी कोविड स्वास्थ्य दिशानिर्देश सामग्री का स्थानीय भाषा में अनुवाद किया है और चीनी सामरिक विस्तार को लागू करने और समर्थन करने के लिए सामरिक साझेदारी पर हस्ताक्षर करने में हुआवेई दूरसंचार की सहायता की है। समझा जाता है कि इस थिंक टैंक ने राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे के कार्यकाल के दौरान उनके साथ मिलकर काम किया था। चीनी कन्फ्यूशियस केंद्रों ने श्रीलंका में स्थानीय थिंक टैंक और विश्वविद्यालयों को भी सीधे प्रभावित किया।

श्रीलंका के इतिहास में पहली बार, सरकारी सिविल सेवा के साथ-साथ पुरातत्व, कृषि, विदेश मंत्रालय से लेकर कई अन्य सरकारी विभागों सहित सरकारी संस्थानों में सैन्य नियुक्तियों के साथ भारी सैन्यीकरण किया गया था। जब किसी अन्य दक्षिण एशियाई राष्ट्र के साथ सैन्य नियुक्तियों की तुलना की गई, तो यह पाकिस्तान की तुलना में बहुत अधिक था। राजपक्षे के नेतृत्व वाली सरकार के दौरान भारी सैन्य उपस्थिति के साथ, यह लोकतांत्रिक मानदंडों और मूल्यों से स्पष्ट प्रस्थान था। संकट तीन स्थितियों के कारण टूट गया: निरंकुश परिवार शासन, बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार, और गरीबी का उदय। वर्तमान में, रानिल विक्रमसिंघे के राष्ट्रपति पद के साथ, लोगों का विद्रोह कुछ हद तक शांत हो गया है। अभी भी अनसुलझी चिंताएं हैं, जैसे कि राजनीतिक और आर्थिक डोमेन में, जिसने देश में उच्च मुद्रास्फीति दर को ट्रिगर किया है, जहां कई लोगों को आवश्यक वस्तुओं की कीमतों को वहन करना चुनौतीपूर्ण लगता है। हाल ही में संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट ने यूक्रेन में युद्ध जैसे प्रचलित बाहरी कारकों के कारण श्रीलंका जैसे देशों में बढ़ती मुद्रास्फीति और गरीबी पर प्रकाश डाला[44]। यदि आर्थिक चुनौतियों को स्थिर नहीं किया जाता है, तो भविष्य में विद्रोह हो सकता है, और आगे की अस्थिरता विनाशकारी परिणाम लाएगी। इसलिए, श्रीलंका को अपने राजनीतिक-आर्थिक संकट से तत्काल स्थिरता की आवश्यकता होगी।

राष्ट्रपति विक्रमसिंघे ने आईएमएफ के साथ आगे बढ़ने और आर्थिक संकट को स्थिर करने के लिए

अंतर्राष्ट्रीय भागीदारों के साथ काम करने में सराहनीय प्रगति की है। हालांकि, वर्तमान सरकार ने विरोध प्रदर्शन पर नकेल कसने और आतंकवाद अधिनियम के तहत कई प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार करने के लिए बल का उपयोग भी किया है, जो सबसे विवेकपूर्ण उपाय नहीं है। एसएलपीपी सदस्यों को मंत्रियों के रूप में नियुक्त करके उनके राजनीतिक अस्तित्व के लिए पिछली सरकार के साथ संरेखण भी एक स्पष्ट कारक है। एक प्रतिष्ठित पत्रकार रंगा जयसूर्या के अनुसार, आतंकवाद निरोधक अधिनियम (पीटीए) का उपयोग करके 3353 से अधिक कार्यकर्ताओं को पकड़ा गया है[45]। संकट के दौरान राष्ट्रपति भवन में घुसे ज्यादातर लोगों की पहचान वर्तमान सरकार ने आतंकवादियों के रूप में की थी। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और कई अन्य देशों से चेतावनी है कि वर्तमान प्रक्षेपवक्र इस स्थिति को संभालने का सबसे अनुकूल तरीका नहीं है। श्रीलंका में अमरीका की राजदूत जूली चुंग ने राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे से मुलाकात की और प्रदर्शनकारियों के विरुद्ध हिंसा में 'अनावश्यक और अत्यधिक परेशान करने वाली[46]' वृद्धि पर अपनी गंभीर चिंता व्यक्त की।

चीनी ऋण

संकट को बढ़ाने वाला दूसरा सबसे महत्वपूर्ण कारक चीन था। श्रीलंका चीन के समर्थन पर काफी निर्भर था। द्वीप की अपनी यात्रा के दौरान चीनी विदेश मंत्री वांग यी का सीधा अनुरोध सबसे अच्छा उदाहरण था जहां श्रीलंका के राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे ने ऋण पुनर्गठन सहायता का अनुरोध किया था। चीन ने इससे इनकार कर दिया और मौजूदा चीनी ऋण को निपटाने के लिए और अधिक ऋण जारी करने पर सहमत हो गया। ऋण पुनर्गठन पर चीन की स्थिति अभी भी चिंता का विषय है। चीन से उधार की मात्रा, जापानी ऋण के बराबर, लगभग 10% है। कोलंबो विश्वविद्यालय के एक अकादमिक उमेश मोरामुदली का तर्क है कि यह 10% से अधिक और 20% के करीब है। "चीनी लेनदारों के लिए श्रीलंका का [ऋण] लगभग 20% है, न कि 10%। अत, इन सभी 20 प्रतिशत का पुनर्गठन करना होगा। इसका मतलब है कि आपको यह देखना होगा कि चीन विकास बैंक पुनर्गठन से कैसे निपटेगा और चीन का एक्ज़िम बैंक पुनर्गठन से निपटेगा[47]। अधिकांश ऋणों में चीन की अपारदर्शिता और गैर-पारदर्शिता स्पष्ट है, जिसकी तुलना जापानी ऋणों से नहीं की जा सकती है।

सामरिक जाल

श्रीलंका में सामरिक परियोजनाओं, जैसे गहरे दक्षिण में हंबनथोटा बंदरगाह पर चीन के लिए बनाई गई नागरिक-सैन्य सांठगांठ एक गंभीर चिंता का विषय है। सरकार को इन परियोजनाओं से राष्ट्र के लिए दीर्घकालिक सुरक्षा निहितार्थों की गणना करने की आवश्यकता है।

श्रीलंका के पूर्व विदेश मंत्री दिनेश गुणवर्धने ने बताया कि चीन के साथ हस्ताक्षरित हंबनथोटा बंदरगाह पट्टा समझौता इसकी वास्तविक 99 वर्ष की लीज अवधि से अधिक है। विदेश मंत्री ने समझाया, "यह

कहता है कि 99 वर्ष की लीज को आगे की अवधि के लिए बढ़ाया जा सकता है। यह 99 वर्षों के बाद या 99 वर्षों तक किसी भी संख्या में चल सकता है[48]। यह बयान दर्शाता है कि नीति चक्र ने सामरिक स्तर पर कितना वजन निर्धारित किया है। शिथिल हस्ताक्षरित, अपारदर्शी चीनी समझौतों और गैर-पारदर्शिता ने चीनी परियोजनाओं के बारे में सार्वजनिक चिंता पैदा की है। बहुचर्चित कर्ज-जाल कूटनीति से ज्यादा चीन तीन कारकों की वजह से सामरिक जाल बिछा रहा है। सबसे पहले, राजनीतिक दल के स्तर पर, जहां सीसीपी और एसएलपीपी ने संरेखण किया है; दूसरा, मानवाधिकारों पर, जहां चीन और श्रीलंका पारस्परिक रूप से एक-दूसरे का समर्थन करते हैं। अंत में, श्रीलंका और चीन के बीच सैन्य-से-सैन्य समर्थन।

हिंद महासागर और उससे परे प्रभाव

इस संकट ने हिंद महासागर को दो आयामों में प्रभावित किया है। पहला आर्थिक आयाम है, जहां भू-राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए चीन की भू-आर्थिक रणनीति का उपयोग किया गया, जिससे देश की संप्रभुता और क्षेत्रीय सुरक्षा को खतरा पैदा हो गया। सामरिक बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को पट्टे पर देने वाले दीर्घकालिक पट्टे समझौतों और भारी चीन निर्भरता ने दीर्घकालिक सुरक्षा खतरे का मार्ग प्रशस्त किया है। संकट के दौरान बंदरगाहों की शिथिलता के कारण व्यापार की मात्रा में गिरावट आई है, जिससे अर्थव्यवस्था पर और बोझ पड़ा है। बड़ी उधारी वाली चीनी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं ने इन परियोजनाओं की शुरुआत से अपेक्षित राजस्व का उत्पादन नहीं किया, जिससे बीमार अर्थव्यवस्था पर अतिरिक्त बोझ बढ़ गया। एक नाजुक श्रीलंका हिंद महासागर सुरक्षा के प्रति श्रीलंका की प्रतिबद्धताओं को सीधे प्रभावित करेगा।

> श्रीलंका में रणनीतिक परियोजनाओं, जैसे गहरे दक्षिण में हंबनथोटा बंदरगाह पर चीन के लिए बनाई गई नागरिक-सैन्य सांठगांठ एक गंभीर चिंता का विषय है।

दूसरा, सुरक्षा क्षेत्र में, सुरक्षा खर्च पर सीमित वित्तीय संसाधन श्रीलंकाई जल क्षेत्र की गश्त को प्रभावित करेंगे, आतंकवाद विरोधी उपायों, मानव तस्करी के प्रयासों और समग्र समुद्री सुरक्षा क्षेत्र में भाग लेंगे। देश की आर्थिक स्थिति के कारण मानव तस्करी और अन्य समुद्री सुरक्षा कार्यों में कम निवेश होगा, जिसका सीधा असर क्षेत्रीय सुरक्षा पर पड़ेगा। श्रीलंका की नौसैनिक सुरक्षा सीमा भारत की तत्काल और हिंद महासागर सुरक्षा की ओर बढ़ेगी।

एक अन्य कारक चीन का बाहरी हस्तक्षेप है जो श्रीलंका और भारत के लिए एक गंभीर चिंता का विषय

बन गया है। चीनी जासूसी जहाज 'यांग वांग 5' की श्रीलंका यात्रा चीन के प्रति श्रीलंका की विदेश नीति के झुकाव और श्रीलंका और क्षेत्र के लिए सुरक्षा खतरे का एक स्पष्ट उदाहरण था। यात्रा को ठुकराने के लिए नई दिल्ली से कई संकेतों को नजरअंदाज करते हुए, कोलंबो ने हंबनथोटा बंदरगाह पर चीनी जासूसी जहाज तक पहुंच प्रदान की। यात्रा से इनकार करने में असमर्थता श्रीलंका की विदेश नीति निर्णय लेने की प्रक्रिया के प्रति चीन के मौजूदा सामरिक प्रभाव को दर्शाती है। भारतीय विद्वान हर्ष पंत के अनुसार, जासूसी जहाज की यात्रा का 'भारत और भारत-श्रीलंका संबंधों के लिए परिणाम होगा। पीपुल्स लिबरेशन आर्मी नेवी ठिकानों का निर्माण करके हिंद महासागर क्षेत्र में आगे की उपस्थिति की मांग कर रही है। हंबनटोटा में जो हो रहा है, वह व्यापक क्षेत्र में निर्माण कर रहे बुनियादी ढांचे के बारे में चीनी इरादे के बारे में एक संकेत है[49]।

श्रीलंका में पवन ऊर्जा परियोजना एक और उदाहरण था जो भारत के दक्षिणी तट के करीब भारत की तत्काल परिधि में चीनी रुचि को दर्शाता है[50]। भारत से निकटता के कारण यह परियोजना भारत के लिए चिंता का विषय बन गई। एक वरिष्ठ नौकरशाह, श्रीलंका में एक सरकारी मंत्रालय[51] के सचिव ने इस लेखक द्वारा साक्षात्कार किया, जिसमें भारत की स्थिति का मूल्यांकन श्रीलंका की आंतरिक विकास परियोजना में हस्तक्षेप करने के रूप में किया गया था, जो सुरक्षा संवेदनशीलता को सही ढंग से नहीं पढ़ रहा था। राजपक्षे प्रशासन ने अपने राजनीतिक लाभ के लिए इस आयाम का प्रचार किया।

अमेरिका और चीन के बीच शक्ति प्रतिद्वंद्विता के उदय के साथ, श्रीलंका जैसे देशों को अपने भू-रणनीतिक स्थान के कारण प्रत्यक्ष प्रभाव का सामना करना पड़ेगा। श्रीलंका बीआरआई और हिंद-प्रशांत रणनीति के बीच फंसा हुआ है। दोनों रणनीतियों का समर्थन करके, द्वीप राष्ट्र एक दूसरे को संतुलित करने की कोशिश कर रहा है। दक्षिण चीन और पूर्वी चीन सागर और प्रशांत द्वीपों में चीन की आक्रामकता दिखाई दे रही है। प्रशांत क्षेत्र में सोलोमन द्वीप और हिंद महासागर में श्रीलंका आर्थिक और सुरक्षा क्षेत्रों में चीनी प्रभाव के समान पैटर्न का सामना कर रहे हैं। दोनों द्वीपों में चीन का समर्थन करने वाले नेता थे, जो चीन की ओर विदेश नीति को झुकाते थे। सोलोमन द्वीप में सुरक्षा युद्धाभ्यास के माध्यम से कैनबरा पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन श्रीलंका में सुरक्षा युद्धाभ्यास के माध्यम से भारत लिए निहितार्थ के साथ किया जा सकता है[52]। दोनों क्षेत्रों में चीन की अधिक महत्वपूर्ण भूमिका अपने प्रभाव का विस्तार करना है, विभिन्न सरकारों को चीन की ओर झुकाना है जो सामरिक अभ्यास के माध्यम से हासिल किया गया था।

श्रीलंका बीआरआई और हिंद-प्रशांत रणनीति के बीच फंसा हुआ है। दोनों रणनीतियों का समर्थन करके, द्वीप राष्ट्र एक दूसरे को संतुलित करने की कोशिश कर रहा है।

पड़ोस प्रथम और सागर

भारत और श्रीलंका को भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू की गई 'पड़ोसी पहले' नीति और क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास (सागर) को बहुत करीब से देखने और अपने सामरिक और सुरक्षा क्षेत्र के लिए मौजूदा चुनौतियों की पहचान करने की आवश्यकता है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, 'भारत और श्रीलंका के संबंध हजारों वर्ष पुराने हैं। मेरी सरकार की पड़ोसी प्रथम नीति और सागर सिद्धांत के अनुसार, हम दोनों देशों के बीच संबंधों को विशेष प्राथमिकता देते हैं[53]। भारत ने श्रीलंका संकट के दौरान इसे पहले उत्तरदाता के रूप में साबित किया है, जो किसी भी अन्य राष्ट्र की तुलना में एक बड़े वित्तीय पैकेज के साथ सहायता करता है। बुनियादी खाद्य आवश्यक वस्तुओं और तेल सहित आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति में भारत की सहायता ने संकट के दौरान राष्ट्र को स्थिर कर दिया। दुर्भाग्य से, अतीत में, भारत द्वारा चेतावनी दी गई सुरक्षा गणनाओं को कोलंबो द्वारा गोटबाया राजपक्षे सरकार के दौरान पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया गया था और इसके बाद वर्तमान विक्रमसिंघे के नेतृत्व वाली सरकार ने जासूसी जहाज को हंबनथोटा में आमंत्रित किया था। इस तरह की घटनाएं भारत-श्रीलंका घनिष्ठ सुरक्षा संबंधों के लिए स्पष्ट संबंध और विश्वास बिगड़ने वाले निर्णय हैं।

भारत-श्रीलंका के बीच विश्वास की कमी का एक और कारक राजनीतिक अभिजात वर्ग के लिए चीन की आसान पकड़ का खतरा है, जो नीति को प्रभावित करता है। 2021 की कार्नेगी दक्षिण एशिया रिपोर्ट[54] के अनुसार, चीन द्वारा अभिजात वर्ग, विशेष रूप से राजनीतिक अभिजात वर्ग की पकड़, श्रीलंका सहित कई दक्षिण एशियाई देशों में एक खतरनाक विकास है। यह कारक भारत और श्रीलंका के बीच विश्वास की कमी को और बढ़ा सकता है। भारत के पड़ोसी देशों, जैसे श्रीलंका, का भारत के साथ क्षेत्रीय कार्यक्रमों पर प्रतिबद्ध होने और काम करने का वास्तविक इरादा क्षेत्रीय स्थिरता और हिंद महासागर में नियम-आधारित व्यवस्था स्थापित करने के लिए क्षेत्रीय सुरक्षा उपायों में सुधार के लिए आवश्यक है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, 'भारत और श्रीलंका के संबंध हजारों साल पुराने हैं। मेरी सरकार की नेबरहुड फर्स्ट नीति और सागर सिद्धांत के अनुसार, हम दोनों देशों के बीच संबंधों को विशेष प्राथमिकता देते हैं। भारत ने श्रीलंका संकट के दौरान इसे पहले उत्तरदाता के रूप में साबित किया है, जो किसी भी अन्य राष्ट्र की तुलना में एक बड़े वित्तीय पैकेज के साथ सहायता करता है।

क्वाड/आईपीईएफ/बीआरआई टूलकिट

अंत में, चतुष्कोणीय सुरक्षा वार्ता (क्यूएसडी), जिसे आमतौर पर क्वाड के रूप में जाना जाता है, और भारत-प्रशांत आर्थिक ढांचा (आईपीईएफ)[55] महत्वपूर्ण पहल हैं जिन्हें श्रीलंका समर्थन दे सकता है और अपनी विदेश नीति को अधिक संतुलित मुद्रा की ओर पुनर्गठित करने से लाभान्वित हो सकता है। एक लचीली और निष्पक्ष अर्थव्यवस्था और स्वच्छ अर्थव्यवस्था बनाने के लिए, आईपीईएफ में हाइलाइट किया गया है, बुनियादी ढांचा परियोजनाओं पर कुछ सख्त उपाय लाने के लिए अपनाया जा सकता है। क्वाड पर, तन्वी मदान और ध्रुव जयशंकर के अनुसार, क्वाड को अन्य समान विचारधारा वाले भागीदारों के साथ अपने जुड़ाव में विविधता लानी चाहिए. 'क्वाड को इसे पूरा करने के लिए अधिक सदस्यों को जोड़ने की आवश्यकता नहीं है; इसके बजाय यह अन्य देशों को उनकी जरूरतों और आराम के स्तर के आधार पर मौजूदा क्वाड गतिविधियों में शामिल कर सकता है, या क्षेत्रीय सुरक्षा और लचीलापन बढ़ाने के लिए उनकी पहल में भाग ले सकता है[56]। इसी तरह, श्रीलंका क्वाड और आईपीईएफ के साथ साझेदारी कर सकता है और अपनी वर्तमान आर्थिक और सुरक्षा स्थिति में सुधार के लिए कई देशों के साथ जुड़ सकता है।

एशिया सोसाइटी एएसपीआई[57] द्वारा शुरू की गई बीआरआई परियोजनाओं के लिए एक टूल किट एक नई पहल है जिसे चीनी बीआरआई परियोजनाओं वाले राष्ट्र बेहतर हितधारक जुड़ाव के लिए लागू कर सकते हैं और पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन (ईआईए) की प्रक्रिया में सुधार कर सकते हैं। श्रीलंका में अधिकांश बीआरआई परियोजनाओं में हितधारकों की भागीदारी कम थी, और प्रारंभिक ईआईए मंजूरी प्रक्रियाओं को पर्याप्त रूप से पालन करने की आवश्यकता थी। मट्टाला में एक पक्षी अभयारण्य के बगल में निर्माण के कारण रुकी हुई हवाई अड्डा परियोजना एक अच्छा उदाहरण है।

निष्कर्ष

कई क्षेत्रीय और वैश्विक पहल हैं जो श्रीलंका संकट के चरण से बाहर निकलने के लिए अपनी वर्तमान स्थिति में सुधार करने के लिए काम कर सकता है। भारत और श्रीलंका के बीच विश्वास की कमी पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। विश्वास हासिल करने के लिए निवेश वास्तव में आईपीईएफ जैसी क्षेत्रीय और वैश्विक पहलों के लिए प्रतिबद्ध होकर आवश्यक है। इसके लिए, श्रीलंका को अपनी मौजूदा विदेश नीति को फिर से तैयार करने की आवश्यकता है, चीन की झुकाव से अधिक संतुलित विदेश नीति की स्थिति की ओर। श्रीलंका को संतुलित विदेश नीति के साथ अमेरिका, चीन और कई मध्यम शक्तियों से लाभ हो सकता है। चीन द्वारा सामरिक इरादे से की गई बुनियादी ढांचा कूटनीति को देश की संप्रभुता और क्षेत्रीय सुरक्षा को प्रभावित करने वाले सुरक्षा निहितार्थों की पहचान करने के लिए

दीर्घकालिक सामरिक लेंस से देखने के लिए कोलंबो से ध्यान देने की आवश्यकता है। श्रीलंका संकट का असर पाकिस्तान जैसे अस्थिर ऋण वाले अन्य विकासशील देशों पर भी पड़ सकता है, जिनकी बीआरआई संख्या बहुत अधिक है। श्रीलंका के राजनीतिक-आर्थिक संकट और श्रीलंका में चीन फैक्टर से लेकर कई अन्य देशों को सबक मिला है।

मालदीव, हिंद महासागर क्षेत्र में जलवायु सुरक्षा और भू-राजनीति

अथौल्ला ए रशीद

प्रस्तावना

मालदीव के अपने पड़ोसियों, विशेष रूप से भारत के साथ ऐतिहासिक संबंध हैं। हाल के वर्षों में, मालदीव ने चीन जैसे अतिरिक्त-क्षेत्रीय नायकों के साथ बहुत करीबी विकास सहयोग संबंध विकसित किए थे जो पारंपरिक क्षेत्रीय सिद्धांतों और प्रथाओं का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। 2013 से 2018 तक मालदीव में चीन के जुड़ाव के उदय ने क्षेत्र में एक शक्ति के उदय के बारे में भारत (और उसके हिंद-प्रशांत भागीदारों) सहित क्षेत्रीय नायकों के लिए कई चिंताएं पैदा कीं। हालांकि, 2018 के अंत में सत्ता में आई नई सरकार ने 'भारत-प्रथम' नीति को दोहराया और चीन के साथ किए गए कुछ प्रमुख निवेशों को खत्म कर दिया। 2018 के बाद से विदेशी साझेदारी संरचनाओं और भू-राजनीतिक दृष्टिकोण के बावजूद, देश की विदेश नीति विकल्पों को प्रभावित करने वाले कारकों की स्पष्ट समझ अभी तक नीति और विद्वानों की जांच का एक तत्व बनी हुई है।

जलवायु सुरक्षा के लेंस के माध्यम से, यह शोध-पत्र हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) में मालदीव से संबंधित विदेशी साझेदारी और भू-राजनीति के चालकों का एक संक्षिप्त विश्लेषण प्रदान करता है। मालदीव की नीतिगत प्राथमिकताएं एक द्वीप राष्ट्र में निहित अद्वितीय कमजोरियों से काफी प्रभावित हैं जो लगातार समुद्र के स्तर में वृद्धि से खतरे में हैं। जलवायु सुरक्षा प्राप्त करना इसकी सतत विकास योजना और राष्ट्रीय सुरक्षा का अभिन्न अंग है[1,2]। मालदीव एक विकासशील देश भी है जिसके पास अपनी विकास गतिविधियों का समर्थन करने और आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए प्राकृतिक, आर्थिक और अवसंरचनात्मक संसाधनों की कमी है। जबकि जलवायु परिवर्तन इन चुनौतियों और कमजोरियों को बढ़ाता है, परियोजनाएं और कार्यक्रम जो जलवायु के अनुकूल गतिविधियों और अनुकूलन उपायों के माध्यम से विकास को बढ़ा सकते हैं, उन्हें अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के सहयोग की आवश्यकता होती है। इस संदर्भ में, द्विपक्षीय सहायता कार्यक्रमों सहित अंतर्राष्ट्रीय नीति ढांचे और विकास एजेंसियां राष्ट्रीय प्रयासों का समर्थन कर सकती हैं [3-7]। हालांकि, राष्ट्रीय प्रयासों और प्राथमिकताओं को उस तरीके से भी निर्धारित किया जाता है जिसमें जलवायु खतरों और उनके सुरक्षा निहितार्थों को राष्ट्रीय एजेंसियों और राजनीति द्वारा माना और निर्मित किया जाता है।

जलवायु सुरक्षा को मालदीव की विदेशी साझेदारी और भू-राजनीतिक हितों के एक प्रमुख चालक के रूप में देखा जा सकता है।

यह शोध-पत्र बताता है कि मालदीव द्वारा जलवायु सुरक्षा का निर्माण एक प्रमुख सुरक्षा और विकास प्राथमिकता के रूप में कैसे किया गया है। यह भी बताता है कि कैसे जलवायु सुरक्षा को मालदीव की विदेशी साझेदारी और भू-राजनीतिक हितों के प्रमुख चालक के रूप में देखा जा सकता है। यह मालदीव में विदेशी साझेदारी के वर्तमान और भविष्य के प्रक्षेपवक्र को समझने में मदद कर सकता है। नीति दस्तावेजों, देश के अध्ययन और मीडिया रिपोर्टों की समीक्षा का उपयोग करते हुए, निम्नलिखित खंड जलवायु सुरक्षा और मालदीव के भू-राजनीतिक विचारों से संबंधित अतीत और वर्तमान प्राथमिकताओं और रुझानों पर चर्चा करते हैं।

जलवायु सुरक्षा का निर्माण

मालदीव में सुरक्षा के लिए मुख्य खतरा क्या है, या मालदीव के लिए सुरक्षा का क्या मतलब है? मालदीव पारंपरिक और गैर-पारंपरिक दोनों सुरक्षा खतरों का सामना करता है[8]। एक मुद्दे को एक सुरक्षा मुद्दा माना जाता है जब यह किसी राष्ट्र के अस्तित्व के लिए अस्तित्व का खतरा पैदा करता है या आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय प्रगति सहित प्रगति की संभावना है [9-11]। एक छोटे से राष्ट्र के रूप में, मालदीव आईओआर में अपने सुरक्षा प्रदाता के रूप में बड़े क्षेत्रीय नायकों, विशेष रूप से भारत पर निर्भर करता है। पारंपरिक और गैर-पारंपरिक युद्ध की तैयारी इसके सुरक्षा एजेंडे में शामिल है[8]। पारंपरिक या पारंपरिक सुरक्षा क्षेत्रों में सुरक्षा प्राप्त करना इस बात पर भी निर्भर करता है कि मालदीव आईओआर के सामूहिक सुरक्षा एजेंडे के माध्यम से अपने सुरक्षा मुद्दों को कैसे नेविगेट करता है। इसलिए, गैर-पारंपरिक सुरक्षा मुद्दे सुरक्षा क्षेत्र और गैर-सुरक्षा (नागरिक) क्षेत्र की एजेंसियों दोनों के प्रमुख नीतिगत एजेंडे में शीर्ष पर रहे हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण, मालदीव कई चुनौतियों और जोखिमों का सामना कर रहा है जो इसकी अर्थव्यवस्था की सुरक्षा और अस्तित्व के लिए खतरा हैं। द्वीप कमजोर है और समुद्र के स्तर में वृद्धि और समुद्र के अम्लीकरण जैसी घटनाओं से लगातार खतरा है [6,12]। पर्यावरणीय (या जलवायु-आधारित) खतरों के अलावा, बड़ा महासागर संभावित रूप से कई खतरनाक गतिविधियों जैसे कि समुद्री डकैती, मानव, नशीली दवाओं और हथियारों की तस्करी पर कब्जा कर लेता है जो अर्थव्यवस्था, समाज और सुरक्षा को खतरे में डाल सकते हैं और संभावित रूप से पर्यटन और मत्स्यन के उद्योगों सहित इसके आर्थिक इंजनों से समझौता कर सकते हैं [8]। जलवायु परिवर्तन मौजूदा कमजोरियों को बढ़ाता है और इस तरह के गैर-पारंपरिक खतरों से निपटने के लिए अवसंरचनात्मक क्षमताओं को कमजोर करता है। यह स्थिरता, विकास और राजनीतिक स्थिरता के लिए देश की क्षमता को प्रभावित करता है।

एक छोटे से राष्ट्र के रूप में, मालदीव आईओआर में अपने शुद्ध सुरक्षा प्रदाता के रूप में बड़े क्षेत्रीय नायकों, विशेष रूप से भारत पर निर्भर करता है।

मालदीव एक छोटा सा द्वीप राष्ट्र है, जिसकी आबादी लगभग 500,000 लोगों की है, और यह आर्थिक और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए संसाधन-निर्भर है। इसका मतलब यह है कि इसके स्थानीय संसाधन अर्थव्यवस्था की पूर्ण विकास क्षमता का समर्थन नहीं कर सकते हैं, खासकर पर्यटन जैसे तेजी से बढ़ते मेगा उद्योग के साथ। समुद्र के स्तर में वृद्धि से उत्पन्न निरंतर जोखिम और खतरों का सामाजिक अवसरों पर तत्काल और संभावित प्रभाव पड़ता है। [13] इस संबंध में, कई कारक दिखा सकते हैं कि जलवायु सुरक्षा मालदीव की नीतिगत प्राथमिकताओं को कैसे चलाती है। इन पर नीचे दिए गए अनुभागों में चर्चा की गई है।

पर्यटन पर निर्भरता

मालदीव में विकास की अपार संभावनाएं हैं। 1970 और 1980 के दशक के बाद से, मालदीव ने पर्यटन के कारण सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) और राष्ट्रीय आय बढ़ाने के मामले में महत्वपूर्ण प्रगति की है[6]। राष्ट्र के विकास के लिए पर्यटन का अस्तित्व और स्थिरता महत्वपूर्ण है, इसलिए, यह सरकार की नीतिगत प्राथमिकता बनी हुई है। उदाहरण के लिए, हाल ही में कोविड-19 महामारी लॉकडाउन का इस गतिविधि पर गंभीर प्रभाव पड़ा। हालांकि, सरकार ने दुनिया भर में यात्रा प्रतिबंधों को हटाने के तुरंत बाद उद्योग को अपनी गतिविधियों को फिर से शुरू करने के लिए असाधारण उपाय करने के लिए तेजी से कदम उठाए। बहरहाल, जलवायु परिवर्तन पर्यटन उद्योग को उच्च लागत के जोखिम में डालता है जो पर्यटन के बुनियादी ढांचे के प्रबंधन से जुड़ा हुआ है। इसलिए, चट्टानों के आसपास सुरक्षा और पुनर्निर्मित द्वीपों और भूमि का निर्माण उद्योग और स्थानीय समुदायों के लिए एक आकर्षक विकास मॉडल बन गया है। पुनः प्राप्त भूमि और कृत्रिम द्वीप उद्योग गतिविधियों के लिए अच्छी तरह से काम कर सकते हैं [15]। हालांकि, एक नई भूमि पर जाने और रहने का विचार स्थानीय समुदायों के लिए एक चुनौती और चिंता का विषय है क्योंकि यह उनकी मूल भूमि से जुड़ी उनकी पहचान और सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों के साथ संघर्ष में आ सकता है[16]।

भूमि का नुकसान और जलप्लावन

समुद्र के स्तर में वृद्धि, मिट्टी के कटाव और समुद्र के अम्लीकरण का सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों के लिए उपयोग की जाने वाली भूमि के लिए तत्काल और दीर्घकालिक दोनों प्रभाव हैं। समुद्र के स्तर में वृद्धि ने पहले से ही अधिकांश द्वीपों के मीठे पानी के जलभृतों को प्रभावित किया है। जल सुरक्षा एक प्रमुख मुद्दा है जो खाद्य सुरक्षा और स्वास्थ्य के मुद्दे से जुड़ा हुआ है। सरकार ने दशकों से, संयुक्त

राष्ट्र एजेंसियों और द्विपक्षीय सहायता दाताओं की मदद से, इन मुद्दों को हल करने के लिए कई उपाय किए हैं [12,17]। हालांकि, भूमि और बुनियादी ढांचे के नुकसान सहित जल सुरक्षा के मुद्दों से परे दीर्घकालिक प्रभाव को संबोधित करना चल रही नीतिगत चिंता बनी हुई है। उदाहरण के लिए, मालदीव के द्वीप समुद्र तल से लगभग 2.4 मीटर ऊपर हैं और वर्ष 2100 तक 0.5 मीटर समुद्र के स्तर में वृद्धि की वैश्विक वैज्ञानिक भविष्यवाणियां देश को जलप्लावन के खतरे में डाल सकती हैं। [12] 2009 में पानी के नीचे कैबिनेट की बैठक ने जलप्लावन के इस विचार को पेश किया और मालदीव को जलवायु कार्रवाई के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता पर अपनी वकालत को आगे बढ़ाने में मदद की[18]। डूबते द्वीपों का विचार अर्थव्यवस्था के अस्तित्व के लिए समुद्र के स्तर में वृद्धि से भूमि की सुरक्षा की मांग करता है। समुद्र की दीवारों का निर्माण और तटरेखा का समर्थन करने के लिए सीबेड से रेत का उपयोग करके भूमि को पुनः प्राप्त करना प्रमुख नीतिगत कार्यों का हिस्सा बन गया है। इसने सबसे छोटी आबादी को बड़े द्वीपों, या सुरक्षित द्वीपों में स्थानांतरित करने की सरकारी योजना का समर्थन किया है [19,20]। हालांकि, कुछ अध्ययनों से यह भी पता चलता है कि जलवायु का शहरी या आर्थिक रूप से सक्रिय आबादी में जाने वाले लोगों के कारणों से कोई सीधा संबंध नहीं है। मुख्य कारण बेहतर आजीविका के अवसरों और आर्थिक जीवन की उनकी आवश्यकता से जुड़े हुए हैं[21]। इसका मतलब यह है कि बेहतर रहने की स्थिति, आर्थिक अवसर और बुनियादी ढांचे का निर्माण साथ-साथ चलना होगा और जलप्लावन और भूमि के नुकसान के मुद्दे को संबोधित करने के लिए जलवायु कार्रवाई से जुड़ा हुआ है।

चित्र 1: माले और हुलहुमाले मानचित्र पर दिखाई दे रहे हैं (गूगल मानचित्र काटे गए)

लोगों का आवागमन और बुनियादी ढांचे का विकास

यह शोध-पत्र दो प्रमुख जनसंख्या केंद्रों या शहरी द्वीपों को भी देखता है: माले, मालदीव की राजधानी शहर और हुलहुमाले, दूसरा सबसे बड़ा आवासीय द्वीप जो लगभग 7 किमी दूर है (चित्र 1 देखें)। माले में लोगों

का आवागमन ऐतिहासिक है और एक पूर्व-जलवायु नीति युग में शुरू हुआ है-बेहतर सामाजिक-आर्थिक जीवन के लिए आगे बढ़ने वाले लोगों का एक उदाहरण। हालांकि, हुलहुमाले का आंदोलन सरकारी नीति, लोगों के आवागमन और जलवायु सुरक्षा के बीच एक लिंक का हालिया और प्रमुख उदाहरण है। सरकार का मुख्य नीतिगत फोकस अर्थव्यवस्था का विकास और विकास योजना का समर्थन करने के लिए जलवायु अनुकूलन तंत्र को अपनाना रहा है। पर्यटन मुख्य इंजन रहा है जो सरकारी राजस्व का समर्थन करता है [6, 12,22]। यह उद्योग मालदीव की व्यापक सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों में योगदान देता है। जबकि उद्योग सरकार की आर्थिक योजना का समर्थन करता है, आबादी के लिए बेहतर बुनियादी ढांचे का निर्माण भी आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिरता का समर्थन कर सकता है। उदाहरण के लिए, राजधानी शहर में लोगों की ऐंठन अर्थव्यवस्था की दीर्घकालिक स्थिरता के लिए एक प्रमुख चिंता और बाधा रही है। इसलिए, विकास सहायता दाताओं के समर्थन के साथ, सरकार ने आवास और स्थानीय व्यावसायिक उद्यमों सहित सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों का समर्थन करने के लिए द्वीपों, भूमि और बुनियादी ढांचे के निर्माण और सुदृढ़ करने के लिए मेगा परियोजनाएं शुरू की हैं। हुलहुमाले विकास परियोजना इन मार्गों को प्रदान करने के आसपास केंद्रित है[23]। एक और हालिया मेगा प्रोजेक्ट चीन-मालदीव फ्रेंडशिप ब्रिज रहा है जो अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के द्वीप, हुलहुले के माध्यम से माले और हुलहुमाले को जोड़ता है (चित्र 1 देखें)[24]।

> विदेशी सहायता का कोई विकल्प नहीं है; यह एक विकल्प नहीं है, बल्कि एक आवश्यकता है।

हालांकि ये घटनाक्रम निश्चित रूप से जलवायु सुरक्षा प्राप्त करने का समर्थन करते हैं, विदेशी सहायता पर द्वीपों की निर्भरता का राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर मालदीव द्वारा प्रचारित और उसके बाद सुरक्षा की स्थिति और प्रकृति के लिए और अधिक प्रभाव पड़ता है। विदेशी सहायता का कोई विकल्प नहीं है; यह एक विकल्प नहीं है, बल्कि एक आवश्यकता है। हालांकि, मालदीव में लगातार सरकारों ने इस तरह की विदेशी साझेदारी को प्राप्त करने की मांग की है, जिससे इस क्षेत्र में और अधिक राजनीतिक तनाव और भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा पैदा हुई है [25,26]।

विदेशी साझेदारी और भू-राजनीतिक निहितार्थ

जबकि हुलहुमाले विकास परियोजना जैसी परियोजनाओं ने मालदीव में विकास योजनाओं का समर्थन करने के लिए विदेशी निवेशकों को आकर्षित किया है, अतिरिक्त क्षेत्रीय नायकों के साथ बातचीत ने क्षेत्रीय सुरक्षा नायकों के बीच कुछ तनाव भी पैदा किया है। इसमें पारंपरिक और गैर-पारंपरिक क्षेत्रीय सहायता भागीदारों के बीच भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में वृद्धि शामिल है[27]। यहां जलवायु सुरक्षा और विकास के संदर्भ में

छोटे राष्ट्र क्या करते हैं, और क्षेत्रीय सुरक्षा गतिशीलता के लिए उनके निहितार्थ के बीच घनिष्ठ संबंध का एहसास करना महत्वपूर्ण है, खासकर जब अतिरिक्त-क्षेत्रीय नायक अपनी विकास परियोजनाओं में शामिल होते हैं। मालदीव 2013 से 2018 तक अपनी विकास परियोजनाओं का समर्थन करने के लिए चीन के साथ अपने जुड़ाव पर विचार करते हुए एक क्लासिक मामला प्रस्तुत करता है [25,28]। महत्वपूर्ण उदाहरण हुलहुमाले विकास परियोजना और चीन-मालदीव मैत्री पुल हैं। इसी अवधि में, पीपीएम के नेतृत्व वाली पिछली सरकार ने अन्य क्षेत्रीय पड़ोसियों पर चीन के निवेश को प्राथमिकता दी। मालदीव में चीनी निवेश के संबंध में हिंद महासागर में हिंद-प्रशांत भागीदारों के बीच चिंताएं उठाई गईं जो आईओआर की सुरक्षा के लिए संभावित जोखिम पैदा कर सकती हैं[28]।

2018 में सत्ता में आई नई एमडीपी सरकार ने 'भारत-प्रथम' नीति को दोहराया, और पारंपरिक मानदंडों और नियम-आधारित प्रणालियों के साथ विदेशी साझेदारी को ट्रैक पर लाने की कोशिश की।

2018 में सत्ता में आई नई एमडीपी सरकार ने 'भारत-पहले' नीति को दोहराया, और पारंपरिक मानदंडों और नियम-आधारित प्रणालियों के साथ विदेशी साझेदारी को ट्रैक पर लाने की कोशिश की। 2019 की शुरुआत से, राष्ट्रपति इब्राहिम मोहम्मद सोलिह की सरकार ने अपने पूर्ववर्ती के कार्यकाल के दौरान चीन द्वारा समर्थित अधिकांश प्रमुख निवेशों को रोक दिया। यह बदलाव, अर्थात पसंद के पसंदीदा साझेदार के रूप में भारत घरेलू राजनीतिक परिदृश्य में बदलाव के कारण शुरू हुआ था। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि विकास सहयोग के संबंध में मालदीव की विदेश नीति में कोई बड़ा बदलाव नहीं हुआ है। पिछली सरकार के दौरान भी मालदीव ने भारत के साथ घनिष्ठ सहयोग और मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखे थे। हालांकि, मालदीव में पार्टी की राजनीति ने विदेशी साझेदारी के संबंध में प्रतिस्पर्धी राजनीतिक राय और विकल्पों के लिए भी जगह बनाई है। भारत के प्रति सरकार के नए रुख ने घरेलू राजनीति में नई राय पैदा की है। इसने घरेलू राजनीतिक सवालों को जन्म दिया है, जो ज्यादातर विपक्षी पार्टी द्वारा भारत के साथ नए सिरे से जुड़ाव की वैधता के बारे में उठाए गए हैं, जिसका उद्देश्य राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य मोर्चों पर आपसी सहयोग को सुदृढ़ करना है। हालांकि, इस तरह के तनाव का इस बात से कोई लेना-देना नहीं है कि वर्तमान में और अतीत में भारत पर मालदीव की विदेश नीति को कैसे आकार दिया गया है।

मालदीव की विदेश नीति राष्ट्रीय संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता, नियमों और अधिकार-आधारित प्रणालियों के प्रति सम्मान और सबसे महत्वपूर्ण रूप से, क्षेत्रीय भागीदारों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों पर आधारित है। आजादी के बाद के वर्षों से भारत सबसे करीबी और सबसे महत्वपूर्ण विकास भागीदार रहा है। क्षेत्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के साथ-साथ क्षेत्र के विकास का समर्थन करने में भारत की महत्वपूर्ण रुचि है।

इस संदर्भ में, भारत-प्रथम नीति ने भारत को मालदीव के करीब लाया है, और यह नियम-आधारित कूटनीति और दोनों सरकारों के पारस्परिक हितों को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है। मालदीव खाद्य और बुनियादी ढांचे की सुरक्षा के लिए बाहरी समर्थन पर बहुत अधिक निर्भर करता है। इसमें भारत की बड़ी भूमिका है। मालदीव में स्थिरता के लिए बुनियादी ढांचा महत्वपूर्ण है, और भारत की हालिया परियोजनाओं से समर्थन, उदाहरण के लिए ग्रेटर माले कनेक्टिविटी परियोजना, मध्यम और दीर्घकालिक रूप से, द्वीप राष्ट्र में सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों और प्रगति का समर्थन करने में एक बड़ा बदलाव लाने जा रही है। फिर, एक बड़े महासागर राष्ट्र के रूप में, मालदीव को समुद्र द्वारा संरक्षित किया जाता है और समुद्र में जलवायु-प्रेरित परिवर्तनों द्वारा चुनौती दी जाती है। इसलिए, महासागर संसाधनों का एक प्रमुख स्रोत बन जाता है, जो समुद्री अर्थव्यवस्था और मालदीव की राष्ट्रीय सुरक्षा का समर्थन करता है [32]। जबकि जलवायु परिवर्तन मौजूदा कई चुनौतियों को बढ़ाने के लिए सबसे बड़ा उत्प्रेरक है, महासागर राष्ट्र के लिए तत्काल और संभावित सुरक्षा जोखिम पैदा करना जारी रखता है। मछली और अन्य समुद्री सहायता प्रणालियों के साथ, बाहरी समुद्री घुसपैठ द्वारा आयोजित अवैध गतिविधियां सुरक्षा जोखिम और आर्थिक नुकसान दोनों का कारण बन सकती हैं[8]. जलवायु प्रभाव इन भौतिक सुरक्षा खतरों से निपटने के लिए भी मौजूदा संसाधन-आधारित क्षमताओं को कमजोर कर सकता है।

मालदीव में स्थिरता के लिए बुनियादी ढांचा महत्वपूर्ण है, और भारत की हालिया परियोजनाओं, उदाहरण के लिए ग्रेटर माले कनेक्टिविटी परियोजना से समर्थन, द्वीप राष्ट्र में सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों और प्रगति का समर्थन करने में मध्यम और दीर्घकालिक रूप से एक बड़ा अंतर लाने जा रहा है।

समुद्री एक प्रमुख सुरक्षा क्षेत्र है जहां भारत मालदीव का समर्थन करता है और करना जारी रखता है, विशेष रूप से महासागर-आधारित या समुद्री जोखिमों से संबंधित गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों को नेविगेट करने में। उदाहरण के लिए, मालदीव में एक प्रभावी तट रक्षक सेवा, बेहतर प्रौद्योगिकी, बुनियादी ढांचा और मार्गदर्शन, नेविगेशन और सूचना प्रणाली है जो समुद्री चुनौतियों का सामना करने के लिए संबंधित एजेंसियों का समर्थन कर सकती है, जो आईओआर में अपने जलवायु सुरक्षा प्रश्नों को नेविगेट करने सहित इसकी सुरक्षा गतिविधियों का समर्थन करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

मालदीव को कई सुरक्षा खतरों से चुनौती मिली है और जलवायु परिवर्तन सबसे प्रमुख खतरा रहा है। द्वीप राष्ट्र के सामने आने वाली अन्य सभी चुनौतियों पर जलवायु परिवर्तन का अंतर्निहित प्रभाव पड़ता है। मालदीव ने अपनी सभी विकास परियोजनाओं में जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने को प्राथमिकता दी है। इन विकास और जलवायु सुरक्षा उद्देश्यों को प्राप्त करने के इसके प्रयासों ने प्रतिस्पर्धी राजनीतिक एजेंडों को भी आकर्षित किया है जो अंततः विदेशी साझेदारी के निर्माण के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रेरित हैं। सत्तारूढ़ दलों और सत्तारूढ़ सरकार के राजनीतिक हितों और नीतिगत उद्देश्यों में सुरक्षा का प्रश्न बारीकी से अंतर्निहित रहा है। जबकि मालदीव ने चीन के साथ सुदृढ़ निवेश का एक युग देखा है (हालांकि कम समय में) वर्तमान सरकार का सुरक्षा उद्देश्यों के आसपास विकास एजेंडा बनाने में एक सुदृढ़ रुख है जो क्षेत्रीय सुरक्षा नायकों के हितों का समर्थन और पूरक है। इसने जलवायु-आधारित विकास गतिविधियों और समुद्री क्षेत्र में अन्य गैर-पारंपरिक मुद्दों सहित अपनी सुरक्षा चिंताओं को नेविगेट करने में भारत के साथ संबंधों को और सुदृढ़ किया है।

संदर्भ

1. रशीद, एए, *हिंद-प्रशांत में राष्ट्रीय सुरक्षा नीति को हरा-भरा करना*। नीति फोरम, 2022.
2. *जलवायु सुरक्षा एक ऐसा क्षेत्र है जहां निचले द्वीप राष्ट्रों के लिए दांव अधिक हैं: मारिया, राजने में।* 2022.
3. यूएनएफसीसीसी, *जलवायु परिवर्तन: छोटे द्वीप विकासशील राष्ट्र।* 2005.
4. बार्नेट, जे और जे कैंपबेल, *जलवायु परिवर्तन और छोटे द्वीप राष्ट्र: शक्ति, ज्ञान और दक्षिण प्रशांत।* 2010, लंदन: अर्थस्कैन।
5. बेंजामिन, एल और ए थॉमस, *1.5 जीवित रहने के लिए? पेरिस समझौते में एओएसआईएस और दीर्घकालिक तापमान लक्ष्य।* एसएसआरएन, 2019।
6. विश्व बैंक। *मालदीव में विश्व बैंक*। 2022; से उपलब्ध है: https://www.worldbank.org/en/country/maldives/overview.
7. रशीद, एए, *संयुक्त राष्ट्र जलवायु वार्ता में छोटे द्वीपों की भूमिका: एक रचनात्मक दृष्टिकोण।* अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन, 2019। 56 (4): पी. 215-235.
8. एमएनडीएफ, *कैपस्टोन सिद्धांत।* 2019.
9. बुज़ान, बी., ओ. वेवर, और जेडी वाइल्ड, *सुरक्षा: विश्लेषण के लिए एक नया ढांचा।* 1998, बोल्डर, कोलो: लिन रिएनर पब।
10. मैकडॉनल्ड्स, एम., *पारिस्थितिक सुरक्षा: जलवायु परिवर्तन और सुरक्षा का निर्माण।* 2021, कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
11. रशीद, एए, *छोटे द्वीप विकासशील राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में जलवायु प्रतिभूतिकरण: एक व्यापक अवधारणा की ओर।* द्वीप अध्ययन जर्नल, 2022। 17 (2): पी. 107-129.
12. विश्व बैंक, *जलवायु जोखिम देश प्रोफाइल: मालदीव।* 2021.
13. विश्व बैंक, *मालदीव की अर्थव्यवस्था में मौजूदा कमजोरियों और वैश्विक चुनौतियों के बीच सुदृढ़ सुधार दर्ज।* 2022.
14. पर्यटन मंत्रालय। *मालदीव में कोविड-19 की स्थिति पर अपडेट।* 2020; से उपलब्ध है: https://www.tourism.gov.mv/ covid19.
15. अवास, *माफुशी भूमि सुधार, अवास में एक रिसॉर्ट विकास अवधारणा का पालन करने के लिए।* 2019.
16. बोज़टास, एस., *डूबते मालदीव ने द गार्डियन में समुद्र से भूमि को पुनः प्राप्त करने की योजना बनाई है।* 2022.
17. विश्व बैंक, *मालदीव विकास अद्यतन: एक डिजिटल डॉन।* 2021.
18. ओमिदी, एम., *मालदीव ने रॉयटर्स में समुद्र के नीचे कैबिनेट के साथ जलवायु एसओएस भेजा।* 2009.
19. रशीद, एआर और एन ज़कारिया *छोटे, बिखरे हुए, टिकाऊ और समृद्ध: मालदीव में जनसंख्या समेकन के लिए एक वैकल्पिक प्रतिमान।* 2017.
20. कोठारी, यू.एम.ए., *जलवायु परिवर्तन और प्रवासन के राजनीतिक प्रवचन: मालदीव में पुनर्वास नीतियां।* भौगोलिक जर्नल, 2014। 180 (2): पी. 130-140.
21. केलमैन, आई., एट अल., *क्या जलवायु परिवर्तन मालदीव में लोगों के प्रवासन निर्णयों को प्रभावित करता है?* जलवायु परिवर्तन, 2019। 153 (1): पी. 285- 299.
22. रशीद, एए, *मालदीव में पर्यटन, आर्थिक विकास और शासन: राजनीति विज्ञान और अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन के स्कूल में एक ऐतिहासिक संस्थागत मूल्यांकन।* 2013, क्वींसलैंड विश्वविद्यालय: क्वींसलैंड।
23. अहमद, *एएन आवास विकास निगम हुलहुमाले शहर को जीवंत करता है।* विश्व वित्त, 2018।
24. *दो पुलों की एक कहानी: जीसीएनएन में मालदीव में प्रभाव के लिए भारत और चीन की होड़।* 2020.
25. रशीद, एए, *विचार, मालदीव-चीन संबंध और दक्षिण एशिया में शक्ति संतुलन की गतिशीलता।* 2018, 2018. 6 (2): पृष्ठ 17.
26. रशीद, एए, *दक्षिण एशिया में हिंद-प्रशांत सुरक्षा अंतरिक्ष में मालदीव की भूमिका।* ई-इंटरनेशनल रिलेशंस, 2021।
27. कुगेलमैन, एम., मालदीव: *भारत-चीन प्रतियोगिता के लिए एक द्वीप युद्ध का मैदान।* जॉर्जटाउन जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स, 2021।
28. रशीद, एए, *भारत और चीन पर मालदीव की विदेश नीति के चालक, भारत-चीन प्रतिद्वंद्विता: दक्षिण एशिया के परिप्रेक्ष्य,* सी.आर. मोहन और सी.जे. हाओ, संपादक। 2020, दक्षिण एशियाई अध्ययन संस्थान: सिंगापुर।
29. ब्रूस्टर, डी., *मालदीव: भारत पहले या भारत बाहर?* दुभाषिया, 2021।
30. द टाइम्स ऑफ इंडिया, *मालदीव के राष्ट्रपति इब्राहिम मोहम्मद सोलिह ने नई दिल्ली में प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात की, द टाइम्स ऑफ इंडिया में।* 2022.
31. टाइम्स ऑफ इंडिया, *भारत-मालदीव ने ग्रेटर माले कनेक्टिविटी परियोजनाओं का शुभारंभ किया; भारत ने टाइम्स ऑफ इंडिया में $ 100 मिलियन लाइन ऑफ क्रेडिट का विस्तार किया।* 2022.
32. विश्व बैंक। *मालदीव वेंचर्स समुद्री अर्थव्यवस्थामें।* 2019; से उपलब्ध है: https://www.worldbank.org/en/news/feature/2019/07/11/maldives-ventures-into-the-tlue-economy.
33. ब्रूस्टर, डी., *द इंटरप्रेटर।* भारत ने 2022 में दक्षिणी मालदीव में अपनी भूमिका सुदृढ़ की।

दक्षिणी पश्चिमी हिंद महासागर में द्वीप राष्ट्र सेशेल्स, मेडागास्कर और मॉरीशस

टिप्पणियां

अनूप मुद्गल

प्रारंभ में, मैं भारतीय वैश्विक परिषद (आईसीडब्ल्यूए) को धन्यवाद देना चाहूंगा कि उन्होंने हिंद महासागर क्षेत्र में उभरती सुरक्षा स्थिति के एक महत्वपूर्ण पहलू पर इस सामयिक सम्मेलन का आयोजन किया, जो भारत की अपनी सुरक्षा और विकास के केंद्र में भी है। मैं आईसीडब्ल्यूए की महानिदेशक राजदूत विजय ठाकुर सिंह के एक उत्कृष्ट प्रारंभिक वक्तव्य, डॉ. संजया बारू के एक बहुत ही व्यापक मुख्य नोट, राजदूत अशोक कंठ के एक प्रभावशाली परिचय और श्रीलंका और मालदीव पर पहले सत्र में विशेषज्ञ पैनल के बहुमूल्य बयानों को भी मान्यता देना चाहूंगा। इन प्रतिष्ठित वक्ताओं ने पहले ही हिंद महासागर और बड़े हिंद-प्रशांत क्षेत्र में उभरती सुरक्षा स्थिति से संबंधित पृष्ठभूमि, वर्तमान परिदृश्यों और भविष्य के रोड मैप के साथ-साथ इस पहेली में द्वीप राष्ट्रों के महत्वपूर्ण स्थान को समाहित करते हुए दिन के विषय के लिए एक असाधारण आधार तैयार किया है।

हिंद महासागर न केवल व्यापार, निवेश, सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए बल्कि संचार के आवश्यक समुद्री मार्गों, विशेष रूप से चोक पॉइंट्स पर नियंत्रण के लिए समय-समय पर संघर्षों के लिए भी वैश्विक संबंधों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यह तटीय राष्ट्रों द्वारा किया गया था, लेकिन अक्सर अनिवासी शक्तियों द्वारा इन चैनलों को उनकी आवश्यक आपूर्ति के लिए सुरक्षित करने के लिए किया गया था।

भारत ऐतिहासिक रूप से प्राचीन काल से समकालीन काल तक इस वैश्विक सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक-सुरक्षा विमर्श के केंद्र में रहा है, जो पश्चिम में लाल सागर और भूमध्य सागर के माध्यम से यूरोप के साथ और बंगाल की खाड़ी और मलक्का जलडमरूमध्य के माध्यम से पूर्व और सुदूर पूर्व से जुड़ता है। भारतीय उपमहाद्वीप का एक लंबा और समृद्ध समुद्री इतिहास भी है, जिसमें इसके नाविकों ने मशीनीकरण के आगमन से बहुत पहले अपनी नौकाओं को शक्ति देने के लिए मानसून को तैनात करने की कला में महारत हासिल की थी। इन नौकाओं ने माल और विचारों दोनों को ले लिया, जिससे भारतीय संस्कृति और प्रवासी भारतीयों का एक क्षेत्रव्यापी पदचिह्न छूट गया। लंबी भारतीय तटरेखा प्राचीन काल से ही काफी अच्छी तरह से विकसित बंदरगाहों, जहाज निर्माण और मरम्मत सुविधाओं और संबंधित आपूर्ति श्रृंखलाओं से युक्त थी। इतिहास कलिंग, चोल, पांड्य, पल्लव और मराठा राष्ट्रों की समुद्री विशेषज्ञता के संदर्भों से भरा हुआ है।

हिंद महासागर न केवल व्यापार, निवेश, सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए बल्कि संचार के आवश्यक समुद्री मार्गों, विशेष रूप से चोक पॉइंट्स पर नियंत्रण के लिए समय-समय पर संघर्षों के लिए भी वैश्विक संबंधों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

भारत हिंद महासागर क्षेत्र में सभी उतार-चढ़ावों का करीबी गवाह रहा है, क्षेत्र के विकास और समृद्धि के लिए शांति और सुरक्षा के मूल्य को सीखा और सराहना करता है। शांति समृद्धि और खुशी लाती है जबकि हिंसक संघर्ष हमेशा दुख देते हैं। इस अनुभव ने भारत के दर्शन, नीति और व्यवहार को निर्देशित किया, जिसमें इसके बाहरी संबंध भी शामिल थे, जिसे "वसुधैव कुटुंबकम" की प्राचीन अवधारणा में अभिव्यक्त किया गया था जो दुनिया को एक परिवार के रूप में दर्शाता है।

समय के साथ, स्थिति बदल रही है, लेकिन शांति और सहयोग के माध्यम से सामाजिक प्रगति के लिए भारत की इच्छा दृढ़ रही है। वैश्विक भू-राजनीतिक स्थिति एक बार फिर बदलाव की मांग कर रही है और यह क्षेत्र में हम सभी को सीधे प्रभावित करेगी। हमें अस्थिर अल्पकालिक विकल्पों के बिना अपने दीर्घकालिक हितों की रक्षा के लिए कठिन विकल्प बनाने की आवश्यकता है।

पूर्व वक्ताओं ने न केवल भारत सहित बल्कि उससे परे के क्षेत्र के लिए आर्थिक विकास और समृद्धि के लिए हिंद महासागर के महत्व के साथ-साथ संघर्ष की संभावना के साथ बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण सुरक्षा और स्थिरता के लिए उभरती चुनौतियों के बारे में बहुत विस्तार से बताया है। हम समुद्र के स्वास्थ्य के कारण बहुत अधिक गंभीर जोखिमों का सामना कर रहे हैं। प्रदूषण, अम्लीकरण, जैव विविधता का नुकसान और वार्मिंग दूसरों के बीच कृषि, जलवायु स्थिरता और रोगज़नक़ व्यवहार को बाधित करके सामान्य जीवन के अस्तित्व को चुनौती दे सकते हैं।

हिंद महासागर क्षेत्र की शांति, सुरक्षा और स्थिरता सर्वोपरि है और किसी भी व्यवधान, मानव केंद्रित और प्राकृतिक दोनों को ज्ञान, परिपक्वता और प्रतिबद्धता द्वारा संचालित सहयोग के माध्यम से संबोधित किया जाना चाहिए। पहले वक्ताओं ने अनिवासी नायकों द्वारा प्रतिस्पर्धा के जोखिमों पर प्रकाश डाला है। अनिवासी शक्तियां ट्रिगर हो सकती हैं लेकिन किसी भी संघर्ष के परिणाम अनिवार्य रूप से क्षेत्र द्वारा वहन किए जाएंगे।

द्वीप राष्ट्रों के लिए समुद्र का बहुत अधिक महत्व, विशेष रूप से छोटे द्वीप राष्ट्र आज के विषय का सार बताते हैं। क्षेत्र, जनसंख्या और संसाधनों और भौगोलिक अलगाव के संदर्भ में उनके छोटे आकार को देखते हुए, जबकि समुद्र पर उनकी निर्भरता बाकी की तुलना में बहुत अधिक महत्वपूर्ण है, इन रिक्त स्थानों को प्रबंधित करने की उनकी क्षमता काफी सीमित लगती है। इस सम्मोहक स्थिति का एक सरल सांकेतिक प्रदर्शन उनके ईईजेड के आकार के संबंध में उनकी भूमि आधारित क्षमता के अनुपात से उजागर किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, भारत का सकल घरेलू उत्पाद लगभग 1.1 मिलियन अमरीकी डालर है और इसके ईईजेड के प्रति वर्ग किमी में 430 व्यक्तियों की आबादी है। मेडागास्कर के लिए यह अनुपात यूएसडी 13000 और 23 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी ईईजेड़ है। मॉरीशस के मामले में यह घटकर 6000 डॉलर और 0.56 व्यक्ति रह गया और सेशेल्स के लिए यह घटकर केवल 1000 डॉलर और 0.07 व्यक्ति प्रति

वर्ग किलोमीटर रह गया (ये गणना विशुद्ध रूप से सांकेतिक हैं और उदाहरण के उद्देश्य के लिए हैं और इन्हें आधिकारिक नहीं माना जाना चाहिए)।

द्वीप राष्ट्र खुद को 'बड़े महासागर राष्ट्र' के रूप में सही कहते हैं और वे मत्स्यन, पर्यटन जैसे अपने समुद्री संसाधनों पर बहुत अधिक निर्भर करते हैं, वे उच्च शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, शिपिंग, हवाई सेवाओं, बैंकिंग और वित्त के लिए केंद्रों के रूप में विकसित करने का भी लक्ष्य रखते हैं। ये सभी क्षेत्र सीधे सुरक्षा, सुरक्षा और स्वस्थ महासागरों पर निर्भर हैं।

> हिंद महासागर क्षेत्र की शांति, सुरक्षा और स्थिरता सर्वोपरि है और किसी भी व्यवधान, मानव केंद्रित और प्राकृतिक दोनों को ज्ञान, परिपक्वता और प्रतिबद्धता द्वारा संचालित सहयोग के माध्यम से संबोधित किया जाना चाहिए।

महासागरों की सुरक्षा और स्वास्थ्य का प्रबंधन पूंजी और कौशल दोनों के लिए एक बहुत महंगा उद्यम है, जिसे छोटे द्वीप राष्ट्र क्षेत्रीय और वैश्विक सहयोग के बिना वहन करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। उन्हें अच्छे अर्थपूर्ण और सक्षम भागीदारों की आवश्यकता है जो इन क्षमता अंतरालों को दूर करने में उनकी मदद कर सकते हैं, लेकिन नीति विकल्पों की उनकी स्वतंत्रता को अनावश्यक रूप से कमजोर करने की मांग किए बिना।

भारत हमेशा से इस बात को लेकर सचेत रहा है कि क्षेत्रीय शांति और स्थिरता सभी और मुख्य रूप से निवासी राष्ट्रों की साझा जिम्मेदारी होनी चाहिए क्योंकि वे किसी भी व्यवधान से सबसे अधिक प्रभावित होंगे। अनिवासी हितधारकों के हितों को पहचानने की आवश्यकता है और अधिक शांति सुनिश्चित करने और बड़ी चुनौतियों को कम करने के लिए सहयोग के सभी संभावित चैनलों का पता लगाया जाना चाहिए। यह क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास के लिए समुद्री स्थानों के प्रबंधन के लिए भारतीय दृष्टि के मूल में है (सागर)। मॉरीशस में पूर्व भारतीय उच्चायुक्त के रूप में सागर के शुभारंभ के साथ जुड़ने का मुझे सौभाग्य मिला, जहां मार्च, 2015 में माननीय प्रधानमंत्री मोदी द्वारा इस दृष्टिकोण की घोषणा की गई थी।

मैं डॉ. बारू से पूरी तरह सहमत हूं कि सागर अर्थव्यवस्था केंद्रित है और यह एक जानबूझकर किया गया। सागर की आत्मा समावेश और साझा लक्ष्यों पर जोर देने में निहित है। यह एक तिपाई मंच है जहां विकास का प्राथमिक लक्ष्य पूरी तरह से समुद्र के स्वास्थ्य के साथ समन्वय में पूरा किया जाना चाहिए, जिसमें विकास और स्थिरता दोनों के लिए एक आवश्यक सहायक के रूप में सुरक्षा है।

सागर का दर्शन सुरक्षा और विकास साझेदारी दोनों के लिए क्षेत्रीय सहयोग के लिए भारत के संपूर्ण ढांचे द्वारा समर्थित है। समुद्री सुरक्षा सहयोग भागीदार राष्ट्रों द्वारा अनुरोध के अनुसार क्षमता निर्माण, क्षमता वृद्धि और प्रत्यक्ष समर्थन पर केंद्रित है। इसमें प्रशिक्षण, हार्ड वेयर की आपूर्ति, प्रौद्योगिकी सहायता और ईईजेड निगरानी, आपदा राहत और बचाव, एमडीए सहायता आदि के लिए संयुक्त अभियान जैसे सभी चरण शामिल हैं। दूसरी ओर विकास साझेदारी विकासात्मक क्षमता निर्माण (प्रशिक्षण, कौशल, बुनियादी ढांचे), वित्त (अनुदान, रियायती क्रेडिट), निवेश संवर्धन और बाजार पहुंच के माध्यम से समर्थन के लिए एक व्यापक ढांचा प्रदान करती है। ये कार्यान्वयन उपकरण सागर के सिद्धांतों के अनुरूप हैं।

भारत का पूरे क्षेत्र के साथ उत्कृष्ट संबंधों और साझेदारियों का एक लंबा इतिहास रहा है, विशेष रूप से आज भाग लेने वाले भागीदारों अर्थात् सेशेल्स, मॉरीशस और मेडागास्कर। मैंने क्षेत्रीय विकास, समृद्धि और शांति के लिए भारतीय दृष्टिकोण और दृष्टिकोण को संक्षेप में समझाया है और अब इन देशों के विशेषज्ञ प्रतिनिधियों को सुनने के लिए उत्सुक हूं कि वे इस समय की जांची-परखी साझेदारी से उनके आकलन और अपेक्षाओं को सुनेंगे।

महासागरों की सुरक्षा और स्वास्थ्य का प्रबंधन पूंजी और कौशल दोनों के लिए एक बहुत महंगा उद्यम है, जिसे छोटे द्वीप राष्ट्र क्षेत्रीय और वैश्विक सहयोग के बिना वहन करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। उन्हें अच्छे और सक्षम भागीदारों की आवश्यकता है जो इन क्षमता अंतरालों को दूर करने में उनकी मदद कर सकते हैं, लेकिन नीति विकल्पों की उनकी स्वतंत्रता को अनावश्यक रूप से कमजोर करने की मांग किए बिना।

भारत और पश्चिमी हिंद महासागर द्वीप राष्ट्र: कुछ अवलोकन

अदलुरी सुब्रमण्यम राजू

भारत में 7,516.6 किलोमीटर की तटीय रेखा, 2.1 मिलियन वर्ग किलोमीटर विशेष आर्थिक क्षेत्र, 5,30,000 वर्ग किलोमीटर महाद्वीपीय शेल्फ और हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) में 1000 से अधिक द्वीप हैं। यह आईओआर में शांति और स्थिरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गैर-आक्रामकता की इसकी नीति, इसके सांस्कृतिक और दार्शनिक गुण और जातीय और धार्मिक संबंधों के माध्यम से अपने पड़ोसी तटीय राष्ट्रों के साथ इसके संबंध ने इस क्षेत्र में तटीय राष्ट्रों (पश्चिमी हिंद महासागर द्वीप राष्ट्रों सहित) के साथ अपने संबंधों को सुदृढ़ किया। भारत को क्षेत्र के अधिकांश देशों द्वारा एक सुरक्षा प्रदाता के रूप में देखा जाता है और समुद्री आयाम के माध्यम से भारत की विश्वसनीयता बढ़ी है। दूसरे शब्दों में, दुनिया में भारत की प्रोफ़ाइल समुद्री आयाम के माध्यम से बढ़ी है। उदाहरण के लिए, भारत ने जुलाई 2014 में बांग्लादेश के साथ समुद्री विवाद के संदर्भ में स्थायी मध्यस्थता अदालत (पीसीए) के निर्णय को स्वीकार कर लिया[58]।

पश्चिमी हिंद महासागर क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति को विश्व व्यापार की जीवन रेखा माना जाता है। यूरोप, एशिया, मध्य पूर्व और अफ्रीका से अधिकांश व्यापार इस क्षेत्र के माध्यम से जाता है। द्वीप राष्ट्रों में क्षेत्रीय क्षेत्र की तुलना में बड़ा महासागर क्षेत्र है। हालांकि, वे गरीबी से पीड़ित हैं। उन्हें कई खतरों का सामना करना पड़ता है। इनमें से कई राष्ट्रों के पास अपने समुद्री डोमेन की निगरानी और शासन करने की क्षमता नहीं है, क्योंकि उनके पास समुद्री निगरानी और प्रवर्तन क्षमताओं की कमी है।

> समुद्री आयाम के माध्यम से भारत की विश्वसनीयता बढ़ी है।

भारत के पश्चिमी हिंद महासागर द्वीप राष्ट्रों (मॉरीशस, मेडागास्कर, सेशेल्स, कोमोरोस, रीयूनियन और मायोटे) के साथ सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंध हैं और ये संबंध भारत को इस क्षेत्र में भू-राजनीतिक लाभ प्रदान करते हैं। भारतीय प्रवासियों की उपस्थिति भी इस क्षेत्र के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने के लिए एक कड़ी के रूप में कार्य कर रही है। भारत ने विभिन्न कार्यों को करके इस क्षेत्र में अपनी रुचि का प्रदर्शन किया है जिसमें मानवीय सहायता, आपदा राहत, खोज और बचाव (एसएआर), आयुध निपटान, डाइविंग सहायता, बचाव कार्य, हाइड्रोग्राफिक सर्वेक्षण आदि शामिल हैं। क्षेत्र में इसने कई कदम उठाए हैं: मॉरीशस को एक तटरक्षक बल संचालित करने में मदद करना, मोजाम्बिक और मेडागास्कर की अपने समुद्री डोमेन की निगरानी करने की क्षमता में सुधार करना। यह समुद्री खतरों को संबोधित करने में

शामिल रहा है, जो द्वीप राष्ट्रों के लिए एक प्रमुख चिंता का विषय है। यह मॉरीशस, मेडागास्कर और सेशेल्स को अपनी तटीय निगरानी और समुद्री डकैती विरोधी क्षमताओं को विकसित करने में मदद कर रहा है। दूसरी ओर, यह क्षेत्र सामरिक, आर्थिक रूप से भारत के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। भारत ने बाब-अल-मंडेब और अदन की खाड़ी से संचार के समुद्री लेन (एसएलओसी) में फैले इन द्वीपों के सामरिक स्थान के महत्व को पहचाना है, जो तेल और हाइड्रोकार्बन मार्ग हैं। यह अपनी ऊर्जा सुरक्षा के लिए इस क्षेत्र पर निर्भर है। दोनों संस्थाएं एक-दूसरे के महत्व को महसूस करती हैं। यह शोध-पत्र इस क्षेत्र में भारत के सामरिक हितों और द्वीप राष्ट्रों और भारत के बीच सहयोग पर केंद्रित है।

भारत को अपनी उपस्थिति का विस्तार करने के लिए समुद्री क्षेत्र में एक फायदा है क्योंकि अधिकांश तटीय राष्ट्र नई दिल्ली को एक सुरक्षा प्रदाता मानते हैं और अंतर्राष्ट्रीय कानून का सम्मान करने के मामले में इसकी विश्वसनीयता को पहचानते हैं।

भारत को अपनी उपस्थिति का विस्तार करने के लिए समुद्री क्षेत्र में एक फायदा है क्योंकि अधिकांश तटीय राष्ट्र नई दिल्ली को एक सुरक्षा प्रदाता मानते हैं और अंतर्राष्ट्रीय कानून का सम्मान करने के मामले में इसकी विश्वसनीयता को पहचानते हैं। द्वीप राष्ट्रों के साथ अपने संबंधों को देखते हुए और हिंद महासागर आयोग (आईओसी) के पर्यवेक्षक के रूप में, भारत हिंद महासागर के द्वीप-राष्ट्रों को उनके समुद्री पर्यावरण की रक्षा करने और उनके समुद्री संसाधनों का प्रबंधन करने में मदद करने पर ध्यान केंद्रित कर सकता है।

चूंकि पश्चिमी हिंद महासागर के देश द्वीप-राष्ट्र हैं, इसलिए उनके विशेष आर्थिक क्षेत्रों (ईईजेड) की तुलना में उनके भूमि क्षेत्र बहुत छोटे हैं। इस क्षेत्र में विभिन्न सुरक्षा चुनौतियां हैं: समुद्री डकैती, समुद्र में संगठित अपराध, अवैध मछली पकड़ना, नशीले पदार्थों की तस्करी और जलवायु परिवर्तन का प्रभाव।

मॉरीशस को अक्सर मिनी इंडिया कहा जाता है क्योंकि भारत के साथ इसके सुदृढ़ आर्थिक और प्रवासी संबंध हैं। मॉरीशस के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार हमेशा एक भारतीय अधिकारी होते हैं[59]। भारत ने मॉरीशस के तटीय जल में गश्त की है, गश्ती नौकाओं को उपहार में दिया है और मॉरीशस की ओर से हाइड्रोग्राफिक सर्वेक्षण किया है। इसने 2013 में मॉरीशस को अपना पहला स्वदेशी निर्मित युद्धपोत निर्यात किया है[60]। यह सेशेल्स को निगरानी विमानों की आपूर्ति के साथ समुद्री गश्त और हाइड्रोग्राफिक अनुसंधान के साथ सहायता करता है। इसने सेशेल्स के राष्ट्रपति और भारत के प्रधानमंत्री की उपस्थिति में एक आधिकारिक समारोह में सेशेल्स को एक तेज गश्ती नाव पीएस जोरास्टर सौंपी है। इसके अलावा, भारत ने भारत द्वारा वित्त पोषित मजिस्ट्रेट कोर्ट और रोमेनविले पर एक मेगावाट सौर ऊर्जा संयंत्र का निर्माण पूरा कर लिया है,

जिससे लगभग 400 घरों के लिए बिजली का उत्पादन होने की आशा है[61]। मेडागास्कर में 2007 से भारत के पास कथित तौर पर एक श्रवण पोस्ट है, जिसका उद्देश्य मुंबई और कोच्चि में कमांड को खुफिया जानकारी वापस भेजना है[62]। मेडागास्कर ने भारत के साथ रक्षा संबंधों को गहरा करने की इच्छा व्यक्त की है क्योंकि यह "एक सुरक्षा छतरी का प्रतिनिधित्व करता है जो क्षेत्र में शांति और समृद्धि बनाए रखता है[63]। भारत 2008 से इस क्षेत्र में समुद्री डकैती विरोधी गश्त कर रहा है। इस क्षेत्र में समुद्री डकैती का मुकाबला करने के लिए तीन कार्य बल[64] हैं। भारत ने इस क्षेत्र में समुद्री डकैती को नियंत्रित करने के लिए इन कार्यबलों के साथ समन्वय किया है। यह क्षेत्र के समुद्री डकैती से प्रभावित जल में खाद्य आपूर्ति और राहत सामग्री ले जाने वाली अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों के जहाजों की सुरक्षा करता है[65]।

भारत समुद्री डोमेन जागरूकता में सुधार के लिए मेडागास्कर में क्षेत्रीय समुद्री सूचना संलयन केंद्र (आरएमआईएफसी) और अबू धाबी में होर्मुज जलडमरूमध्य में यूरोपीय समुद्री जागरूकता में नौसैनिक संपर्क अधिकारियों को तैनात करने की योजना बना रहा है[66]।

भारत अपने सूचना संलयन केंद्र (आईएफसी-आईओआर) को आरएमआईएफसी और आईओसी और समुद्री सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए यूरोपीय संघ द्वारा वित्त-पोषित क्षेत्रीय कार्यक्रम के तत्वावधान में क्षेत्रीय समन्वय और परिचालन केंद्र नामक अन्य स्टेशन के साथ जोड़ सकता है। यह अपनी तकनीकी विशेषज्ञता के साथ समुद्री डेटा के क्षेत्रीय केंद्र के रूप में डेटा मिलान और प्रबंधन के साथ इन स्टेशनों की सहायता कर सकता है क्योंकि इसमें समुद्री खुफिया के संग्रह की क्षमता है।

आईओआर में चीन की मौजूदगी को लेकर भारत की चिंता है। चीन का मेडागास्कर के साथ रक्षा सहयोग है और कथित तौर पर मेडागास्कर में एक सैन्य अड्डा बनाने का इरादा है। यह मेडागास्कर को वित्तीय सहायता और सैन्य उपकरण जैसे संचार आइटम और सैन्य वर्दी प्रदान करता है। इसने मेडागास्कर को दो छोटी दूरी के गश्ती जहाजों को दान किया। मेडागास्कर हिंद महासागर में एक प्रमुख द्वीप है, जो मॉरीशस और सेशेल्स के करीब है, जो इस क्षेत्र में भारत के करीबी सैन्य साझेदार हैं।

चीन के विदेश मंत्री वांग यी, जिन्होंने 9 जनवरी 2022 को श्रीलंका का दौरा किया, ने "आम सहमति और तालमेल बनाने और सामान्य विकास को बढ़ावा देने के लिए" हिंद महासागर द्वीप देशों[67] के विकास के लिए हिंद महासागर परिषद की पहल की घोषणा की[68]। चीन ने 21 नवंबर 2022 को कुनमिंग में पहला "चीन-हिंद महासागर क्षेत्र मंच" बुलाया था, जहां भारत को छोड़कर हिंद महासागर क्षेत्र के 19 देशों[69] के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। चीन ने "आईओआर में चीन और देशों के बीच एक समुद्री आपदा रोकथाम और शमन सहयोग तंत्र स्थापित करने का प्रस्ताव दिया और जरूरतमंद देशों को आवश्यक वित्तीय, सामग्री और तकनीकी सहायता प्रदान करने का प्रस्ताव दिया[70]। इसके अलावा, चीन ने समुद्री अर्थव्यवस्थाथिंक टैंक नेटवर्क स्थापित करने का प्रस्ताव दिया। भागीदार देशों ने नीति समन्वय को सुदृढ़ करने, विकास सहयोग

को गहरा करने, झटके और आपदाओं के लिए लचीलापन बढ़ाने और मत्स्य पालन, नवीकरणीय ऊर्जा, पर्यटन और शिपिंग जैसे समुद्री संसाधनों के उपयोग के माध्यम से आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए प्रासंगिक देशों की क्षमता को बढ़ाने के लिए चीन के साथ सहयोग करने पर सहमति व्यक्त की[71]। चीनी सामान्य रूप से हिंद महासागर और विशेष रूप से हिंद महासागर के पश्चिमी हिस्से में घुस रहे हैं, जो भारत के लिए चिंता का विषय है।

आईपीओआई पहल द्वीप राष्ट्रों के लिए महत्वपूर्ण साबित हो सकती है, क्योंकि वे भू-राजनीति की तुलना में भू-अर्थशास्त्र पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं।

भारतीय प्रधानमंत्री ने हिंद-प्रशांत महासागर पहल (आईपीओआई) की शुरुआत की, जो सात स्तंभों पर केंद्रित है: समुद्री पारिस्थितिकी, सुरक्षा, समुद्री संसाधन, क्षमता निर्माण, आपदा जोखिम में कमी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी और व्यापार और कनेक्टिविटी। आईपीओआई पहल द्वीप राष्ट्रों के लिए महत्वपूर्ण साबित हो सकती है, क्योंकि वे भू-राजनीति की तुलना में भू-अर्थशास्त्र पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। भारत विशेष रूप से निम्नलिखित क्षेत्रों में समुद्री अर्थव्यवस्था विकसित करने में हिंद महासागर के पश्चिमी देशों के साथ काम कर सकता है:

1. मत्स्य पालन क्षेत्र का अन्य क्षेत्रों की तुलना में लंबा इतिहास रहा है। मछली पोषण, रोजगार और निर्यात राजस्व का एक प्रमुख स्रोत है और तटीय राष्ट्रों के आर्थिक अस्तित्व के लिए आवश्यक है। ज्यादातर महिलाएं इस क्षेत्र में शामिल और सशक्त हैं। अवैध, असूचित, अनियमित मछली पकड़ना इन द्वीप राष्ट्रों के साथ-साथ भारत के लिए भी एक प्रमुख चिंता का विषय है। खराब मत्स्य प्रबंधन को संबोधित करने की आवश्यकता है, अन्यथा क्षेत्र में गरीब गरीब हो जाते हैं।

2. पर्यटन एक और क्षेत्र है, जो न केवल राजस्व उत्पन्न करता है, बल्कि स्थानीय संस्कृति, परंपराओं और विरासत की रक्षा और सम्मान भी करता है। यह विदेशी मुद्रा का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन जाता है और कई देशों के सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय कल्याण से जुड़ा हुआ है। पर्यटन कई तटीय राष्ट्रों के आर्थिक अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है और समुद्री अर्थव्यवस्था के विकास में एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यह किसी भी देश के आर्थिक अस्तित्व का एक महत्वपूर्ण पहलू है, विशेष रूप से तटीय राष्ट्र।

3. समुद्री प्रजातियां कॉस्मेटिक उत्पाद और दर्द निवारक और यहां तक कि कैंसर, अस्थमा, गठिया आदि के लिए उपचार प्रदान करती हैं। 2011 में, समुद्री प्रजातियों से फार्मास्यूटिकल्स की मांग का

मूल्य यूएस $ 4.8 बिलियन [72] थी और निकट भविष्य में इसके तीन गुना होने का अनुमान था। फार्मास्यूटिकल्स उन क्षेत्रों में से एक है, जिन पर विशेष रूप से कोविड के बाद ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। संबंधित जल क्षेत्र में खनिजों की खोज में सहयोग पर ध्यान दिया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, चीन मेडागास्कर के साथ खनिज भंडार का पता लगाने के लिए एक परियोजना में शामिल है।

4. टिकाऊ समुद्री ऊर्जा सामाजिक और आर्थिक विकास के साथ-साथ जलवायु शमन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। कई तटीय राष्ट्रों में समुद्र आधारित ऊर्जा की महत्वपूर्ण मात्रा का उत्पादन करने की क्षमता है, लेकिन भौतिक बाधाओं या निवेश की कमी के कारण सीमित हैं। महासागर आधारित ऊर्जा ऊर्जा के सभी स्रोतों को संदर्भित करती है: लहर, ज्वारीय, थर्मल रूपांतरण, लवणता ढाल और अपतटीय पवन ऊर्जा। सैकड़ों अलग-थलग समुदाय हैं जो बिखरे हुए हैं और नीली ऊर्जा वास्तव में इन अलग-थलग समुदायों को शक्ति प्रदान करने में मदद कर सकती है।

पश्चिमी हिंद महासागर द्वीप देशों के साथ सुदृढ़ संबंध बनाने के अलावा, फ्रांस (पश्चिमी हिंद महासागर में फ्रांसीसी उपस्थिति), अमेरिका (बहरीन, जिबूती और डिएगो गार्सिया में अमेरिकी उपस्थिति) और जापान के साथ भारत के घनिष्ठ और सामरिक संबंधों का लाभ क्षेत्र के साथ भारत की भागीदारी और जुड़ाव को बढ़ाने के लिए उठाया जा सकता है।

5. ब्लू क्लस्टर विभिन्न क्षेत्रों को अपनी लागत कम करने और राजस्व बढ़ाने में मदद करेंगे। क्लस्टर विभिन्न क्षेत्रों के विकास को बढ़ावा देने के लिए उद्योग और सरकारी हितधारकों को एक साथ लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। क्लस्टर सभी के लिए एक केंद्र बिंदु है: कंपनियां, संस्थान, अनुसंधान केंद्र जो समुद्री गतिविधियों की प्रोग्रामिंग सहित उत्पादों के परिवर्तन में विभिन्न स्तरों पर कार्य करते हैं।

6. समुद्री स्थानिक योजना (एमएसपी) एक सीमित क्षेत्र में अधिकतम लाभ प्राप्त करने में मदद करती है। दूसरे शब्दों में, एक एकल काल्पनिक स्थान को कई उद्देश्यों के लिए डिज़ाइन किया जा सकता है। एमएसपी समुद्र और महासागरों के उपयोग का प्रबंधन करने के लिए एक उपकरण है। यह एक गतिशील प्रक्रिया है जो दक्षता और प्रभावकारिता चिंताओं और सिद्धांतों के साथ मनुष्यों द्वारा समुद्री क्षेत्रों के उपयोग को संबोधित करती है।

भारत ने आईओआर में सुरक्षा प्रदाता के रूप में अपनी भूमिका का प्रदर्शन किया है। अब तक, सुरक्षा क्षेत्र में, इसने पश्चिमी हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री डकैती विरोधी गतिविधियों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया है। इसे पारंपरिक और गैर-पारंपरिक सुरक्षा के साथ-साथ क्षेत्र में समृद्धि और विकास पर ध्यान केंद्रित करने के लिए व्यापक परिप्रेक्ष्य में काम करने की आवश्यकता है। पश्चिमी हिंद महासागर विशेष रूप से भारत-प्रशांत अवधारणा और भारत के सागर दृष्टिकोण के कारण सामरिक रूप से महत्वपूर्ण हो गया है। भारत और तटीय राष्ट्र समुद्री अर्थव्यवस्था में सहयोग कर सकते हैं, क्योंकि उनका विकास तटीय अर्थव्यवस्था से जुड़ा हुआ है। पश्चिमी हिंद महासागर द्वीपीय देशों के साथ सुदृढ़ संबंध स्थापित करने के अलावा, फ्रांस (पश्चिमी हिंद महासागर में फ्रांसीसी उपस्थिति), अमेरिका (बहरीन, जिबूती और डिएगो गार्सिया में अमेरिकी उपस्थिति) और जापान के साथ भारत के घनिष्ठ और सामरिक संबंधों का लाभ इस क्षेत्र के साथ भारत की भागीदारी और जुड़ाव को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है, जिसमें इसके हितों और शांति के लिए हानिकारक गतिविधियों की निगरानी और मुकाबला करना शामिल है। हिंद महासागर क्षेत्र की सुरक्षा और स्थिरता।

मॉरीशस और हिंद महासागर

प्रिया बहादुर

यह शोध-पत्र हिंद महासागर पर मॉरीशस के परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण करने का एक विनम्र प्रयास है। क्या मॉरीशस की हिंद महासागर के संबंध में कोई विशिष्ट नीति है या पिछले कुछ वर्षों में इस क्षेत्र को देखने के तरीके में बदलाव आया है? हाल तक, चागोस द्वीपसमूह पर संप्रभुता के दावों के साथ हिंद महासागर के सुरक्षा पहलू पर बहुत ध्यान दिया गया है, वाकाशियो घटना और श्रीलंका के क्षेत्रीय जल में कार्गो जहाज, एमवी एक्स-प्रेस पर्ल पर आग लग गई है।

क्या मॉरीशस की स्वतंत्रता के बाद उसकी निर्भरता और क्षेत्रीय जल से संबंधित कोई नीति थी? चागोस द्वीपसमूह पर मॉरीशस की संप्रभुता पर मॉरीशस के दावे के संबंध में राजनयिक चैनलों के साथ-साथ कानूनी साधनों के माध्यम से कई लड़ाइयां, अपने क्षेत्रीय जल को परिभाषित करने और सुरक्षित करने की इच्छा को स्पष्ट करती हैं। समुद्री डकैती और अवैध, असूचित और अनियमित जैसे गैर-पारंपरिक सुरक्षा खतरों से निपटने के लिए अन्य हिंद महासागरीय राष्ट्रों और शक्तियों के सहयोग से इसकी कार्रवाई इसलिए है क्योंकि मॉरीशस एक छोटा द्वीप राष्ट्र है जिसके निपटान में सीमित संसाधन हैं और हिंद महासागर से जुड़े कई मुद्दे हैं, जो लगभग 70.56 मिलियन किमी 2 को कवर करता है। इसके अनन्य आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) के साथ-साथ हिंद महासागर क्षेत्र से संबंधित कोई वास्तविक दीर्घकालिक योजना नहीं है। पूर्व राजनयिक विजय माखन ने अपने एक पत्र (माखन, 2018) में उल्लेख किया है कि मॉरीशस के पास स्वतंत्रता के बाद के युग में वास्तविक विदेश नीति का खाका नहीं था, लेकिन भारत, चीन और जापान जैसी शक्तियों की मदद से अपनी अर्थव्यवस्था में विविधता लाने में कामयाब रहा। उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि द्वीप का आर्थिक हित अंतर्राष्ट्रीय नायकों के साथ मॉरीशस की बातचीत का मार्गदर्शन कैसे कर रहा है। मॉरीशस की भौगोलिक विशिष्टताओं के साथ-साथ कई क्षेत्रीय और गैर-क्षेत्रीय शक्तियों के साथ इसके मैत्रीपूर्ण संबंध इसे हिंद महासागर का अपेक्षाकृत अच्छी तरह से अनुशासित नायक बनाते हैं।(आईयूयू) मछली पकड़ना कार्य योजना को उजागर करता है। हालांकि, हिंद महासागर से संबंधित मॉरीशस की कुछ कार्रवाइयां सरकार से निकलने वाली किसी चीज के बजाय क्षेत्र की अन्य शक्तियों के कार्यों के प्रत्युत्तर में प्रतीत होती हैं।

इतिहास

समुद्री सुरक्षा से संबंधित मुद्दों पर मॉरीशस के रुख को बेहतर ढंग से समझने के लिए मॉरीशस के इतिहास को उजागर करना महत्वपूर्ण है। दक्षिण-पश्चिमी हिंद महासागर में पाए जाने वाले मॉरीशस द्वीप का उपयोग डचों द्वारा 17वीं शताब्दी के दौरान ईस्ट इंडीज के रास्ते में कॉल के बंदरगाह के रूप में किया गया है। आखिरकार, इसे 1715 में फ्रांसीसी द्वारा उपनिवेशित किया गया था जब तक कि अंग्रेजों ने 18वीं

शताब्दी के अंत और 19वीं शताब्दी की शुरुआत के दौरान भारत से यात्रा करने वाले अपने जहाजों को सुरक्षित करने के लिए इसे अपने नियंत्रण में लेने का निर्णय नहीं किया। हिंद महासागर में अपनी सामरिक स्थिति के कारण अंग्रेजों द्वारा उपनिवेशित द्वीप, ग्रेट ब्रिटेन की नजर में एक नई भूमिका हासिल करने के लिए आया था। 17वीं शताब्दी से शुरू होकर, विभिन्न औपनिवेशिक शक्तियों ने 19वीं शताब्दी तक द्वीप के विकास के लिए स्वतंत्र यूरोपीय और गैर-यूरोपीय श्रमिकों को पेश किया, अफ्रीकियों, भारतीय दोषियों और गिरमिटिया मजदूरों को मुक्त किया (पीरथम, 2020)। गन्ने की खेती पर मॉरीशस में ब्रिटिश प्रशासकों का ध्यान केंद्रित हो गया और 1835 में दासता के उन्मूलन के साथ, गिरमिटिया मजदूरों को मुख्य रूप से भारत से द्वीप पर लाया गया। इस प्रकार छोटा ब्रिटिश उपनिवेश श्रम के लिए 1910 तक भारत पर निर्भर था, जिस वर्ष भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के अंतिम बैच को द्वीप पर लाया गया था। मॉरीशस द्वीप और इसकी निर्भरताओं से संबंधित नीतियां ब्रिटिश औपनिवेशिक शक्तियों पर निर्भर थीं। मॉरीशस की निर्भरताओं में रॉड्रिग्स, चागोस द्वीपसमूह, सेंट-ब्रैंडन और अगालेगा शामिल थे।

मॉरीशस की भौगोलिक विशिष्टताओं के साथ-साथ कई क्षेत्रीय और गैर-क्षेत्रीय शक्तियों के साथ इसके मैत्रीपूर्ण संबंध इसे हिंद महासागर का अपेक्षाकृत अच्छी तरह से अनुशासित नायक बनाते हैं.

स्वतंत्रता के बाद की पहल

शीत युद्ध अपने साथ हिंद महासागर में कई महत्वपूर्ण विकास लेकर आया, जिसके परिणामस्वरूप अन्य बातों के अलावा, मॉरीशस के क्षेत्र से चागोस द्वीपसमूह का निष्कासन हुआ और 12 मार्च 1968 को द्वीप की स्वतंत्रता हुई। औपनिवेशिक शक्तियां हालांकि मॉरीशस के भविष्य के बारे में काफी संशय में थीं। "छोटे अलग-थलग, गरीब, आश्रित देश के प्रतिमान..." के रूप में वर्णित द्वीप अपनी अर्थव्यवस्था के अन्य स्तंभों को विकसित करने के लिए एक मोनो फसल उद्योग की निर्भरता से बाहर आने में कामयाब रहा। स्वतंत्रता के तुरंत बाद, विभिन्न राजनीतिक नायकों के साथ-साथ राजनयिकों ने दुनिया भर के विभिन्न देशों के साथ संबंध बनाने की पूरी कोशिश की जो द्वीप को अपने अलगाव से बाहर आने और अपनी अर्थव्यवस्था को विकसित करने में मदद करेगा। मॉरीशस, भले ही उस समय तक कई अंतरराष्ट्रीय और क्षेत्रीय संगठनों में भर्ती होने में कामयाब रहा था, लेकिन वास्तव में हिंद महासागर के बारे में कोई स्पष्ट नीति नहीं थी। यह अभी भी एक युवा स्वतंत्र राष्ट्र था और हिंद महासागर के लिए नीति की रूपरेखा 1982 में हिंद महासागर आयोग (आईओसी) के गठन के साथ आई थी। मॉरीशस हिंद महासागर आयोग के संस्थापक सदस्यों में से एक था, जिसने दक्षिण-पश्चिमी हिंद महासागर में पाए जाने वाले छोटे द्वीपों, अर्थात् सेशेल्स, मेडागास्कर, कोमोरोस द्वीप समूह और रीयूनियन द्वीप को फिर से संगठित किया। समय के साथ, मॉरीशस को हिंद महासागर से संबंधित अपनी राष्ट्रीय रणनीति को कुछ क्षेत्रीय संगठनों, अर्थात् आईओसी, हिंद महासागर रिम

एसोसिएशन (आईओआरए) और अफ्रीकी संघ (एयू) के साथ संरेखित करना पड़ा। आईओसी की हिंद महासागर में समुद्री सुरक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में कई परियोजनाएं हैं। आईओसी द्वारा स्थापित एमएएसई कार्यक्रम, समुद्री सुरक्षा कार्यक्रम, आईओसी के महासचिव, प्रोफेसर वेलायुडोम मारिमौटौ (आईओसी वेबसाइट, 2021) के शब्दों में, समुद्री डकैती और इसके आपराधिक प्रभावों के खिलाफ लड़ने के लिए प्राथमिक उद्देश्यों को पार कर गया है। इन समुद्री अपराधों की सीमा पार प्रकृति आईओसी के क्षेत्रों से परे सहयोग की मांग करती है। महासचिव ने आगे कहा कि हिंद महासागर और यहां तक कि उस क्षेत्र से परे पाए जाने वाले अन्य क्षेत्रीय तंत्रों के साथ अच्छे तालमेल के साथ आना आवश्यक है। तथापि, विचाराधीन संगठन को यह ध्यान में रखना होगा कि विभिन्न सदस्य देशों को सबसे पहले अपनी-अपनी राष्ट्रीय रणनीतियों के साथ आना होगा और फिर यह देखना होगा कि वे उदाहरण के लिए आईओसी की समुद्री रणनीति के अनुरूप हैं। पूर्व विदेश मामले, क्षेत्रीय एकीकरण और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मंत्री, श्री नंदकूमर बोधा ने सोमालिया के तट पर समुद्री डकैती पर संपर्क समूह (सीजीपीसीएस) की अध्यक्षता करते हुए मॉरीशस की उपलब्धियों को प्रस्तुत करने वाली रिपोर्ट की प्रस्तावना में उल्लेख किया है कि

"2 एमएएसई क्षेत्रीय समझौतों के हस्ताक्षरकर्ता देशों में से एक के रूप में, मॉरीशस एक क्षेत्रीय समुद्री सुरक्षा संरचना के विकास के माध्यम से एक सुरक्षित क्षेत्र बनाने में योगदान देता है। दो क्षेत्रीय केंद्र, आरएमआईएफसी 2 और आरसीओसी 3, क्रमशः मेडागास्कर और सेशेल्स में स्थित हैं। (आईओसी प्रकाशन, 2020)

> मॉरीशस हिंद महासागर आयोग के संस्थापक सदस्यों में से एक था, जिसने दक्षिण-पश्चिमी हिंद महासागर में पाए जाने वाले छोटे द्वीपों, अर्थात् सेशेल्स, मेडागास्कर, कोमोरोस द्वीप समूह और पुनर्मिलन द्वीप को फिर से संगठित किया।

आईओआरए ने अपनी ओर से समुद्री सुरक्षा और सुरक्षा को अपनी प्राथमिकता वाले क्षेत्र में से एक बनाया है, और पहली आईओआरए सामरिक योजना कार्यशाला के दौरान क्षेत्रीय सुरक्षा संरचना के साथ आने की संभावना और विस्तार की आवश्यकता पर प्रकाश डाला है। हालांकि, इन क्षेत्रीय मंचों का हिस्सा होने के कारण मॉरीशस द्वारा सामना की जाने वाली कुछ सीमाओं के बावजूद, ऐसा लगता है कि समुद्री डकैती, नशीली दवाओं की तस्करी या सूचना साझा करने से निपटने के लिए हिंद महासागर क्षेत्र में वास्तव में एक समुद्री सुरक्षा संरचना है।

स्वतंत्रता के बाद से मॉरीशस अपने आंतरिक मामलों में व्यस्त होने के बावजूद विभिन्न देशों और विभिन्न क्षेत्रीय संगठनों के साथ संबंध स्थापित करने में व्यस्त रहा है; जैसे कि एक एकल फसल अर्थव्यवस्था से संक्रमण और राजनीतिक अस्थिरता जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है। शीत युद्ध के दौरान एक युवा राष्ट्र के रूप में, मॉरीशस की तत्कालीन सरकार ने चागोस द्वीपसमूह पर संप्रभुता का दावा किया, जिसे 1968 में अपनी

स्वतंत्रता से पहले मॉरीशस के क्षेत्र से अवैध रूप से अलग कर दिया गया था। मॉरीशस सरकार के पास राजनयिक साधनों का सहारा था और अंततः इस मामले को जीतने के लिए कानूनी तरीके अपनाने का विकल्प चुना। इसने हमेशा सभी देशों के साथ अपने मैत्रीपूर्ण संबंधों को उजागर किया है, दोनों क्षेत्रीय और अतिरिक्त क्षेत्रीय। क्षेत्रीय विवादों ने दो पूर्व औपनिवेशिक शक्तियों के साथ मॉरीशस के द्विपक्षीय संबंधों को प्रभावित नहीं किया है; ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस गणराष्ट्र।

आईओसी ने अतीत में फ्रांस और मॉरीशस के बीच मध्यस्थता करने के लिए एक मंच के रूप में काम किया है ताकि ट्रोमेलिन पर क्षेत्रीय विवाद का समाधान खोजने की कोशिश की जा सके। अपने सीमित साधनों के कारण, मॉरीशस को वर्षों से अपने क्षेत्रों के प्रबंधन के लिए क्षेत्रीय और अतिरिक्त क्षेत्रीय नायकों से विभिन्न प्रकार की मदद मिली है। मॉरीशस जैसे छोटे से द्वीप राष्ट्र के लिए भारत की हिंद महासागर नीति या चीन की अफ्रीका नीति की तरह हिंद महासागर के लिए नीति बनाना काफी मुश्किल है। तथापि, मॉरीशस स्वयं को हिंद महासागरीय या गैर-हिंद महासागरीय राष्ट्रों द्वारा जिम्मेदार भूमिका निभाते हुए पाता है। उदाहरण के लिए, भारत और मॉरीशस के बीच राजनयिक संबंधों के 75 वर्षों का समारोह मनाने के लिए मॉरीशस में आयोजित कार्यक्रम के दौरान, मॉरीशस में भारत की उच्चायुक्त नंदिनी सिंगला ने साझा किया है कि कैसे,

"मॉरीशस भारत की विदेश नीति के तीन प्राथमिकता वाले क्षेत्रों-पड़ोस प्रथम नीति के चौराहे पर है और हिंद महासागर क्षेत्र और अफ्रीका पर केंद्रित है। (आर्थिक विकास बोर्ड, 2022)"

भारत मॉरीशस के सबसे महत्वपूर्ण सामरिक भागीदारों में से एक है। वह वर्षों से मॉरीशस को कई क्षेत्रों में तकनीकी और वित्तीय सहायता भी प्रदान कर रही हैं। देश सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार होने के साथ-साथ 2007 के बाद से द्वीप पर माल और सेवाओं का सबसे बड़ा निर्यातक है। इन वर्षों में, मॉरीशस ने विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न देशों के साथ कई सहयोग समझौते किए हैं। भारत के साथ अंतिम द्विपक्षीय समझौता, व्यापक आर्थिक सहयोग और साझेदारी समझौता (सीईसीपीए), जो 1 अप्रैल 2021 से लागू हुआ, दोनों देशों के बीच वाणिज्यिक संबंधों को सुदृढ़ करने की आशा है।

21वीं सदी में, हिंद महासागर ने कुछ प्रमुख भू-राजनीतिक चुनौतियों को देखा। मॉरीशस बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) का हिस्सा नहीं है। तथापि, चीन सरकार ने मॉरीशस में नए विमानपत्तन और बागाटेल बांध नामक कई परियोजनाओं का वित्तपोषण और वितरण किया है। जिन फेई (पूर्व तियानली) परियोजना, जिसे कुछ अफ्रीकी देशों में चीनी सरकार द्वारा स्थापित किए जा रहे विशेष आर्थिक क्षेत्रों का हिस्सा बनने के लिए डिज़ाइन किया गया था, प्रारंभिक आशा पर खरा नहीं उतरा। अक्तूबर 2019 में हस्ताक्षरित चीन-मॉरीशस द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए), जो जनवरी 2021 से लागू हुआ, चीन और किसी अफ्रीकी देश के बीच पहला समझौता है।

इस बिंदु पर मॉरीशस के राष्ट्रीय तट रक्षक की भूमिका को उजागर करना आवश्यक है। राष्ट्रीय तटरक्षक, जो मॉरीशस पुलिस बल की एक विशेष इकाई है और पुलिस आयुक्त के अधिकार के तहत है, का गठन 24 जुलाई 1987 को द्वीप क्षेत्रीय जल के प्रबंधन के लिए एक ब्लूप्रिंट की मंजूरी के बाद किया गया था। तस्करी और आईयूयू मत्स्यन में वृद्धि ने इस संगठन के निर्माण को महत्वपूर्ण बना दिया। ले मतिनल (नवंबर 2022) द्वारा प्रकाशित एक हालिया साक्षात्कार के अनुसार, वर्तमान पुलिस आयुक्त ने कहा है कि राष्ट्रीय तटरक्षक बल को लगभग 2,3 मिलियन वर्ग किलोमीटर मॉरीशस के ईईजेड में समुद्री प्रदूषण, मानव तस्करी, नशीली दवाओं की तस्करी और लूटपाट जैसे मुद्दों से निपटने के लिए क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग पर भरोसा करना होगा। अपने दृष्टिकोण में सक्रिय होने के बावजूद, राष्ट्रीय तट रक्षक मॉरीशस के क्षेत्रीय जल में जुलाई 2020 में एमवी वाकाशियो तेल रिसाव को रोकने में सक्षम नहीं है।

मॉरीशस में 2.3 मिलियन वर्ग किलोमीटर का समुद्री क्षेत्र और 396,000 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र है जो सेशेल्स के साथ सह-प्रबंधित है। समुद्री अर्थव्यवस्था से जुड़ी गतिविधियां शुरुआती चरणों में हैं। ऑस्ट्रेलिया जैसे कई क्षेत्रीय साझेदार हैं, जो समुद्री अर्थव्यवस्था से संबंधित मुद्दों पर सहयोग कर रहे हैं। सरकार का दृष्टिकोण समुद्री पारिस्थितिक तंत्र के संरक्षण को सुनिश्चित करते हुए इसे मॉरीशस की अर्थव्यवस्था के एक महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में बदलना है। इस प्रकार, मॉरीशस सरकार स्थानीय क्षमता विकसित करके समुद्री संसाधनों के सतत उपयोग द्वारा दीर्घकालिक लाभ सुनिश्चित करना चाहती है। मॉरीशस को अभी समुद्री अर्थव्यवस्था की क्षमता का दोहन करना बाकी है। इस बिंदु को समुद्री अर्थव्यवस्था, समुद्री संसाधन, मत्स्य पालन और शिपिंग मंत्री सुधीर मौधू ने वित्तीय वर्ष 2020-2021 के लिए प्रदर्शन पर वार्षिक रिपोर्ट में उजागर किया है।

> मॉरीशस जैसे छोटे से द्वीप राष्ट्र के लिए भारत की हिंद महासागर नीति या चीन की अफ्रीका नीति की तरह हिंद महासागर के लिए नीति बनाना काफी मुश्किल है। तथापि, मॉरीशस स्वयं को हिंद महासागरीय या गैर-हिंद महासागरीय राष्ट्रों द्वारा जिम्मेदार भूमिका निभाते हुए पाता है।

> इस प्रकार मॉरीशस सरकार स्थानीय क्षमता विकसित करके समुद्री संसाधनों के सतत उपयोग द्वारा दीर्घकालिक लाभ सुनिश्चित करना चाहती है। मॉरीशस को अभी तक समुद्री अर्थव्यवस्था की क्षमता को दोहन करना बाकी है।

मॉरीशस को हिंद महासागर के विभिन्न नायकों के साथ मिलकर काम करना जारी रखना चाहिए ताकि इस क्षेत्र के लिए एक सामंजस्यपूर्ण रणनीति तैयार की जा सके, जिसके प्रमुख पारगमन मार्गों का उपयोग दुनिया के लगभग दो तिहाई समुद्र आधारित वाणिज्य द्वारा किया जाता है। सरकार अपने सीमित संसाधनों के साथ अकेले हिंद महासागर के लिए एक विशिष्ट रणनीति तैयार करने के लिए आगे नहीं बढ़

सकती है क्योंकि कोई भी राष्ट्र अलग-थलग नहीं रह सकता है। एक छोटा द्वीप राष्ट्र होने के बावजूद, मॉरीशस का ईईजेड इसे एक महत्वपूर्ण नायक बनाता है जो इस क्षेत्र में शक्ति संतुलन को प्रभावित कर सकता है। विभिन्न क्षेत्रीय संगठन केवल इस क्षेत्र से जुड़े कई मुद्दों के लिए विशिष्ट नीतियां तैयार करने के लिए क्षेत्र के विभिन्न राष्ट्रों को आमंत्रित करने के लिए मंच के रूप में कार्य कर सकते हैं। एक छोटा द्वीप राष्ट्र होने के बावजूद, मॉरीशस का ईईजेड इसे एक महत्वपूर्ण नायक बनाता है जो इस क्षेत्र में शक्ति संतुलन को प्रभावित कर सकता है।

एक छोटा द्वीप राज्य होने के बावजूद, मॉरीशस का ईईजेड इसे एक महत्वपूर्ण नायक बनाता है जो इस क्षेत्र में शक्ति संतुलन को प्रभावित कर सकता है।

संदर्भ

1. हौबर्ट, जे. मॉरीशस: स्वतंत्रता और निर्भरता। आधुनिक अफ्रीकी अध्ययन जर्नल. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस
2. हिंद महासागर आयोग 2020. सोमालिया के तट पर समुद्री डकैती पर अध्यक्षता- संपर्क समूह की रिपोर्ट। जनवरी 2018-दिसंबर 2019
3. त्सांग मंग किन.जे.2010. सर शिवसागर रामगुलाम, दुर्लभ राजनयिक: मॉरीशस विश्व मंच पर।
4. 05.11.2020 पीरथुम. एस (2020) हमारे इतिहास के निर्माण की याद में: मॉरीशस में गिरमिटिया मजदूरों या गिरमिटिया को सम्मानित करने की लंबी परंपरा। 05.11.2020
5. अहमद खान. I. (2020). चीन-मॉरीशस संबंध: झूठी शुरुआत के बाद, मुक्त व्यापार समझौता आर्थिक संबंधों को कैसे गहरा कर सकता है। L'express.mu
6. वित्तीय वर्ष 2020-2021 के लिए प्रदर्शन पर समुद्री अर्थव्यवस्था, समुद्री संसाधन, मत्स्य पालन और शिपिंग मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट
7. माखन.वी. (2018). विदेश नीति के पचास वर्ष। मॉरीशस की खोज और निवेश
8. https://mea.gov.in/Portal/ForeignRelation/India-Mauritius_Relations.pdf

सेशेल्स की समुद्री अर्थव्यवस्था की रूपरेखा

मालिशनी सेनारत्ने

सेशेल्स गणराष्ट्र पश्चिमी हिंद महासागर में स्थित एक छोटा द्वीप विकासशील राष्ट्र (एसआईडीएस) है। लगभग 100,000 की आबादी वाले, देश में भूमि से अधिक पानी है। वास्तव में, इसके पास लगभग 1.3 मिलियन वर्ग किमी के क्षेत्रीय जल का एक विशेष आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) और लगभग 455 वर्ग किमी की संप्रभु भूमि है। इस प्रकार द्वीप राष्ट्र ने हाल के वर्षों में अपने समुद्री अर्थव्यवस्थामॉडल के माध्यम से खुद को एक बड़े महासागर राष्ट्र के रूप में फिर से ब्रांड करने की मांग की है।

इस प्रकार द्वीप राष्ट्र ने हाल के वर्षों में अपने ब्लू इकोनॉमी मॉडल के माध्यम से खुद को एक बड़े महासागर राष्ट्र के रूप में फिर से ब्रांड करने की मांग की है।

2015 में, सेशेल्स ने अपने पर्यटन के तेजी से विकास और 2008 के आर्थिक संकट के बाद ध्वनि व्यापक आर्थिक सुधार के कारण उच्च आय वाले देश का दर्जा हासिल किया। देश मुफ्त स्वास्थ्य और शिक्षा, आवास सहायता, जल और अपशिष्ट प्रबंधन सेवाओं सहित व्यापक सामाजिक सेवाओं का भी आनंद लेता है और वैश्विक मानव विकास संकेतकों पर अफ्रीका में लगातार उच्चतम स्थान पर है।

बहरहाल, द्वीप राष्ट्र काफी सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रहा है, जो हाल ही में कोविड-19 महामारी से काफी हद तक बढ़ गया है। उदाहरण के लिए, कोविड ने दुनिया की अधिकांश आबादी को गरीबी रेखा के नीचे रखा है, और इसी तरह सेशेल्स में, लगभग 25% आबादी को गरीबी रेखा से नीचे रहने के लिए माना जाता है। सेशेल्स समुद्री अर्थव्यवस्थाफ्रेमवर्क के माध्यम से अपने विकास मार्ग को नेविगेट करने का विकल्प कैसे चुनती है-आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक रूप से-आने वाली पीढ़ियों के लिए उसे प्रभावित करेगा।

समुद्री अर्थव्यवस्था

समुद्री अर्थव्यवस्था अवधारणा महासागरों पर छोटे द्वीपों की अनूठी निर्भरता और जलवायु परिवर्तन के प्रति उनकी भेद्यता को स्वीकार करती है। इसलिए यह छोटी, अविविध अर्थव्यवस्थाओं की कुछ अंतर्निहित संरचनात्मक चुनौतियों को कम करने के विकल्पों का प्रस्ताव करता है, जिसमें छोटी आबादी, आयात पर

उच्च निर्भरता, सीमित स्थान, कौशल, क्षमता और सार्वजनिक सेवाएं प्रदान करने की उच्च इकाई लागत शामिल है। 2018 में एक प्रारंभिक खोज में, सेशेल्स की समुद्री अर्थव्यवस्था का मूल्य $ 495 मिलियन था जिसमें सकल घरेलू उत्पाद का 30.6% शामिल था और सेशेल्स औपचारिक रोजगार का 45% योगदान था।

पर्यटन और मत्स्य पालन-दोनों पारंपरिक और भारी जलवायु प्रभावित क्षेत्र-अर्थव्यवस्था की आधारशिला होने के साथ, एक स्वस्थ और टिकाऊ महासागर को देश के भविष्य के विकास के लिए अनिवार्य माना गया था। देश ने इस विकास एजेंडे को वित्त पोषित करने के साधन के रूप में कुछ नवीन वित्तीय साधनों को अपनाने का विकल्प चुना।

2015 में, महासागर संरक्षण के लिए प्रकृति के लिए पहला ऋण स्वैप संपन्न हुआ, जहां सेशेल्स ने पेरिस क्लब के साथ समझौते में अपने ऋण के 21.6 मिलियन अमेरिकी डॉलर का पुनर्गठन किया।

इन सफलताओं, नए अभिनव वित्तीय साधनों के माध्यम से मिश्रित वित्तपोषण प्राप्त करने की उपलब्धियों के साथ मिलकर, सेशेल्स को समुद्री अर्थव्यवस्था की दिशा में अग्रणी बना दिया है।

देश ने इसके बाद दुनिया का पहला संप्रभु ब्लू बॉन्ड भी लॉन्च किया, जिसमें अंतरराष्ट्रीय निजी निवेशकों से 15 मिलियन अमेरिकी डॉलर जुटाए गए। बांड से प्राप्त आय का उद्देश्य समुद्री संरक्षित क्षेत्रों, टिकाऊ समुद्री और मत्स्य पालन परियोजनाओं के विस्तार और द्वीप की समुद्री अर्थव्यवस्था के विकास को निधि देना है।

महामारी के बीच, सरकार ने 2020 में सेशेल्स के ईईजेड के 30% को समुद्री संरक्षित क्षेत्र (एमपीए) घोषित किया, जो एसडीजी 4.5 की बैठक से अधिक है, जिसमें कहा गया है: 2020 तक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कानून के अनुरूप और सर्वोत्तम उपलब्ध वैज्ञानिक जानकारी के आधार पर कम से कम 10 प्रतिशत तटीय और समुद्री क्षेत्रों का संरक्षण करें। अब, देश एमपीए की रूपरेखा को लागू करने में गंभीरता से लगा हुआ है, विभिन्न क्षेत्रों के संबंध में जिनमें कुछ आर्थिक गतिविधियां हो सकती हैं, और ऐसे क्षेत्र जो 'नो टेक' जोन हैं, या कोई आर्थिक गतिविधियां नहीं कर सकते हैं। इन सफलताओं, नए अभिनव वित्तीय साधनों के माध्यम से मिश्रित वित्तपोषण प्राप्त करने की उपलब्धियों के साथ मिलकर, सेशेल्स को समुद्री अर्थव्यवस्थास्पेस में अग्रणी बना दिया है। फिर भी, देश अपने सामाजिक-आर्थिक विकास में कई चुनौतियों का सामना कर रहा है।

सेशेल्स की अर्थव्यवस्था अपने अपेक्षाकृत अलग भौगोलिक स्थान और इसकी अविविध प्रकृति के कारण विशेष रूप से कमजोर है। मत्स्य पालन और पर्यटन पर इसकी पर्याप्त निर्भरता ने इसे कोविड जैसे बहिर्जात झटकों के प्रति संवेदनशील बना दिया। मत्स्य पालन क्षेत्र कई चुनौतियों का सामना करता है, जिनमें से एक प्राथमिक

अपर्याप्त रूप से प्रशिक्षित और उम्र बढ़ने वाला कार्यबल है, जिसमें उत्तराधिकार के कुछ संकेत हैं। देश के समुद्री पर्यावरण का अत्यधिक शोषण संभवतः सेशेल्स की अर्थव्यवस्था के लिए सबसे बड़ा मध्यम से दीर्घकालिक जोखिम है। इनमें अवैध, अनियमित और अनरिपोर्टेड (आईयूयू) मत्स्यन की व्यापकता शामिल है, जो स्वाभाविक रूप से मछली स्टॉक, पकड़ने और खाद्य सुरक्षा के लिए कोटा पर चिंताओं का कारण बनती है। अंतर्राष्ट्रीय अपराध, मानव और नशीली दवाओं की तस्करी की घटनाएं भी हमारे जल में प्रमुख चिंताएं हैं।

पर्यटन एक अति-विकसित क्षेत्र है जो महामारी के परिणामस्वरूप काफी हद तक खराब हो गया है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जिस पर तटीय समुदायों और सरकार द्वारा पर्याप्त राजस्व के लिए आय के लिए बहुत अधिक भरोसा किया जाता है। पर्यटन को रोजगार के दृष्टिकोण से समान चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें पर्यटन क्षेत्र में नौकरियों का एक उच्च अनुपात गैर-सेचेलोइस द्वारा आयोजित किया जाता है।

हाइड्रोकार्बन अन्वेषण और खनन एक मुश्किल है, क्योंकि इसे सरकार द्वारा समुद्री अर्थव्यवस्था मॉडल के भीतर एक आर्थिक क्षेत्र के रूप में भी पहचाना गया था कि यह शोषण के लिए परिपक्व है। इसलिए 2022 में एक ब्रिटिश तेल कंपनी के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद सेशेल्स के क्षेत्रीय जल में तेल की खोज फिर से शुरू होने के लिए तैयार है। सरकार ने अभी भी जोर देकर कहा है कि सेशेल्स का मुख्य ध्यान तेल अन्वेषण कहकर अपने प्राचीन और अद्वितीय पर्यावरण के संरक्षण और सुरक्षा पर बना हुआ है। समुद्री अर्थव्यवस्था के ढांचे के भीतर, हमें संसाधनों के अनुसंधान और शोषण में संलग्न होने से नहीं रोकना चाहिए जो हमारे समुद्र तल के नीचे हो सकते हैं।

ये चुनौतियां उन मुद्दों को दर्शाती हैं जिनका सामना देश कर रहा है क्योंकि यह कोविड-19 के मद्देनजर अपने समुद्री अर्थव्यवस्था एजेंडे को वापस पटरी पर लाने का प्रयास कर रहा है।

> भारत जैसे पसंद के प्रमुख भागीदारों के साथ जुड़ने से समुद्री सुरक्षा और निगरानी, अनुसंधान और सर्वेक्षण के साथ-साथ स्थानीय क्षमता विकास सहित कई समुद्री अर्थव्यवस्था के मोर्चों पर कई और काफी सफल सहयोग देखे गए हैं। सेशेल्स के समुद्री अर्थव्यवस्था एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए इस तरह के सहयोग और साझेदारी आवश्यक होगी।

भावी कार्रवाई

कोविड महामारी के बाद आर्थिक सुधार क्षितिज पर दिखाई दे रहा है, सेशेल्स अब देश के उल्लिखित समुद्री अर्थव्यवस्था क्षेत्रों के सुदृढ़ीकरण, कायाकल्प और उन्नयन करके अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण पर ध्यान केंद्रित

कर रहा है, लेकिन यह देश को पर्यावरण और सामाजिक-आर्थिक सिद्धांतों की दृष्टि खोने के बिना होना चाहिए जो इसके समुद्री अर्थव्यवस्था रोडमैप पर हस्ताक्षर करते हैं या मार्गदर्शन करते हैं। जलीय कृषि, नवीकरणीय ऊर्जा और हाइड्रोकार्बन क्षेत्र में अवसर प्रचुर मात्रा में हैं, लेकिन इनके लिए इस क्षेत्र में निर्णय निर्माताओं और नीति निर्माताओं से नाजुक संतुलन कार्यों की आवश्यकता होगी। उदाहरण के लिए, कृषि, टिकाऊ मत्स्य पालन और बंदरगाहों और शिपिंग विस्तार जैसे क्षेत्रों को बढ़ावा देना, खाद्य सुरक्षा, बुनियादी ढांचे के विकास, आर्थिक विविधीकरण के साथ-साथ सांस्कृतिक कारणों से महत्वपूर्ण होगा, लेकिन यह मत्स्यन और पर्यटन क्षेत्रों में आजीविका के नुकसान की कीमत पर नहीं आ सकता है।

द्वीप राष्ट्रों के तटों से परे साझेदारी और सहयोग इसलिए तत्काल और सबसे महत्वपूर्ण हो जाता है। भारत जैसे पसंद के प्रमुख भागीदारों के साथ जुड़ने से समुद्री सुरक्षा और निगरानी, अनुसंधान और सर्वेक्षण के साथ-साथ स्थानीय क्षमता विकास सहित कई समुद्री अर्थव्यवस्था के मोर्चों पर कई और काफी सफल सहयोग देखे गए हैं। इस तरह के सहयोग और साझेदारी आगे बढ़ने के लिए आवश्यक होंगे, सेशेल्स की समुद्री अर्थव्यवस्था एजेंडा। जब तक समुद्री अर्थव्यवस्था की स्पष्ट दृष्टि प्रबल नहीं होती है, सेशेल्स इक्विटी और संरक्षण लाभों के मामले में मॉडल के माध्यम से प्रदान किए गए अवसरों की सराहना करने में विफल रहने का जोखिम उठाता है-और सामान्य रूप से व्यवसाय का विकल्प चुन सकता है। फिर भी, उसका भविष्य बहुत उज्ज्वल बना हुआ है।

संदर्भ

सेनारत्ने, एम (2021) 2021 में ब्लू इकोनॉमी: सेशेल्स से परिप्रेक्ष्य। https://www.orfonline.org/expert-speak/blue-economy-2021-perspectives-seychelles/

सेनारत्ने, एम (2021) कोविड-19, समुद्री अर्थव्यवस्थाऔर जलवायु परिवर्तन एजेंडा: सेशेल्स का मामला। https://www.orfonline.org/research/covid-19-blue-economy-and-the-climate-change-agenda-66279/

सेनारत्ने, एम (2021) समुद्री अर्थव्यवस्था: सेशेल्स में एक नया विकास पथ तैयार करना https://www.orfonline.org/research/the-blue-economy-charting-a-new-development-path-in-the-seychelles/

सेशेल्स समाचार एजेंसी (2022) तेल की खोज: पर्यावरण और महासागर संरक्षण पहले आता है: सेशेल्स के राष्ट्रपति. http://**Error! Hyperlink reference not valid.**Oil+exploration+Environment+and+ocean +protection+ come+first%2C+says+Seychelles%27+President

अफ्रीका के लिए संयुक्त राष्ट्र आर्थिक आयोग (2021) सेशेल्स में समुद्री अर्थव्यवस्था का सामाजिक-आर्थिक आकलन. https://www.uneca.org/sites/default/files/SROs/Preliminary%20 Analytical% 20Report%20-%20Seychelles.pdf

मेडागास्कर की कूटनीति, फिहावनाना और हिंद महासागर में सामरिक प्रतिस्पर्धा

जुवेंस एफ रामासी

हिंद महासागर सामरिक रूप से विवादित महासागर है क्योंकि इसकी भू-रणनीतिक स्थिति प्रभाव के विभिन्न क्षेत्रों और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में फैली हुई है। हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) को भौगोलिक रूप से हिंद महासागर की सीमा से लगे राष्ट्रों के समूह के रूप में परिभाषित किया गया है, अर्थात उनतीस राष्ट्रों, दक्षिण अफ्रीका से ऑस्ट्रेलियाई महाद्वीप तक, और अफ्रीका के पूर्वी तट, हॉर्न ऑफ अफ्रीका, अरब प्रायद्वीप, खाड़ी राष्ट्रों, दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया सहित। यह विश्व समुद्री अर्थव्यवस्था के 36% का प्रतिनिधित्व करता है, जहां लगभग 200 मीट्रिक टन तेल दो मार्गों के माध्यम से अमेरिका और यूरोप में पारगमन करता है, लाल सागर या मोजाम्बिक चैनल और फिर केप ऑफ गुड होप, जो विश्व तेल उत्पादन का 30% प्रतिनिधित्व करता है। आईओआर में सबसे सामरिक जलडमरूमध्य का 2/3 और दुनिया की 55% आबादी शामिल है, जो वर्तमान भू-राजनीति में इसके महत्व को दर्शाती है और हिंद-प्रशांत क्षेत्र के बढ़ते महत्व से प्रबलित है। इसके अलावा, यह क्षेत्र समुद्री मार्गों की उपस्थिति के कारण सामरिक है जो विश्व अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण हैं और इसके सीबेड (तेल, गैस, मछली उत्पादों) की समृद्धि के कारण भी हैं। इसलिए, आईओआर की स्थिरता मुख्य अंतरराष्ट्रीय बाजारों की आपूर्ति की गारंटी देने और व्यापक अर्थों में अंतर्राष्ट्रीय स्थिरता के लिए आवश्यक अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।

इस संबंध में, शांति और स्थिरता के क्षेत्र को बढ़ावा देने और क्षेत्र को प्रभावित करने वाले संघर्षों के समाधान में पड़ोसी और अतिरिक्त क्षेत्रीय राष्ट्रों की भागीदारी प्रमुख महत्व की है। इससे आईओआर में पुरानी और नई शक्तियों के बीच सामरिक प्रतिस्पर्धा भी बढ़ रही है। बहुध्रुवीय दुनिया में नई भू-राजनीतिक व्यवस्था की दहलीज पर नहीं होने के लिए, जिसमें हिंद महासागर सहित अफ्रीका थिएटरों में से एक है, यह दक्षिण-पश्चिम हिंद महासागर के राष्ट्रों पर निर्भर है कि वे विभिन्न निकायों के भीतर अपनी राजनीतिक और राजनयिक आवाज सुनें। इसके लिए, मेडागास्कर ने आईओआर और उससे परे सामरिक प्रतिस्पर्धा के सामने फिहावनाना के सिद्धांत के साथ संयुक्त एक चौतरफा कूटनीति शुरू की है। इस प्रकार, मालागासी विदेश नीति अपनी पारंपरिक कूटनीति और अपने ऐतिहासिक भागीदारों को पार करती है ताकि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में नई साझेदारी और नए अवसरों का पता लगाया जा सके। इसके नए साझेदारों में भारत भी है, जो आईओआर में सामरिक शक्ति के रूप में उभर रहा है। इसके अलावा, हिंद-प्रशांत का महत्व मेडागास्कर जैसे राष्ट्रों को अपने कार्यों पर पुनर्विचार करने और क्षेत्र में मौजूद विभिन्न शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा के सामने नए सामरिक विकल्प बनाने के लिए प्रेरित कर रहा है। इस संबंध में, देश हाल ही में भारत के करीब आया है,

जो आईओआर के भीतर अपनी राजनयिक सक्रियता से प्रतिष्ठित है और इसकी शीर्ष प्राथमिकताओं में से एक के रूप में एक सक्रिय भारतीय नौसेना है[73]।

मेडागास्कर ने आईओआर और उससे परे सामरिक प्रतिस्पर्धा के सामने फिहावनाना के सिद्धांत के साथ संयुक्त एक पूर्ण कूटनीति शुरू की है। इस प्रकार, मालागासी विदेश नीति अपनी पारंपरिक कूटनीति और अपने ऐतिहासिक भागीदारों को पार करती है ताकि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में नई साझेदारी और नए अवसरों का पता लगाया जा सके। इसके नए साझेदारों में भारत भी है, जो आईओआर में सामरिक शक्ति के रूप में उभर रहा है।

ऑल-आउट कूटनीति, फिहवनाना और सामरिक प्रतियोगिता

मेडागास्कर, दुनिया का चौथा सबसे बड़ा द्वीप, दक्षिण-पश्चिमी हिंद महासागर में अफ्रीकी तट (मोजाम्बिक और तंजानिया) से 400 किमी पूर्व में स्थित है और मकर रेखा पर फैला हुआ है। इस द्वीप में मोजाम्बिक चैनल के हाइड्रोकार्बन राजमार्ग के पास एक भू-रणनीतिक स्थिति है और उत्तरी सागर के बराबर तेल और गैस क्षमता है, जिसकी पुष्टि 2012[74] में यूएस जियोलॉजिकल सर्वे (यूएसजीएस) और 2018 में चीन भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के एक अध्ययन से हुई है, जो दर्शाता है कि मेडागास्कर एक तेल उत्पादक देश बन सकता है[75]। समुद्र तल की इस समृद्धि में बासा ए इंडिया, जुआन डी नोवा और यूरोपा द्वीप शामिल हैं, जो फ्रांस के साथ क्षेत्रीय विवाद का विषय हैं। चीन और रूस मेडागास्कर के दावों का समर्थन करते हैं। चीन समझता है कि मेडागास्कर समुद्री रेशम मार्ग विकसित करने में पारगमन राष्ट्र की भूमिका निभा सकता है। रूस के लिए, यह एक नेता के रूप में मेडागास्कर की क्षमता को विकसित करना चाहता है, इतना कि इसने 2018 में पिछले राष्ट्रपति चुनाव के बाद से महत्वपूर्ण राजनयिक सक्रियता दिखाई है और यूक्रेन में संघर्ष के बाद राजनयिक सक्रियता तेज हो गई है। दरअसल, मेडागास्कर में एक खनन और कृषि क्षमता है जो विभिन्न देशों (संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, चीन, फ्रांस, भारत, जापान, तुर्किये) और अंतर्राष्ट्रीय फर्मों द्वारा प्रतिष्ठित है।

परिणामतः, दक्षिण-पश्चिमी हिंद महासागर के द्वीपों में, मेडागास्कर वह देश है जिसके पास सबसे अधिक प्राकृतिक संसाधन हैं और इसलिए क्षेत्रीय और अतिरिक्त क्षेत्रीय शक्तियों के लिए बहुत रुचि है। इसने मेडागास्कर को इस भू-रणनीतिक पहेली में अपनी भूमिका निभाने के लिए एक ऑल-आउट कूटनीति (1970 के दशक में डिडिएर रतसिरका द्वारा अभ्यास की गई कूटनीति के समान) शुरू करने के लिए प्रेरित किया है। मालागासी विदेश नीति को गुटनिरपेक्षता के सिद्धांत पर आधारित एक गैर-अनन्य, बहु-क्षेत्रीय कूटनीति के रूप में परिभाषित किया गया है। यह नीति रूसी-यूक्रेनी संघर्ष के समय प्रदर्शित की गई थी, और कैसे मेडागास्कर ने संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) में वोटों के दौरान अपने बहिष्कार को सही

ठहराया। मालागासी राजनयिक और सामरिक सिद्धांत भी फिहवनन की अवधारणा से जुड़ा हुआ है जो भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्राणियों के बीच रिश्तेदारी, दोस्ती, सद्भावना की मालागासी अवधारणा को शामिल करता है। शाब्दिक अनुवाद को पकड़ना काफी मुश्किल है, क्योंकि मालागासी संस्कृति इस अवधारणा को अद्वितीय तरीकों से लागू करती है। इसकी उत्पत्ति हवन है, जिसका अर्थ है किन। यह एकजुटता के सिद्धांत और आपसी समझ और एकजुटता पर आधारित एक आदर्श प्रकार के संबंध का प्रतीक है। फिहवनाना सार्वभौमिक भाईचारे की भावना में शांति की रक्षा के उद्देश्य से संघ या एकता के संरक्षण की वकालत करता है। इस प्रकार, इसकी तुलना दुनिया को एक परिवार के रूप में देखते हुए "वसुधैव कुटुम्बकम" अवधारणा से की जा सकती है। इस प्रकार फिहवनाना हिंद महासागर शांति क्षेत्र के सिद्धांत के अनुसार मालागासी विदेश नीति के केंद्र का गठन करता है।

फिहवनाना सार्वभौमिक भाईचारे की भावना में शांति की रक्षा के उद्देश्य से संघ या एकता के संरक्षण की वकालत करता है। इस प्रकार, इसकी तुलना दुनिया को एक परिवार के रूप में देखते हुए "वसुधैव कुटुम्बकम" अवधारणा से की जा सकती है। इस प्रकार फिहवनाना हिंद महासागर शांति क्षेत्र के सिद्धांत के अनुसार मालागासी विदेश नीति के केंद्र का गठन करता है।

इसके अलावा, ऑल-आउट कूटनीति एक असाधारण कूटनीति है जिसमें मेडागास्कर विभिन्न शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा के बीच अपने हितों पर जोर देने के लिए महान हिंद महासागर के भीतर अपनी भू-रणनीतिक स्थिति का लाभ उठाने की कोशिश कर रहा है। इस भू-राजनीतिक ढांचे के भीतर, मेडागास्कर ने एक संतुलन अधिनियम के माध्यम से, विकास की अपनी इच्छा को सर्वोत्तम रूप से महसूस करने और इसकी समृद्ध क्षमता का लाभ उठाने के लिए समझौतों और साझेदारी का निष्कर्ष निकाला है। अंत में, मेडागास्कर तटस्थता की कूटनीति को आगे बढ़ाना चाहता है और खुद को बहुपक्षवाद के पक्ष में रखना चाहता है, जिसे सितंबर 2022 में 77वीं संयुक्त राष्ट्र महासभा में मेडागास्कर गणराष्ट्र के राष्ट्रपति एंड्री राजोइलिना के भाषण के दौरान याद किया गया था।

आईओआर के भीतर मेडागास्कर की राजनयिक पहुंच के लिए, यह अनिवार्य रूप से इसकी शांति को बढ़ावा देने वाले कार्यों पर आधारित है। इसके परिणामस्वरूप कई नायकों के साथ समझौते हुए हैं। इस प्रकार, सैन्य और सुरक्षा समझौते मुख्य रूप से समुद्री डकैती, अवैध मत्स्यन, आतंकवाद, अंतर्राष्ट्रीय संगठित अपराध के खिलाफ लड़ने के लिए शुरू किए गए हैं। समुद्री सुरक्षा मुख्य रूप से 5,000 किमी समुद्र तट को सुरक्षित करने के लिए मेडागास्कर के लिए रक्षा सहयोग समझौतों की आधारशिला है। लेकिन, मानव, भौतिक और वित्तीय संसाधनों के मामले में इसकी नौसेना की संरचनात्मक कमजोरी एक चिंता का विषय है। समुद्र तट को सुरक्षित करना एक आवश्यकता है क्योंकि ग्लोबल इनिशिएटिव ने मेडागास्कर को "क्षेत्रीय अवैध बाजारों और व्यापक अवैध प्रवाह" के केंद्र (या पट्टिका टूरेंटे) के रूप में वर्णित किया है[76]। आईओआर को सुरक्षित करने और चोक

पॉइंट को नियंत्रित करने के लिए मेडागास्कर सहित सभी देशों की भागीदारी के साथ-साथ क्षेत्रीय संगठनों की सहायता की आवश्यकता होती है। इस प्रकार मेडागास्कर 4[77] संगठनों का एक सक्रिय सदस्य है, जो इस क्षेत्र में अधिकार क्षेत्र वाले 7[78] संगठनों में से है। उदाहरण के लिए, क्षेत्रीय सहयोग का उदाहरण 2018 में फ्यूजन और समुद्री सूचना के लिए क्षेत्रीय केंद्र की स्थापना द्वारा दिया गया है, जो जिबूती, मेडागास्कर, मॉरीशस, कोमोरोस संघ और सेशेल्स के बीच समुद्री सुरक्षा को बढ़ावा देने में एक प्रमुख भूमिका निभाता है।

मेडागास्कर का सामरिक महत्व एंटिराना में देश के उत्तर में अपने नौसैनिक अड्डे के स्थान से प्रदर्शित होता है। यह आधार मोजाम्बिक चैनल के माध्यम से समुद्री मार्ग के नियंत्रण की अनुमति देता है, जिसके परिणामस्वरूप मेडागास्कर के लिए इस क्षेत्र में विभिन्न शक्तियों द्वारा काफी रुचियां हैं। दरअसल, आजादी के बाद फ्रांस जैसे देशों का वहां बेस था लेकिन रक्षा समझौते में संशोधन के बाद 1970 के दशक में इसे छोड़ना पड़ा था। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और चीन अधिक सहयोग चाहते हैं ताकि उन्हें इस नौसैनिक अड्डे तक बेहतर पहुंच मिल सके। अप्रैल 2021 में स्वेज नहर की नाकाबंदी के दौरान एंटिराना बेस के सामरिक महत्व का प्रदर्शन किया गया था। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए मालागासी जल का व्यापक रूप से उपयोग किया गया था। इससे मेडागास्कर को देश के लाभ के लिए मैरिटिमाइजेशन[79] में तेजी लाने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

विभिन्न सैन्य समझौतों का समापन सर्वांगीण कूटनीति और गुटनिरपेक्षता और सकारात्मक तटस्थता के सिद्धांत का हिस्सा है।. यह सामरिक प्रतिस्पर्धा का एक उदाहरण भी है जो मालागासी जल में विभिन्न शक्तियों के सैन्य जहाजों के पारित होने, संयुक्त सैन्य अभ्यास (जैसे संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के साथ अफ्रीका एंडेवर, फ्रांस के साथ डायना), विदेशी सैन्य अकादमियों में मालागासी सैनिकों का प्रशिक्षण, प्रशिक्षण का संगठन (हिंद महासागर के दक्षिणी क्षेत्र में फ्रांसीसी सशस्त्र बलों के साथ) की विशेषता है। इंडीन, एफएजेडएसओआई; आईओसी के सहयोग से यूरोपीय संघ द्वारा वित्त-पोषित एमएएसई परियोजना और दूसरों के बीच भाषा पाठ्यक्रम (अंग्रेजी, फ्रेंच, चीनी)। सुरक्षा मामलों में मेडागास्कर के लिए बढ़ती रुचि को 2021 में मेडागास्कर में चीनी दूतावास में एक रक्षा अताशे की नियुक्ति से चित्रित किया गया था[80]। रक्षा अताशे वाले अन्य देश संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, फ्रांस और भारत हैं।

समुद्री सुरक्षा मुख्य रूप से 5,000 किमी समुद्र तट को सुरक्षित करने के लिए मेडागास्कर के लिए रक्षा सहयोग समझौतों की आधारशिला है। लेकिन, मानव, भौतिक और वित्तीय संसाधनों के मामले में इसकी नौसेना की संरचनात्मक कमजोरी एक चिंता का विषय है।

भारत ने अफ्रीकी महाद्वीप पर अपनी जगह बनाने के लिए 2008, 2011 और 2015 में भारत अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन का आयोजन किया है। भारत के लिए, इसका मतलब अफ्रीका के विकास के पक्ष में कार्यों के माध्यम से दक्षिण-दक्षिण एकजुटता पर जोर देना है, जो तेजी से वैश्वीकृत और अन्योन्याश्रित दुनिया के भीतर संबंधों के पुनर्संतुलन में योगदान दे सकता है।

भारतीय छत्रछाया, सॉफ्ट पावर, नौसेना कूटनीति और सुरक्षा

दुनिया का विकास, विशेष रूप से विभिन्न शक्तियों के बीच संबंध, राष्ट्रों के बीच संबंधों की एक नई संरचना की ओर ले जा रहा है। अफ्रीका प्राकृतिक संसाधनों और इसकी उप-मृदा के संदर्भ में अपनी समृद्धि के कारण विश्व भू-राजनीति और भू-अर्थशास्त्र में एक सामरिक स्थान रखता है। इससे विभिन्न शक्तियों के हितों में वृद्धि हुई है, जो पुराने रिश्तों को संशोधित करने के लिए कई रणनीतियों को लागू कर रहे हैं। अफ्रीका को प्रोजेक्ट करने के लिए मंचों की कूटनीति भारत सहित विभिन्न देशों में स्थापित की जा रही है। भारत ने अफ्रीकी महाद्वीप पर अपनी जगह बनाने के लिए 2008, 2011 और 2015 में भारत अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन का आयोजन किया है। भारत के लिए, इसका मतलब अफ्रीका के विकास के पक्ष में कार्यों के माध्यम से दक्षिण-दक्षिण एकजुटता पर जोर देना है, जो तेजी से वैश्वीकृत और अन्योन्याश्रित दुनिया के भीतर संबंधों के पुनर्संतुलन में योगदान दे सकता है।

इस क्षेत्र में एक शक्ति के रूप में अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए, भारत सॉफ्ट पावर कूटनीति का विकास और कार्यान्वयन कर रहा है। भारतीय सॉफ्ट पावर कूटनीति कई कार्रवाइयों के माध्यम से भारतीय परंपरा और संस्कृति को आगे बढ़ा रही है। यह इसके सांस्कृतिक प्रभाव के विकास में योगदान दे रहा है, जो एक सांस्कृतिक कूटनीति पर आधारित है जो भारतीय सांस्कृतिक केंद्रों की स्थापना, छात्रवृत्ति प्रदान करने, छात्रों, सिविल सेवकों, विशेष रूप से राजनयिकों, सेना के लिए प्रशिक्षण, और योग के अभ्यास या हिंदी जैसी भारतीय भाषाओं के सीखने पर निर्भर करता है। भारतीय प्रधानमंत्री ने 2014 से योग को अपनी सांस्कृतिक कूटनीति के प्रमुख बिंदुओं में से एक के रूप में बनाया है कि संयुक्त राष्ट्र की महासभा ने 11 दिसंबर, 2014 को घोषणा की कि 21 जून को अब से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कहा जाएगा [81]। इस संबंध में मेडागास्कर में भारतीय दूतावास ने योग दिवस और भारतीय भाषाओं जैसे हिंदी सीखने के कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया है।

भारत की सॉफ्ट पावर अपने प्रवासियों पर भी निर्भर करती है, जिनकी मेडागास्कर में लंबे समय से उपस्थिति है। भारतीय प्रवासी अच्छी तरह से स्थापित हैं और स्थानीय और राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अलावा, यह देश की अर्थव्यवस्था में अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति से भी प्रतिष्ठित है जहां

भारतीय मूल का अभिजात वर्ग मुख्य आर्थिक समूहों का मालिक है। प्रवासी भारतीयों तक पहुंच की विशेषता जून 2022 में एक प्रवासी केंद्र, भारतीय धोव का उद्घाटन है। यह केंद्र मेडागास्कर में भारतीय प्रवासियों के इतिहास, भूमिका, उपलब्धियों और योगदान की समझ को बढ़ावा देगा। इस तरह की पहल इस सामाजिक समूह के लिए आवश्यक है, जिसे आमतौर पर करण[82] कहा जाता है, पूर्वाग्रहों और पूर्वाग्रहों का उद्देश्य।

इस भू-रणनीतिक अंतरिक्ष के भीतर, दक्षिण-पश्चिम हिंद महासागर के द्वीप शांति और समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए भारत को एक सुरक्षा छतरी के रूप में देखते हैं। मेडागास्कर को भारत क्षेत्रीय विकास के मामले में एक लंगर और एक महत्वपूर्ण ध्रुव के रूप में देखता है। इस संबंध में, भारत द्वारा क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास (सागर कार्यक्रम) के ढांचे के भीतर रणनीतिक कार्रवाइयों की एक श्रृंखला शुरू की गई है, जो भारत-मालागासी संबंधों के नवीकरण का आधार है।

हिंद महासागर में चीन के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करने की अपनी इच्छा में, विशेष रूप से समुद्री सिल्क रोड के माध्यम से, भारत ने हिंद महासागर क्षेत्र में अपने नेतृत्व का दावा करने के लिए समुद्री शासन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति बढ़ाई है। दरअसल, भारत दक्षिण-पश्चिम हिंद महासागर के द्वीपों के करीब आने के लिए रणनीतियों का एक सेट लागू कर रहा है। भारत तेजी से इस क्षेत्र में खुद को एक राजनीतिक और सैन्य शक्ति के रूप में स्थापित कर रहा है, जिसे वह अपने प्रभाव का प्राकृतिक क्षेत्र मानता है।

इस भू-रणनीतिक अंतरिक्ष के भीतर, दक्षिण-पश्चिम हिंद महासागर के द्वीप शांति और समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए भारत को एक सुरक्षा आवरण के रूप में देखते हैं। और मेडागास्कर को भारत द्वारा क्षेत्रीय विकास के मामले में एक लंगर और एक महत्वपूर्ण ध्रुव के रूप में माना जाता है[83]। इस संबंध में, भारत द्वारा क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास (सागर कार्यक्रम) के ढांचे के भीतर सामरिक कार्रवाइयों की एक श्रृंखला शुरू की गई है, जो भारत-मालागासी संबंधों के नवीकरण का आधार है।

भारतीय उपस्थिति अब अधिक स्पष्ट है और इसने विभिन्न रूप ले लिए हैं। मेडागास्कर के प्रति भारतीय विदेश नीति सैन्य और सुरक्षा क्षेत्रों में सॉफ्ट पावर और सहयोग को जोड़ती है। जैसे, 2007 से देश के उत्तर में एक श्रवण स्टेशन स्थापित किया गया है, जो मोजाम्बिक चैनल से निकटता के कारण एक सामरिक स्थान है[84]। यह पहल विशेष रूप से 2008 में हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी की स्थापना के साथ भारतीय नौसेना कूटनीति का हिस्सा है ताकि भारत-प्रशांत क्षेत्र में अपनी भू-राजनीतिक और भू-रणनीतिक भूमिका पर जोर दिया जा सके। यहां तक कि भारत और मेडागास्कर ने वर्ष 2021 के दौरान अनुभव साझा करने और मालागासी नौसेना को विशेषज्ञता के हस्तांतरण के माध्यम से मुख्य रूप से समुद्री क्षेत्र में सुरक्षा सहयोग को सुदृढ़ करने के लिए एक समझौते

पर हस्ताक्षर करके अपने सहयोग में वृद्धि की है। इसके अलावा, दोनों देश संयुक्त सैन्य अभ्यास करने पर सहमत हुए हैं। इन समुद्री पड़ोसियों के बीच संबंधों की तीव्रता सितंबर 2022 में यूएनजीए के मौके पर विदेश मंत्रियों के बीच एक बैठक से प्रकट हुई थी। यह आईओआर के भीतर अपनी नौसैनिक उपस्थिति बढ़ाने की भारत की इच्छा का हिस्सा है। भारत ने हिंद महासागर 85 में अपनी नौसैनिक उपस्थिति का विस्तार किया है[85]।

मेडागास्कर के राजनयिक और रणनीतिक अभिविन्यास की एक स्पष्ट परिभाषा क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों आयामों में आवश्यक है, जिसमें इस क्षेत्र में अपनी संपत्ति से अवगत एक नौसैनिक राष्ट्र के रूप में दिखाई देने के लिए इसकी कूटनीति के नौसैनिक घटक पर जोर दिया गया है।

हिंद महासागर में भारत के क्रियाकलाप

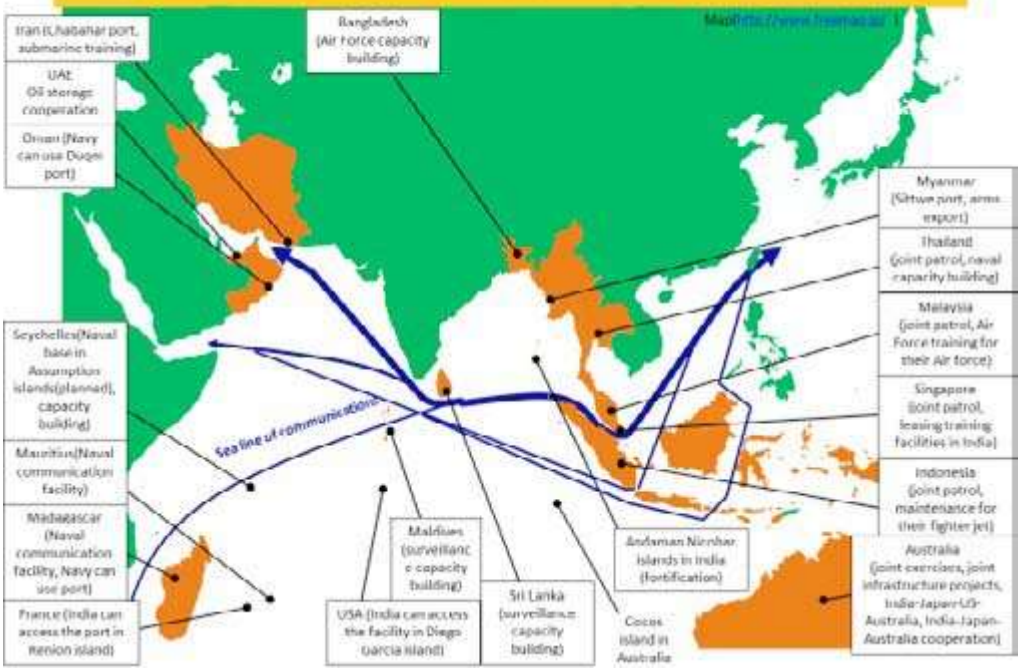

मेडागास्कर एक पारगमन राष्ट्र या एक नौसेना राष्ट्र?

लगातार राजनीतिक शासनों की नाजुकता और एक अच्छी तरह से स्थापित विदेश नीति की अनुपस्थिति, जैसे कि श्वेत-पत्र या यहां तक कि एक सामरिक दस्तावेज, मेडागास्कर की स्थिति को कमजोर करता है। यहां तक कि जिबूती जैसे राष्ट्र के विपरीत इसकी बहिर्मुखता की कूटनीति मिश्रित परिणामों की ओर ले जाती है। वास्तव में मालागासी शासन की नाजुकता भागीदारों के आत्मविश्वास को नहीं बढ़ाती है और बहिर्मुखता की अपनी रणनीति की सफलता को कम करती है। इसके अलावा, कम विविधीकरण और

मालागासी अर्थव्यवस्था की प्रतिस्पर्धात्मकता की कमी इसे अपनी समृद्ध क्षमता के बावजूद बड़ी संख्या में साझेदारी का निष्कर्ष निकालने की अनुमति नहीं देती है। हालांकि, मेडागास्कर, अपनी चौतरफा कूटनीति और अपनी सकारात्मक तटस्थता के माध्यम से, आईओआर और यहां तक कि हिंद-प्रशांत में शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा के सामने अपनी सामरिक स्थिति का कार्ड खेलता है। इस प्रकार, देश के पास अपने हितों पर जोर देने के लिए पैंतरेबाज़ी करने के लिए जगह होनी चाहिए, जिनमें से पहला अपने आर्थिक और सामाजिक विकास में भागीदारी है, और पहेली के लापता टुकड़े या आईओआर के नियंत्रण के लिए पारगमन राष्ट्र के रूप में काम नहीं करता है। इस परिप्रेक्ष्य से, मेडागास्कर के राजनयिक और सामरिक अभिविन्यास की एक स्पष्ट परिभाषा क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों आयामों में आवश्यक है, जिसमें इस क्षेत्र में अपनी संपत्ति से अवगत एक नौसैनिक राष्ट्र के रूप में दिखाई देने के लिए इसकी कूटनीति के नौसैनिक घटक पर जोर दिया गया है। यह सामरिक पुनर्स्थापना इसे लगातार बदलती दुनिया में पल की शक्तियों के साथ काम करने में सक्षम बनाएगी।

टिप्पणियां

आर एस वासन

भारत सहित समुद्री देशों के लिए विशेष आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) का प्रबंधन महत्वपूर्ण है। भारत में लगभग 2.01 मिलियन वर्ग किलोमीटर क्षेत्र है जिसे अंडमान और निकोबार के आसपास के समुद्री क्षेत्र सहित प्रबंधित करने की आवश्यकता है। भारत को संरचित और नियोजित समुद्री अर्थव्यवस्था पहलों के माध्यम से महासागरों के दोहन के तरीकों को अनुकूलित करने की आवश्यकता है।

एडमिरल महान और सरदार पणिक्कर दोनों ने समुद्री शक्ति की क्षमता के बारे में बात की, डॉ संजया बारू और एडमिरल मुरलीधरन ने उद्धृत किया। अन्य वक्ताओं द्वारा कुछ अच्छी तरह से स्थापित सिद्धांतों का उल्लेख किया गया है। एक राष्ट्र की समुद्री शक्ति के घटकों पर चर्चा करते समय, भौगोलिक स्थिति एक महत्वपूर्ण कारक है। हिंद महासागर के द्वीपीय राष्ट्रों के स्थान को देखने की आवश्यकता है। वे कैसे महत्वपूर्ण हो गए हैं? यह उनके भौतिक स्थान के कारण है, चाहे वह अफ्रीकी तट के करीब मेडागास्कर हो या सेशेल्स, या मॉरीशस, या मालदीव।

क्षेत्र में स्थान उस तरीके को परिभाषित करता है जिसमें समुद्री संबंध आयोजित किए जाते हैं। इन द्वीप राष्ट्रों का स्थान उनके भू-राजनीतिक, भू-रणनीतिक और भू-आथक प्रोफाइल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राष्ट्रों के विकास प्रक्षेपवक्र को पूरक करते हुए स्थान और भौगोलिक रूपरेखा भी सुरक्षा चिंताओं को दूर करने में मदद करती है। भारत के समुद्री मानचित्र पर एक नज़र डालने से संचार के समुद्री लेन (एसएलओसी) के साथ शिपिंग का घनत्व सामने आता है जो कनेक्टिविटी के अवसरों के साथ-साथ चुनौतियों को भी लाता है। लगभग 60,000 जहाज हर वर्ष एसएलओसी के माध्यम से गुजरते हैं, जो इन द्वीप राष्ट्रों के बहुत करीब हैं। हालांकि, जैसा कि राजदूत मुदगल ने अपनी टिप्पणी में कहा है, उनके पास ईईजेड की निगरानी करने की क्षमता नहीं है। केवल 0.25% या 0.3% मानव शक्ति ईईजेड के प्रत्येक वर्ग किलोमीटर की देखभाल कर रही है जो समुद्री मार्गों की नियमित निगरानी में एक बाधा है। यह वह जगह है जहां द्वीप राष्ट्रों को भारत जैसे मित्र राष्ट्रों की ओर देखने की आवश्यकता है, जो सहायता प्रदान कर सकते हैं, जो उनकी निगरानी के दायरे का विस्तार करने के लिए आवश्यक है। समुद्री अर्थव्यवस्था पहल सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को अनुकूलित करने के लिए समुद्री देशों के बीच भारी सहयोग की भी मांग करती है।

वसुधैव कुटुम्बकम के विचार के ढांचे के भीतर, भारत इस क्षेत्र के छोटे द्वीप राष्ट्रों के साथ जुड़ने के मामले में सही रास्ते पर है, जिसका अर्थ है कि दुनिया एक परिवार है। चीन के विपरीत, जिसने चेक बुक कूटनीति को आगे बढ़ाते हुए कई देशों को ऋण जाल में फंसाने के रास्ते पर ले जाया है, भारत सागर की सच्ची भावना के साथ, क्षेत्र में भागीदारों के बीच एक साझा समृद्धि और सुरक्षा सुनिश्चित करना चाहता है।

द्वीपीय देशों को भारत जैसे मित्र राष्ट्रों की ओर देखने की आवश्यकता है, जो सहायता प्रदान कर सकते हैं, जो उनकी निगरानी के दायरे का विस्तार करने के लिए आवश्यक है।

सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में और अपने पड़ोसियों के साथ अपने जुड़ाव की उदार प्रकृति के साथ, भारत को हिंद महासागर में किसी भी द्वीप राष्ट्र के साथ अपने संबंधों का लेन-देन करना आसान लगता है।

दक्षिण के शीर्ष पर भारत का एक उलटा नक्शा यह स्पष्ट करता है कि भारत को कितने विशाल समुद्री क्षेत्रों का समर्थन प्राप्त है। आईओआर में इन द्वीपों के सापेक्ष स्थानों के कारण वे इस क्षेत्र में समुद्री गतिशीलता के एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मेडागास्कर जो अफ्रीकी तट, कोमोरोस और सेशेल्स के करीब है, अपनी समुद्री गतिशीलता के साथ, इन द्वीप राष्ट्रों की वृद्धि और समृद्धि भारत के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। चाहे आर्थिक विकास हो, समुद्री अर्थव्यवस्था हो, शिक्षा हो, और प्रौद्योगिकी हो, भारत एक उदार भागीदार के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

चागोस द्वीपों के मुद्दे पर, भारत को यह सुनिश्चित करने में भूमिका निभानी है कि यह उनके मूल मालिकों को वापस कर दिया जाए। मूल निवासियों को स्वामित्व से वंचित करने के लिए, इस क्षेत्र में अन्य शक्तियों द्वारा द्वीप को किसी प्रकार के आर्थिक, पर्यावरणीय शोपीस में बदलने के प्रयास हैं। इसलिए भारत को मूल निवासियों के अधिकार को बहाल करने के लिए इस मुद्दे पर मॉरीशस और अन्य पड़ोसियों के साथ हाथ मिलाना चाहिए।

भारत को एक प्रमुख सुरक्षा प्रदाता, प्रथम उत्तरदाता, प्रमुख सुरक्षा सुविधाप्रदाता और प्रमुख समन्वयक के रूप में वर्णित करने के लिए कई शब्दों का उपयोग किया गया है। भौगोलिक स्थिति, जीवंत अर्थव्यवस्था, लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष साख के कारण, भारत इस क्षेत्र में एक प्रमुख भूमिका निभाने के लिए नियत है। सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में और अपने पड़ोसियों के साथ अपने जुड़ाव की उदार प्रकृति के साथ, भारत को हिंद महासागर में किसी भी द्वीप राष्ट्र के साथ अपने संबंधों का लेन-देन करना आसान लगता है।

हिंद महासागर एकमात्र महासागर है जिसका नाम किसी देश के नाम पर रखा गया है। इसके बावजूद, भारत ने ऐसी कोई धारणा नहीं बनाई है कि वह महासागर का मालिक है। इसके विपरीत, यह अपने आसपास के देशों के भाग्य में एक रचनात्मक भूमिका निभाना चाहेगा। सागर और समुद्री अर्थव्यवस्था पहल का पूरा उद्देश्य यही है। भारतीय नौसेना आईओआर में उचित रूप से एक क्षेत्रीय महाशक्ति है। किसी अन्य नौसेना के पास आईओआर में क्षेत्रीय शक्ति होने की योग्यता नहीं है।

मोती की स्ट्रिंग, घेराबंदी आदि जैसे शब्द... आईओआर में द्वीपों के साथ चीन के सक्रिय जुड़ाव का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। इस क्षेत्र में अतिरिक्त क्षेत्रीय नायकों की भागीदारी सामरिक, राजनीतिक और आर्थिक मामलों पर असर डालती है। लेकिन, भारत सदियों से फैले ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों के संदर्भ में छोटे पड़ोसियों के साथ जुड़ना पसंद करता है। समुद्री जुड़ाव और सुरक्षा आवश्यकताओं के संदर्भ में, भारत को द्वीप राष्ट्रों की आकांक्षाओं को समायोजित करना होगा और राजनीतिक और आर्थिक सहायता प्रदान करने के तरीके खोजने होंगे। फ्रांस जैसे समान विचारधारा वाले भागीदारों के साथ भारत की प्रतिक्रियाओं को सुसंगत करना भी आवश्यक है, जिसके पास आईओआर में सबसे बड़ा ईईजेड है।

अंत में, यह कहा जा सकता है कि भारत छोटे द्वीप राष्ट्रों के साथ समुद्री संबंधों का पोषण कर रहा है और ऐतिहासिक और सभ्यतागत संबंध समुद्री क्षेत्र में जुड़ाव प्रोफ़ाइल को बढ़ाने के लिए एक दृढ़ आधार प्रदान करते हैं।

कार्यक्रम

हिंद महासागर में भारत और द्वीप राष्ट्रों

पर

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी विकसित

भू-राजनीति और सुरक्षा परिप्रेक्ष्य

6 सितंबर 2022

स्थान: वर्चुअल प्लेटफॉर्म

1200 – 1230 बजे	**उद्घाटन सत्र**
1200-1205 बजे	स्वागत अभिभाषण राजदूत विजय ठाकुर सिंह *महानिदेशक,* *भारतीय वैश्विक परिषद*
1205-1225 बजे	मुख्य भाषण संजया बारू, *सदस्य, शासी निकाय* *भारतीय विश्व मामलों की परिषद*

1230 – 1355 बजे	**सत्र 1:** **दक्षिणी पड़ोस: श्रीलंका और मालदीव**
1230-1240 बजे	अध्यक्ष, राजदूत अशोक कंठ की टिप्पणी, *श्रीलंका में भारत के पूर्व उच्चायुक्त* **वक्ता**
1240-1255 बजे	डॉ. असंगा अबेयागूनासेकरा **(श्रीलंका)** *भू-राजनीतिक विश्लेषक, सुरक्षा पर सामरिक सलाहकार और लेखक, सीनियर फेलो, द मिलेनियम प्रोजेक्ट, वाशिंगटन डीसी*
1255-1310 बजे	श्री अथुल्ला ए रशीद (**मालदीव**) *प्रशांत मामलों के विभाग, ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, विदेश मंत्रालय में पूर्व राजनयिक*
1310-1325 बजे	डॉ. एन. मनोहरन **(भारत)**

निदेशक, सेंटर फॉर ईस्ट एशियन स्टडीज, एसोसिएट प्रोफेसर,
अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन विभाग, क्राइस्ट विश्वविद्यालय, बैंगलोर

1325-1340 बजे — वाइस एडमिरल (सेवानिवृत्त) एम पी मुरलीधरन **(भारत)**
पूर्व महानिदेशक, भारतीय तटरक्षक बल

1340-1355 बजे — क्यू एंड ए

1400 – 1540 बजे

1400-1410 बजे — अध्यक्ष की टिप्पणी

राजदूत अनूप मुद्गल
मॉरीशस में भारत के पूर्व उच्चायुक्त

वक्ता

1410-1425 बजे — सुश्री माल्शिनी सेनारत्ने (**सेशेल्स**)
सहायक विभागाध्यक्ष, व्यापार और सतत विकास संकाय,
सेशेल्स विश्वविद्यालय

1425-1440 बजे — डॉ. प्रिया बहादूर, **मॉरीशस**
व्याख्याता, सामाजिक विज्ञान और मानविकी संकाय,
मॉरीशस विश्वविद्यालय

1440-1455 बजे — डॉ. रामासी **(मेडागास्कर)**
व्याख्याता, टोमासीना विश्वविद्यालय, मेडागास्कर

1510-1525 बजे — कमोडोर (सेवानिवृत्त) आरएस वासन (**भारत**)
निदेशक, चेन्नई सेंटर फॉर चाइना स्टडीज, चेन्नई

1540-1545 बजे — धन्यवाद ज्ञापन

डॉ. निवेदिता रे
निदेशक अनुसंधान, आईसीडब्ल्यूए

लेखकों के बारे में

राजदूत विजय ठाकुर सिंह

महानिदेशक, भारतीय वैश्विक परिषद

राजदूत विजय ठाकुर सिंह ने हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में मास्टर डिग्री हासिल की है। वह 1985 में भारतीय विदेश सेवा में शामिल हुईं। उनकी पहली पोस्टिंग मैड्रिड, स्पेन में भारतीय दूतावास में थी, जहां वह बाद में 2006 में मिशन के उप प्रमुख के रूप में गईं। उन्होंने 1989 से 1999 तक विदेश मंत्रालय में काम किया, अफगानिस्तान और पाकिस्तान के साथ भारत के संबंधों को संभाला। वह 2003 से 2005 तक काबुल में भारतीय दूतावास में काउंसलर के रूप में तैनात थीं। उनके पास बहुपक्षीय अनुभव है, विशेष रूप से आर्थिक और पर्यावरणीय मुद्दों में। वह 2000 से 2003 तक न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी मिशन में काउंसलर थीं। उन्होंने अगस्त 2007 से अगस्त 2012 तक भारत के राष्ट्रपति के संयुक्त सचिव और 2012 से 2013 तक राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय (एनएससीएस) में संयुक्त सचिव के रूप में कार्य किया है। वह 2013 से 2016 तक सिंगापुर में भारत की उच्चायुक्त और 2016 से 2018 तक आयरलैंड में भारत की राजदूत रही हैं। 2018 से दो वर्ष के लिए, वह विदेश मंत्रालय में सचिव (पूर्व) थीं और सितंबर 2020 में सेवानिवृत्त हुईं। उन्होंने जुलाई 2021 में आईसीडब्ल्यूए के डीजी के रूप में पदभार संभाला था।

संजया बारू

सदस्य शासी निकाय, भारतीय वैश्विक परिषद

डॉ. संजया बारू मनोहर पर्रिकर इंस्टीट्यूट फॉर डिफेंस स्टडीज एंड एनालिसिस (एमपी-आईडीएसए) और यूनाइटेड सर्विस इंस्टीट्यूशन ऑफ इंडिया (यूएसआई) में प्रतिष्ठित फेलो हैं। वह भारत के प्रमुख वित्तीय समाचार पत्रों, द इकोनॉमिक टाइम्स, फाइनेंशियल एक्सप्रेस और बिजनेस स्टैंडर्ड के संपादक रहे हैं। वह प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के मीडिया सलाहकार और इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्ट्रैटेजिक स्टडीज, लंदन में भू-अर्थशास्त्र और रणनीति के निदेशक थे। वह हैदराबाद विश्वविद्यालय, अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंधों पर अनुसंधान के लिए भारतीय परिषद और ली कुआन यू स्कूल ऑफ पब्लिक पॉलिसी, सिंगापुर में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर थे। वह फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के महासचिव थे। उनके प्रकाशनों में भारत के आर्थिक उदय के सामरिक परिणाम, भारत और दुनिया: भू-अर्थशास्त्र और विदेश नीति पर निबंध, द एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर: द मेकिंग एंड अनमेकिंग ऑफ मनमोहन सिंह और 1991: पीवी नरसिम्हा राव ने इतिहास कैसे बनाया और बॉम्बे प्लान: ए ब्लूप्रिंट फॉर इकोनॉमिक रीसर्जेंस (2018) शामिल हैं।

असांगा अबेयगूनसेकेरा (श्रीलंका)

भू-राजनीतिक विश्लेषक, सुरक्षा पर सामरिक सलाहकार और लेखक,
वरिष्ठ फेलो, द मिलेनियम प्रोजेक्ट, वाशिंगटन डीसी

डॉ असंगा अबेयागूनासेकरा श्रीलंका के एक अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा और भू-राजनीति विश्लेषक और सामरिक सलाहकार हैं। उन्होंने सामरिक वकालत प्रदान करने वाले दो सरकारी थिंक टैंक का नेतृत्व किया है। विदेश नीति और रक्षा थिंक टैंक में काम करने के लिए सलाहकार पदों पर सरकारी क्षेत्र में लगभग दो दशकों के अनुभव के साथ, वह जनवरी 2020 तक रक्षा मंत्रालय (आईएनएसएसएसएल) के तहत राष्ट्रीय सुरक्षा थिंक टैंक के संस्थापक महानिदेशक थे। इससे पहले, उन्होंने कादिरगामर इंस्टीट्यूट (LKIIRSS) में कार्यकारी निदेशक के रूप में कार्य किया।

असंगा की आगामी पुस्तक श्रीलंका की भू-राजनीतिक चुनौतियों पर एक द्वीप की पहेली (विश्व वैज्ञानिक, सिंगापुर) पर है। वह श्रीलंका एट क्रॉसरोड्स (2019) और टुवर्ड्स ए बेटर वर्ल्ड ऑर्डर (2015) के लेखक हैं। असंगा ने भू-राजनीति और वैश्विक नेतृत्व (एनकेयू, यूएसए), अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए विजिटिंग लेक्चरर (कोलंबो विश्वविद्यालय, श्रीलंका), अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था (कोलंबो आरआईसी में लंदन विश्वविद्यालय) के लिए विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। असंगा मिलेनियम प्रोजेक्ट फोरसाइट इनिशिएटिव ग्लोबल थिंक टैंक (वाशिंगटन डीसी) के नोड चेयर और विश्व आर्थिक मंच के यंग ग्लोबल लीडर हैं।

अताउल्ला ए रशीद (मालदीव)

प्रशांत मामले विभाग, ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, विदेश मंत्रालय में पूर्व राजनयिक

डॉ अथुल्ला ए रशीद ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट विद्वान हैं। ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के प्रशांत मामलों के विभाग में उनकी शैक्षणिक छात्रवृत्ति में छोटे द्वीप विकासशील राष्ट्रों में जलवायु सुरक्षा के लिए विकासशील ढांचे और क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा सहयोग के लिए उनके निहितार्थ शामिल हैं। अथौल्ला ने कई अंतरराष्ट्रीय सहकर्मी-समीक्षा और नीति पत्रिकाओं में भी प्रकाशित किया है, जिसमें मालदीव और दक्षिण एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र में भू-राजनीतिक प्रतियोगिताओं को शामिल किया गया है, जिसमें भारत-प्रशांत द्वीप राष्ट्रों में जलवायु सुरक्षा के निहितार्थ शामिल हैं। वह एएनयू में अकादमिक भूमिका निभाते हैं और प्रशांत और हिंद महासागर एजेंसियों के साथ अकादमिक और नीतिगत संबद्धता रखते हैं। अथुल्ला ने पूर्व में मालदीव के विदेश मंत्रालय में राजनयिक और विदेश सेवा अधिकारी के रूप में भी काम किया है। मालदीव की राजनीति और शासन में उनकी लंबे समय से पेशेवर और अकादमिक विशेषज्ञता रही है।

एन. मनोहरन

निदेशक, पूर्वी एशियाई अध्ययन केंद्र, एसोसिएट प्रोफेसर, अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन,
राजनीति विज्ञान और इतिहास विभाग, क्राइस्ट विश्वविद्यालय, बैंगलोर

डॉ. एन. मनोहरन सेंटर फॉर ईस्ट एशियन स्टडीज के निदेशक और क्राइस्ट यूनिवर्सिटी, बेंगलुरु में इंटरनेशनल स्टडीज के एसोसिएट प्रोफेसर हैं। इससे पहले उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय (एनएससीएस), पीएमओ, नई दिल्ली में कार्य किया था। वह ईस्ट-वेस्ट सेंटर वाशिंगटन में दक्षिण एशिया फेलो थे और अनुसंधान के लिए महबूब-उल-हक अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार के प्राप्तकर्ता हैं।

उनके हित के क्षेत्रों में आंतरिक सुरक्षा, आतंकवाद, श्रीलंका, मालदीव, मानवाधिकार, जातीय संघर्ष, बहुसंस्कृतिवाद, सुरक्षा क्षेत्र में सुधार और संघर्ष समाधान शामिल हैं।

उनकी मुख्य पुस्तकें हैं:

- *Developing Democracies, Counter-terror Laws and Security: Lessons from India and Sri Lanka*;
- '*Security Deficit': A Comprehensive Internal Security Strategy for India*;
- *India's War on Terror*;
- *SAARC: Towards Greater Connectivity*;
- *Ethnic Violence and Human Rights in Sri Lanka*; and
- *Counterterrorism Legislation in Sri Lanka: Evaluating Efficacy*.

उनकी आगामी पुस्तक *विदेश नीति के संघीय पहलू: भारत-श्रीलंका संबंधों में तमिलनाडु मछुआरों की भूमिका* (रूटलेज) *पर है*।

वे प्रमुख समाचार पत्रों, वेबसाइटों और प्रतिष्ठित सहकर्मी-समीक्षा अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं के लिए नियमित रूप से लिखते हैं।

वाइस एडमिरल (सेवानिवृत्त) एम पी मुरलीधरन

पूर्व महानिदेशक, भारतीय तटरक्षक बल

वाइस एडमिरल एम.पी. मुरलीधरन, राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, खडकवासला के पूर्व छात्र, को 01 जनवरी 1975 को भारतीय नौसेना में कमीशन किया गया था। वह नेविगेशन और दिशा में एक विशेषज्ञ हैं और रक्षा अध्ययन में स्नातकोत्तर की डिग्री भी रखते हैं। लगभग चार दशकों के करियर में, एडमिरल ने कई प्रमुख परिचालन और स्टाफ नियुक्तियां की हैं। उन्होंने गाइडेड मिसाइल डिस्ट्रॉयर रणविजय सहित तीन युद्धपोतों की कमान संभाली है और पश्चिमी बेड़े के फ्लीट ऑपरेशंस ऑफिसर और रक्षा मंत्रालय (नौसेना) के एकीकृत मुख्यालय में नौसेना संचालन के प्रधान निदेशक रहे हैं। वह डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कॉलेज (वेलिंगटन) में स्टाफ को निर्देशित कर रहे थे, नौसेना स्टाफ के प्रमुख के नौसेना सहायक और भारतीय दूतावास, मॉस्को में नौसेना अताशे।

रियर एडमिरल के रूप में फ्लैग रैंक में पदोन्नति पर, वह कोच्चि में फ्लैग ऑफिसर सी ट्रेनिंग, चीफ ऑफ स्टाफ, मुंबई में पश्चिमी नौसेना कमान थे और फ्लैग ऑफिसर कमांडिंग, महाराष्ट्र और गुजरात नौसेना क्षेत्र की परिचालन नियुक्ति भी की। वाइस एडमिरल के रूप में पदोन्नति पर, वह एझिमाला में भारतीय नौसेना अकादमी के पहले कमांडेंट बने। इसके बाद, वह भारतीय तटरक्षक बल के 19वें महानिदेशक के रूप में पदभार संभालने से पहले नौसेना मुख्यालय में कार्मिक प्रमुख बने, जहां से वह फरवरी 2013 में सेवानिवृत्त हुए।

राजदूत अनूप मुदगल

मॉरीशस में भारत के पूर्व उच्चायुक्त

भारतीय विदेश सेवा (आईएफएस) के सदस्य, राजदूत अनूप के. मुदगल मई 2016 में मॉरीशस में भारत के उच्चायुक्त के रूप में सेवानिवृत्त हुए। अपने 32 वर्षों के राजनयिक करियर के हिस्से के रूप में, उन्होंने भारत के पड़ोस, आसियान क्षेत्र, रूसी संघ और मध्य और पूर्वी यूरोप के कुछ देशों के साथ संबंधों के साथ-साथ मानव संसाधन विकास से संबंधित मुद्दों को संभालने के लिए विदेश मंत्रालय के मुख्यालय में तीन बार कार्य किया।

विदेश में अपने आठ कार्यों के हिस्से के रूप में, राजदूत मुदगल ने मेक्सिको (नाफ्टा मामलों सहित), पेरू, पूर्व यूगोस्लाविया, बेल्जियम (यूरोपीय संघ के मामलों सहित), जर्मनी, ऑस्ट्रिया (आईएईए, यूनिडो, यूएनओडीसी, यूएनओओएसए, यूएनसीआईटीआरएएल) और मॉरीशस (आईओआरए सहित) में भारतीय मिशनों में विभिन्न पदों पर कार्य किया।

सेवानिवृत्ति के बाद, राजदूत मुद्गल कई स्वैच्छिक कार्य कर रहें हैं, जिनमें से महत्वपूर्ण हैं: सदस्य, समुद्री अर्थव्यवस्था पर फिक्की टास्क फोर्स; पीएमईएसी के तहत समुद्री अर्थव्यवस्था पर संचालन समिति के सदस्य, और सुरक्षा, सामरिक आयामों और अंतर्राष्ट्रीय जुड़ाव पर एक कार्य समूह की अध्यक्षता की; सदस्य, कलिंग इंटरनेशनल फाउंडेशन की कोर टीम; पूर्व अध्यक्ष, डायस्पोरा समिति, एआरएसपी; पूर्व संयुक्त सचिव, एसोसिएशन ऑफ इंडियन डिप्लोमेट्स; विभिन्न उच्च शिक्षा और व्यावसायिक संस्थानों में अतिथि व्याख्यान।

सुश्री माल्शिनी सेनारत्ने (सेशेल्स)

सहायक विभागाध्यक्ष, व्यापार और सतत विकास संकाय, सेशेल्स विश्वविद्यालय

माल्शिनी सेनारत्ने सेशेल्स विश्वविद्यालय में व्यवसाय और सतत विकास संकाय में सहायक विभागाध्यक्ष हैं, और इको-सोल कंसल्टिंग सेशेल्स की निदेशक हैं। अर्थशास्त्र, व्यवसाय और विकास अध्ययनों में पृष्ठभूमि के साथ, उन्होंने ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन, हिंद महासागर क्षेत्र के जर्नल और सेशेल्स रिसर्च जर्नल के लिए समुद्री अर्थव्यवस्था से संबंधित व्यापक शोध प्रकाशित किया है। माल्शिनी वर्तमान में माल्टा विश्वविद्यालय में द्वीप समूह और छोटे राष्ट्रों के कार्यक्रम में पीएच.डी. उम्मीदवार हैं।

प्रिया बहादूर, (मॉरीशस)

व्याख्याता, सामाजिक विज्ञान और मानविकी संकाय, मॉरीशस विश्वविद्यालय

डॉ. प्रिया बहादूर ने मॉरीशस विश्वविद्यालय से यूनिवर्सिटी डी ला रियूनियन मास्टर्स इन हिस्टोरिकल स्टडीज (रिसर्च द्वारा) से पीएच.डी. पूरी की है। वह वर्तमान में इतिहास और राजनीति विज्ञान विभाग के तहत मॉरीशस विश्वविद्यालय में 2 वर्ष के अनुबंध पर इतिहास पढ़ा रही हैं।

डॉ. जुवेंस रामासी (मेडागास्कर)

व्याख्याता, टोमासिना विश्वविद्यालय, मेडागास्कर

राजनीतिक और चुनाव विशेषज्ञ, जुवेंस मेडागास्कर में पैक्ट परियोजना के समर्थन में हैं। जुवेंस मेडागास्कर के टोमासिना विश्वविद्यालय में एक व्याख्याता हैं, जहां वह संवैधानिक कानून पढ़ाते हैं। वह टूलूज़ 1 कैपिटोल, फ्रांस विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में पीएच.डी. हैं। उनकी थीसिस: "दक्षिण-पश्चिम हिंद महासागर के द्वीपों में लोकतंत्र का राष्ट्र और कार्यान्वयन: मेडागास्कर और मॉरीशस का मामला विषय पर थी। वह 2011 में इंस्टीट्यूट ऑफ डिप्लोमेसी ऑफ चाइना में विजिटिंग स्कॉलर रह चुके हैं। 2012 में, वह इंस्टीट्यूट डी'एट्यूड्स पॉलिटिक्स डी ल्योन (फ्रांस) और इंस्टीट्यूट डी'एट्यूड्स पॉलिटिक्स डी टूलूज़ (फ्रांस) में विजिटिंग प्रोफेसर थे। 2013 में, वह लीडेन (नीदरलैंड) के अफ्रीकी अध्ययन केंद्र में विजिटिंग स्कॉलर थे। उन्होंने कई वैज्ञानिक सम्मेलनों में भाग लिया है जहां उन्होंने मेडागास्कर से संबंधित राजनीतिक और चुनावी मुद्दों के बारे में प्रस्तुत किया। अंत में, उन्होंने मालागासी संदर्भ में लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया पर कई लेख प्रकाशित किए हैं। उनका वर्तमान शोध उप-सहारा अफ्रीका में राष्ट्र, अभिजात वर्ग, सेना, चुनाव और लोकतंत्र के मुद्दों पर केंद्रित है।

प्रोफिसर ए सुब्रमण्यम राजू,

डीन, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, प्रोफेसर और प्रमुख, उमिसाआरसी
और दक्षिण एशियाई अध्ययन केंद्र, पांडिचेरी विश्वविद्यालय

अदलुरी सुब्रमण्यम राजू यूनेस्को मदनजीत सिंह इंस्टीट्यूट ऑफ साउथ एशिया रीजनल कोऑपरेशन (यूएमआईएसएआरसी) और सेंटर फॉर साउथ एशियन स्टडीज के प्रोफेसर और पूर्व प्रमुख और पांडिचेरी विश्वविद्यालय, भारत में यूजीसी सेंटर फॉर मैरीटाइम स्टडीज के समन्वयक हैं। उन्हें महबूब उल हक पुरस्कार (रीजनल सेंटर फॉर स्ट्रेटेजिक स्टडीज, कोलंबो, श्रीलंका), स्कॉलर ऑफ पीस अवार्ड (सुरक्षा, संघर्ष प्रबंधन और शांति में महिलाएं, नई दिल्ली, 2002) और कोडिकारा पुरस्कार (रीजनल सेंटर फॉर स्ट्रेटेजिक स्टडीज, कोलंबो, 1998) से सम्मानित किया जा चुका है। वह एक साल्ज़बर्ग सेमिनार फेलो (2006) थे। उन्हें राष्ट्रीय सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार (सीवीएस कृष्णमूर्ति थेजा चैरिटीज, तिरुपति, 2017) और दो बार सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार (पांडिचेरी विश्वविद्यालय, 2013 और 2018) मिला। वह फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के समुद्री अर्थव्यवस्थापर तीसरे टास्क फोर्स के सदस्य हैं। वह पहले भंडारनायके सेंटर फॉर इंटरनेशनल स्टडीज, कोलंबो, श्रीलंका में विजिटिंग फेलो थे। वह पांच पत्रिकाओं के संपादकीय बोर्डों में हैं।

कमोडोर (सेवानिवृत्त) आरएस वासन

निदेशक, चेन्नई सेंटर फॉर चाइना स्टडीज

डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कॉलेज, नेवल वॉर कॉलेज और इंटरनेशनल विजिटर लीडरशिप प्रोग्राम के पूर्व छात्र कोमोडोर शेषाद्री वासन ने नौसेना और तटरक्षक बल में 34 वर्ष से अधिक समय तक विशिष्ट सेवा की है। उनकी नियुक्तियों में युद्धपोतों की कमान, दो प्रमुख हवाई स्टेशन और एक समुद्री वायु स्क्वाड्रन शामिल हैं। उन्होंने 1971 के युद्ध और आईपीकेएफ अभियानों दोनों में भाग लिया है। वह नौसेना युद्ध कॉलेज, भारत में एक प्रशिक्षक थे। सेवानिवृत्ति से पहले, वह भारतीय तटरक्षक क्षेत्र पूर्व के क्षेत्रीय कमांडर थे, जो ईईजेड गश्ती, एसएआर, एंटी-पाइरेसी, मत्स्य सुरक्षा, समुद्री सीमा नियंत्रण, समुद्री प्रदूषण की रोकथाम और बंगाल की खाड़ी में अन्य समुद्री कार्यों की देखरेख करते थे।

सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने कई थिंक टैंक में सेवा की है और कई अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय सम्मेलनों में नियमित वक्ता हैं। वह एयरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया, चेन्नई चार्टर के अध्यक्ष और विश्व सीमा पुलिस के एशियाई ब्यूरो के निदेशक भी थे। पत्रिकाओं, वेबसाइटों, संपादित पुस्तकों और मीडिया में उनके कई प्रकाशन हैं।

उन्होंने ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन में काम किया है, जहां उन्होंने समुद्री सुरक्षा कार्यक्रम और एशिया अध्ययन केंद्र का संचालन किया, जहां वह रणनीति और सुरक्षा अध्ययन के प्रमुख थे। वह वर्तमान में चेन्नई सेंटर ऑफ चाइना स्टडीज के महानिदेशक, नेशनल मैरीटाइम फाउंडेशन तमिलनाडु के क्षेत्रीय निदेशक और नेवी फाउंडेशन चेन्नई चैप्टर के अध्यक्ष हैं। वह भारतीय समुद्री विश्वविद्यालय, समुद्री शिक्षा और प्रशिक्षण अकादमी, ग्रेट लेक्स इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट और हिंदुस्तान इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजी में विजिटिंग फैकल्टी भी हैं। वह मद्रास विश्वविद्यालय, स्टेला मैरिस कॉलेज और पांडिचेरी विश्वविद्यालय में सलाहकार बोर्ड में भी हैं।

पाद-टिप्पणियाँ

[1]के.एम. पन्नीकर, *भारत और हिंद महासागर: भारतीय इतिहास पर समुद्री शक्ति के प्रभाव पर एक निबंध,* जॉर्ज एलन एंड अनविन, लंदन, 1945, दूसरा संस्करण, 1951, पृष्ठ 23. मुझे सिंगापुर के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में 1951 संस्करण की एक प्रति मिली। पुस्तक पर "मलाया पुस्तकालय विश्वविद्यालय" की मुहर थी, सितंबर 1960". मैंने 2008-09 में ली कुआन यू स्कूल ऑफ पब्लिक पॉलिसी में अपने कार्यकाल के दौरान इस पुस्तक को पढ़ा था। प्रिंट किताब उपलब्ध नहीं थी। मैंने भारत में नेशनल मैरीटाइम फाउंडेशन से इस क्लासिक को फिर से छापने का आग्रह किया है। हिंद महासागर क्षेत्र में भारतीय समुद्री गतिविधि के अन्य महत्वपूर्ण अध्ययनों में शामिल हैं: अशिन दास गुप्ता, *द वर्ल्ड ऑफ द इंडियन ओशन मर्चेंट, 1500-1800,* नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2001; और होल्डन फर्बर, सिन्नापा अरसारत्नाम और केनेथ मैकफर्सन, *मैरीटाइम इंडिया,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2004। हिंद महासागर क्षेत्र की 'अंतर्निहित एकता' के विचार पर, देखें के.एन. चौधरी, *हिंद महासागर में व्यापार और सभ्यता: इस्लाम के उदय से 1750 तक का एक आर्थिक इतिहास,* कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, यूके। हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की समुद्री उपस्थिति के एक और हालिया और लोकप्रिय इतिहास के लिए देखें संजीव सान्याल, *मंथन का महासागर: हिंद महासागर ने मानव इतिहास को कैसे आकार दिया,* पेंगुइन रैंडम हाउस, नई दिल्ली, 2016.

[2]हमंत मैनी और लिपि बुधराजा, *महासागर आधारित समुद्री अर्थव्यवस्था: अंतिम विकास सीमा के रूप में सागर में एक अंतर्दृष्टि,* नीति आयोग, भारत सरकार, https://www.niti.gov.in/writereaddata/files/document_publication/Indian%20Ocean%20Region_v6(1).pdf (21 अगस्त, 2019 को अभिगम्य); अपर्णा रॉय, *हिंद महासागर में समुद्री अर्थव्यवस्था: क्षेत्र में सतत विकास के लिए शासन परिप्रेक्ष्य,* सामयिक पेपर, जनवरी 2019, ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन, पर https://www.orfonline.org/research/blue-economy-in-the-indian-ocean-governance-perspectives-for-sustainable-development-in-the-region-47449/ (21 अगस्त, 2019 को अभिगम्य)।

[3]के.एम. पन्नीकर, नंबर 1, अध्याय 1; अल्फ्रेड महान, *इतिहास पर समुद्री शक्ति का प्रभाव 1660-1783,* लिटिल, ब्राउन एंड कंपनी, बोस्टन। 1890.

[4]फर्नांड ब्राउडेल, *सभ्यता और पूंजीवाद, 15वीं-18वीं शताब्दी: खंड द्वितीय। द व्हील्स ऑफ कॉमर्स,* फोंटाना प्रेस, लंदन, 1982.

[5]पूर्वोक्त, पीपी 484-535

[6]पूर्वोक्त, पीपी 484

[7]संजय सुब्रह्मण्यम, "परिचय", उमा दास गुप्ता (एड.), *आशिन दास गुप्ता के संग्रहित निबंध,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली। 2001, पृष्ठ 9.

[8]आशिन दासगुप्ता, "समुद्री व्यापारी और भारतीय इतिहास", उमा दासगुप्ता, पूर्वोक्त, पृष्ठ 25-26.

[9]उदाहरण के लिए, डेविड स्कॉट, "हिंद महासागर के लिए भारत की 'ग्रैंड स्ट्रैटेजी': महानियन विजन", *एशिया पैसिफिक रिव्यू,* नवंबर 2006; राहुल रॉय चौधरी, *समुद्री शक्ति और भारत की सुरक्षा,* ब्रासी, यूके, 1999; राहुल रॉय चौधरी, *भारत की समुद्री सुरक्षा,* आईडीएसए, नई दिल्ली, 2000; सी राजा मोहन, *समुद्र मंथन, हिंद-प्रशांत में चीन-भारत प्रतिद्वंद्विता,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2013; सी. राजा मोहन, *मोदी और हिंद महासागर: भारत के प्रभाव क्षेत्र को बहाल करना,* आईएसएएस इनसाइट्स नंबर 277, मार्च 2015; सी राजा मोहन, "हिंद महासागर में भारत की नई भूमिका", *संगोष्ठी,* नई दिल्ली, जनवरी 2011 http://india-seminar.com/cd8899/cd_frame8899.html (21 अगस्त, 2019 को अभिगम्य); जोरावर दौलत सिंह, "विदेश नीति और समुद्री शक्ति: भारत की समुद्री भूमिका प्रवाह", *जर्नल ऑफ डिफेंस स्टडीज,* 11 (4), अक्तूबर-दिसंबर 2017, पृष्ठ 21-49.

[10]एस. के. मोहंती, प्रियदर्शी दास, आस्था गुप्ता और पंखुड़ी गौड़, "हिंद महासागर में समुद्री अर्थव्यवस्था की संभावनाएं", विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली, नई दिल्ली, 2015. पर http://www.ris.org.in/sites/default/files/Blue%20Economy_PB_Report_0.pdf (24 अगस्त, 2019 को अभिगम्य); अपर्णा रॉय, नंबर 2 भी देखें।

[11]1 जून, 2018 को सिंगापुर में आईआईएसएस शांगरी ला वार्ता का उद्घाटन भाषण देते हुए नरेंद्र मोदी। पर https://www.mea.gov.in/Speeches-Statements.htm?dtl/29943/Prime+Ministers+Keynote+Address+at+Shangri+La+Dialogue+June+01+2018 (24 अगस्त, 2019 को अभिगम्य)।

[12]जवाहरलाल नेहरू, भारतीय विदेश नीति: चयनित भाषण, भारतीय वैश्विक परिषद, नई दिल्ली में दिए गए, 22 मार्च 1949, भारत त्रैमासिक, खंड 41, नंबर 1, जनवरी-मार्च 1985, पृष्ठ 78।

[13]मनमोहन सिंह, संयुक्त कमांडरों के सम्मेलन, नई दिल्ली, 13 सितंबर, 2010 को संबोधित करते हुए https://archivepmo.nic। भाषण-विवरण.php?nodeid=926, 2 नवंबर 2022 को अभिगम्य

[14]74वें स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त 2020 पर राष्ट्र के नाम संबोधन में नरेंद्र मोदी https://pib.gov.in/PressReleseDetail। .aspx? PRID = 1646045, 3 नवंबर 2022 को अभिगम्य।

[15]व्हाइट हाउस, संयुक्त राज्य अमेरिका की हिंद-प्रशांत रणनीति, फरवरी 2022, https://www.whitehouse.gov/briefing-room/ speeches-remarks/2022/02/11/fact-sheet-indo-pacific-strategy-of-the-united-states/, 05 नवंबर 2022 को अभिगम्य।

[16]हिंद-प्रशांत क्षेत्र को हिंद-प्रशांत फ्रेम के रूप में जोड़ते हुए, विदेश मंत्री एस जयशंकर ने टिप्पणी की: "हिंद महासागर और प्रशांत महासागर को अलग-अलग डिब्बों के रूप में अलग करना कम से कम स्वीकार्य लगता है। हम एक-दूसरे की निकटता में काफी स्पष्ट रूप से हैं और अन्यथा दिखावा करना वास्तव में यथार्थवादी नहीं है।

[17]संयुक्त राष्ट्र महासभा, 'शांति के क्षेत्र के रूप में हिंद महासागर की घोषणा: संकल्प,' 15 दिसंबर 1972, https:// digitallibrary.un.org/record/191429?ln=en#record-files-collapse-header, 7 नवंबर 2022 को अभिगम्य।

[18]लोकसभा, भारत के तत्कालीन विदेश मंत्री प्रणब मुखर्जी द्वारा दिया गया वक्तव्य, 03 मार्च 2008।

[19]मालदीव गणराज्य, राष्ट्रपति कार्यालय, "आपराधिक मामलों में आपसी कानूनी सहायता पर मालदीव गणराज्य और भारत गणराज्य के बीच संधि" में 'मालदीव की भागीदारी' संसद की मंजूरी के लिए प्रस्तुत की जाएगी, 12 फरवरी 2019, https://presidency.gov.mv/Press/Article/20642#:~:text=As% 20per%20the%20%E2%80%9CMutual%20Legal,especially%20 अपराध% 20 से % 20 आतंकवाद, 10 नवंबर 2022 को अभिगम्य।

[20]भारत सरकार, गृह मंत्रालय, 'आपराधिक मामलों में पारस्परिक कानूनी सहायता पर दिशानिर्देश,' दिसंबर 2019, पृष्ठ 4-5, https://www.mha.gov.in/sites/default/ files/ISII_ComprehensiveGuidelines16032020.pdf, 12 नवंबर 2022 को अभिगम्य।

[21]भारत सरकार, विदेश मंत्रालय, 'भारत-मालदीव द्विपक्षीय संबंध', https://mea.gov.in/Portal/ForeignRelation/ भारत-Maldives_2022.pdf, 13 नवंबर 2022 को अभिगम्य।

[22]मालदीव सरकार, 'मालदीव और भारत के बीच छठी संयुक्त आयोग की बैठक (जेसीएम) पर संयुक्त प्रेस वक्तव्य', 13 दिसंबर 2019, https://www.gov.mv/en/news-and-communications/joint-press-statement-on-the-6th-joint-commission-meeting-jcm-between-maldives-and-india, 15 नवंबर 2022 को अभिगम्य।

[23]मालदीव सरकार, 'भारत और मालदीव ने दोनों देशों के बीच क्षमता निर्माण और सहयोग के लिए कई प्रमुख समझौतों पर हस्ताक्षर किए,' 26 मार्च 2022, https://www.gov.mv/en/news-and-communications/india-and-maldives-sign-several-key-agreements-to-build-capacity-and-cooperation-between-both-countries, 18 नवंबर 2022 को अभिगम्य।

[24]https://slhcindia.org/index.php?option=com_content&view=article&id=550:annual-defence-dialogue-between-india-and-,25 नवंबर 2022 को अभिगम्य।

[25]गृह मंत्रालय, भारत, 'भारत-श्रीलंका पुलिस प्रमुखों की वार्ता', https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage। .aspx? PRID = 1710427, 28 नवंबर 2022 को अभिगम्य।

[26]भारतीय नौसेना, 'श्रीलंका-भारत द्विपक्षीय समुद्री अभ्यास एसएलआईएनईएक्स,' 07-10 मार्च 2022, https://indiannavy.nic.in/content/sri-lanka- भारत-द्विपक्षीय-समुद्री-अभ्यास-स्लाइनेक्स-07-10-मार्च-2022 #:~:text=10%20 मार्च%202022-, श्रीलंका%20लंका%20%2D%20India%20 द्विपक्षीय%20म 202022 र्क%20 मार्च 2010%, 20 मार्च 2010%, 20 मार्च 2010%, 20 मार्च 2010%, 20 मार्च 2010%, 20 मार्च 2010%, 20 मार्च 2010%, 20 मार्च 2022 को अभिगम्य।

[27]भारतीय सेना, 'भारत-श्रीलंका संयुक्त सैन्य अभ्यास-मित्र शक्ति-अम्पारा (श्रीलंका) में समाप्त होता है', 18 अक्तूबर 2021, https:// indianarmy.nic.in/Site/PressRelease/ PressRelease.aspx?n=bniEtbbo9LN7kb4q3kupGg==&NewsID=qQ6MqMaw7weLhZu1mXfJRg ==, 02 दिसंबर 2022 को को अभिगम्य।

[28]'भारत चुनौतीपूर्ण समय में भी श्रीलंकाई सशस्त्र बलों को प्रशिक्षित करने का वचन देता है। संडे आइलैंड, 08 अक्तूबर 2022, https://island.lk/india, 03 दिसंबर 2022 को अभिगम्य।

[29]आकाशवाणी, 'भारत ने श्रीलंका को डोर्नियर मैरीटाइम टोही विमान उपहार में दिया', 16 अगस्त 2022, https://newsonair.gov.in/Main- समाचार-विवरण.aspx?id=446054, 05 दिसंबर 2022 को अभिगम्य।

[30]भारत का उच्चायोग, मालदीव, मालदीव, मालदीव और श्रीलंका के साथ भारतीय तटरक्षक बल द्वारा संयुक्त 'दोस्ती' अभ्यास, 27 अक्तूबर 2014, https://hci.gov.in/male/?3628?000, 06 दिसंबर 2022 को अभिगम्य।

[31]आईओआरए चार्टर का अनुबंध। देखें, https://www.iora.int/media/8248/iora-charter-min.pdf, 08 दिसंबर 2022 को अभिगम्य।

[32]हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी, 'आईओएनएस के बारे में', https://www.ions.global/, 08 दिसंबर 2022 को अभिगम्य।

[33]भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय, 'आईओएनएस समुद्री अभ्यास 2022 (आईएमईएक्स 22), पत्र सूचना ब्यूरो, 30 मार्च 2022, https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1811590, 09 दिसंबर 2022 को अभिगम्य।

[34]भारत सरकार, विदेश मंत्रालय, 'इंडो-पैसिफिक डिवीजन ब्रीफ्स', फरवरी 2020, https://mea.gov.in/Portal/ फॉरेन रिलेशन/Indo_Feb_07_2020.pdf, 11 दिसंबर 2022 को अभिगम्य।

[35]भारतीय नौसेना, 'सूचना संलयन केंद्र-हिंद महासागर क्षेत्र', https://www.indiannavy.nic.in/ifc-ior/about-us.html, 14 दिसंबर 2022 को अभिगम्य।

[36]बिम्सटेक, 'सुरक्षा', https://bimstec.org/security-2/, 15 दिसंबर 2022 को अभिगम्य।

[37]डैनियल जेड सुई, "टॉबलर का भूगोल का पहला नियम: एक छोटी सी दुनिया के लिए एक बड़ा विचार?" अमेरिकी भूगोलवेत्ताओं के संघ के इतिहास, खंड 94, अंक 2, पृष्ठ 269।

[38]महिंदा राजपक्षे चुनाव घोषणापत्र, 2010, https://www.preventionweb.net/files/ mahinda_chintana_vision_for_the_future_ eng%5B1%5D.pdf

[39]गोटाबाया विस्टास ऑफ प्रॉस्पेरिटी एंड स्प्लेंडर, 2019, https://**Error! Hyperlink reference not valid.** Manifesto_English.pdf

[40]बिजनेस स्टैंडर्ड, 19 नवंबर 2022, 'श्रीलंका के राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे ने स्वीकार किया कि गलतियों के कारण आर्थिक संकट पैदा हुआ', https:// www.business-standard.com/article/international/sri-lankan-prez-gotabaya-rajapaksa-admits-mistakes-led-to-economic-crisis-122041900143_1.html

[41]शिन्हुआ, 12 फरवरी 2021, 'साक्षात्कार: श्रीलंका के विदेश सचिव ने कहा, शिनजियांग में नरसंहार या हिरासत शिविर का कोई सबूत नहीं' http://www.xinhuanet.com/english/2021-02/12/c_139739459.htm

[42]फरजान जेड, 4 जनवरी 2022, 'कानूनी पेशे में लौटने के लिए तैयार'- सुसिल ने https://www.newsfirst राज्य मंत्रालय छोड़ दिया। 2022/01/04/रेडी-टू-रिटर्न-टू-लीगल-प्रोफेशन-सुसिल-पैक्स-अप-लीव्स-स्टेट-मिनिस्ट्री/

[43]एएनआई, 23 नवंबर 2021, 'कोलंबो पोर्ट सिटी परियोजना को जल्दबाजी में मंजूरी दी गई, चीन के रणनीतिक हित की सेवा करेगी', https://www.aninews.in/news/world/asia/colombo-port-city-project-approved-in-haste-will-serve-chinas-strategic-interest-says- report20211123122034/https://www.aninews.in/news/world/asia/colombo-port-city-project-approved-in-haste-will-serve- chinas-strategic-interest-says-report20211123122034/

[44]वीओए, 17 जुलाई 2022, 'संयुक्त राष्ट्र रिपोर्ट: 71 मिलियन अधिक लोगों ने गरीबी में होने की सूचना दी', https://learningenglish.voanews.com/a/un- report-71-million-more-people-reported-to-be-in-poverty/6655422.html

[45]जयसूर्या आर, 22 अगस्त 2022, https://twitter.com/RangaJayasuriya/status/1561762005434105857?s=20&t=jdArJ4339KNEntntcwqpTQ

[46]कोलंबो टाइम्स, 23 जुलाई 2022, https://www.colombotimes.net/us-envoy-tells-lankan-president-this-is-not-the-time-to-crack- down/

[47]सीएनबीसी, 20 जुलाई 2022, https://www.cnbc.com/2022/07/20/china-can-play-critical-role-to-help-sri-lanka-with-its-debt-problems- analysts-say.html

[48]द इंडियन एक्सप्रेस, 24 फरवरी 2021, https://indianexpress.com/article/world/हंबनटोटा-पोर्ट-डील-चाइना-7203319/

[49]पंत एच वी, 23 अगस्त 2022, द टेलीग्राफ इंडिया, https://www.telegraphindia.com/opinion/ship-of-concern/cid/1881839

[50]इकोनॉमिक टाइम्स, 3 दिसंबर 2021, https://economictimes.indiatimes.com/news/international/business/china-suspends-lanka- ऊर्जा-परियोजना-अति-सुरक्षा-चिंताएं/लेखशो/88067029.cms

[51]श्रीलंका में मंत्रालय के वरिष्ठ सचिव का नाम अज्ञात रखा गया है। राजनीतिक-आर्थिक विश्लेषण के लिए 2021 की पहली तिमाही में लेखक और एक शोध सहायक द्वारा आयोजित साक्षात्कार।

[52]अबेयागूनसेकरा, आईएसडीपी, https://www.isdp.eu/publication/china-in-sri-lanka-and-solomon-islands-role-of-littorals-in-the- geopolitical-competition/

[53]एएनआई, 26 सितंबर 2020, https://timesofindia.indiatimes.com/india/india-has-हमेशा प्राथमिकता-श्रीलंका-अंडर-नेबरहुड-फर्स्ट-पॉलिसी-सागर-डॉक्ट्रिन-पीएम-मोदी/आर्टिकलशो/78331886.cms

[54]कार्नेगी दक्षिण एशिया, 2021, https://carnegieendowment.org/2021/10/13/china-s-influence-in-south-asia-vulnerabilities-and-resilience-in-four-countries-pub-85552

[55]व्हाइट हाउस, 23 मई 2022, आईपीईएफ, https://www.whitehouse.gov/briefing-room/statements-releases/2022/05/23/fact-sheet-in- asia-president-biden-and-a-dozen-indo-pacific-partners-launch-the-indo-pacific-economic-framework-for-prosperity/

[56]मदन टी, जयशंकर डी, 19 मई 2022, विदेश मामले, https://www.foreignaffairs.com/articles/world/2022-05-19/quad-needs-harder-edge

[57]एशिया सोसाइटी, 2022, https://asiasociety.org/policy-institute/नेविगेटिंग-बेल्ट-रोड-इनिशिएटिव-टूलकिट

[58]जानकारी के लिए अदलुरी सुब्रमण्यम राजू, "बिम्सटेक में समुद्री सीमा का परिसीमन", अदलुरी सुब्रमण्यम राजू और अनासुआ रे चौधरी (संपादन), बिम्सटेक के लिए नया भविष्य: कनेक्टिविटी, वाणिज्य और सुरक्षा, लंदन: रूटलेज, 2022, पृष्ठ 28-29 देखें।

[59]डेविड ब्रूस्टर, भारत का महासागर: क्षेत्रीय नेतृत्व के लिए भारत की बोली की कहानी, लंदन और न्यूयॉर्क: रूटलेज, 2014, पृष्ठ 73।

[60]नीलांथी समरनायके, "महान शक्तियों के क्षेत्र में द्वीप राष्ट्र ", डेविड मिशेल और रिकी पासरेली (सं.), सागर परिवर्तन: हिंद-प्रशांत क्षेत्र में समुद्री भू-राजनीति का विकास, वाशिंगटन डीसी: स्टिमसन सेंटर, दिसंबर 2014, पृष्ठ 59

[61]विनीता रेवी, "हिंद महासागर क्षेत्र में सेशेल्स के प्रति भारत का दृष्टिकोण," ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन, 26 अप्रैल 2021।

[62]समरनायके, एन.60, पी.60.

[63]सचिन पराशर, "मेडागास्कर भारत के साथ रक्षा संबंधों को गहरा करना चाहता है", द टाइम्स ऑफ इंडिया, 8 फरवरी 2021।

[64]अमेरिका के संयुक्त कार्य बल 150 और 151, यूरोपीय संघ आधारित ऑपरेशन अटलांटा और नाटो के ऑपरेशन ओशन शील्ड

[65]भारतीय नौसेना, "आईएनएस त्रिकंद एस्कॉर्ट्स वर्ल्ड फूड प्रोग्राम शिप", https://www.indiannavy.nic.in/content/ins-trikand-escorts- world-food-programme-ship, अभिगमन तिथि 13 सितंबर 2021.

[66]दिनाकर पेरी, "भारत सूचना के आदान-प्रदान के लिए मेडागास्कर, अबू धाबी में नौसैनिक संपर्क तैनात करना चाहता है", द हिंदू, 14 जून 2020, https://www.inkl.com/news/india-looks-to-deploy-naval-liaisons-at-madagascar-abu-dhabi-for-information-exchange. अभिगमन तिथि 24 नवंबर 2022.

[67]प्राजक्ता सावंत, "हिंद महासागर में चीन: विकास से परे एजेंडा?", आधुनिक कूटनीति, 19 फरवरी 2022, https:// moderndiplomacy.eu/2022/02/19/china-in-the-indian-ocean-agenda-beyond-development/

[68]अनंत कृष्णन, "19 देशों के चीन के हिंद महासागर फोरम में भारत अकेला अनुपस्थित है", द हुंडू, 27 नवंबर 2022, पृष्ठ 12।

[69]इंडोनेशिया, पाकिस्तान, म्यांमार, श्रीलंका, बांग्लादेश, मालदीव, नेपाल, अफगानिस्तान, ईरान, ओमान, दक्षिण अफ्रीका, केन्या, मोजाम्बिक, तंजानिया, सेशेल्स, मेडागास्कर, मॉरीशस, जिबूती और ऑस्ट्रेलिया।

[70]कृष्णन, एन.68.

[71]कृष्णन, एन.68.

[72]आर.सी. बोतेई, "एशिया-प्रशांत समुद्री जैव-पूर्वेक्षण से लाभान्वित हो सकता है", 3 फरवरी 2012, http://www.scidev.net/global/indigenous/ news/asia-pacific-may-benefitfrom-marine-bio-prospecting.html, अभिगमन तिथि 27 जुलाई 2015.

[73]बरुआ डीएम, 2022, हिंद महासागर में समुद्री प्रतियोगिता, कार्नेगी एंडोमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस, https:// carnegieendowment.org/2022/05/12/maritime-competition-in-indian-ocean-pub-87093

[74]लैग्नेउ एल, 2014, «Pourquoi il faut s'intéresser aux îles éparses",http://www.opex360.com/2014/07/19/pourquoi-il-faut-sinteresser-aux-iles-eparses/

[75]दा-तियान वू, जोहान इओमिलाला रामानिरका, फेंग-मिंग जू, जियान-बो शाओ, योंग-हेंग झोउ, युआन-डोंग झाओ, ब्रूनो रालिसन, 2019, "मेडागास्कर हाइड्रोकार्बन-असर बेसिन की विशेषताएं और संभावित विश्लेषण", चीन भूविज्ञान, खंड 2, अंक 1, 2019, पृष्ठ 56-66, पाद-टिप्पणियाँ

https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S2096519219301089

[76]वैश्विक पहल, "'उने प्लेक टूर्नेंटे': क्षेत्रीय अवैध बाजारों में मेडागास्कर की बदलती भूमिका- वेबिनार," ग्लोबल इनिशिएटिव, 2020, https://globalinitiative.net/analysis/une-plaque-tournante-madagascar-webinar/

[77]हिंद महासागर आयोग; दक्षिणी अफ्रीकी विकास समुदाय; हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी; हिंद महासागर रिम एसोसिएशन।

[78]अन्य 3 संगठन हैं: आसियान; खाड़ी सहयोग परिषद और दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन।

[79]रफीडिनारिवो सी., 2021, द कंजर्वेशन, https://theconversation.com/la-nouvelle- जियोपॉलिटिक-डी-लोकेन-इंडियन-152638

[80]विदेश मंत्रालय ने 2021 में कहा, "मेडागास्कर में चीन के राष्ट्रपति के रूप में जाना जाता है।http://www.defense.gov.mg/lattache-de-defense-de-chine-a-madagascar-a- effectue-une-visite-de-courtoisie-aupres-du-ministre-de-la-defense-nationale/

[81]संकल्प A/RES/69/131

[82]करण 18वीं शताब्दी से मेडागास्कर में मौजूद हैं। "करण" नाम, जिसे पहले लिखा गया था, "कुरान" शब्द से आया है। वे काठजावाड़ के प्रायद्वीप से हैं और अधिक व्यापक रूप से गुजरात जिले से हैं, जो पहले बड़ौदा की सल्तनत का हिस्सा था, लेकिन अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी के क्षेत्र "बॉम्बे के प्रेसीडेंसी" के बहुत करीब था। व्यापक अर्थों में करण को 5 सामाजिक-धार्मिक समूहों में विभाजित किया गया है, 3 शिया मुस्लिम समूह हैं, बोहरा दावुदी, खोदजा इथना एशेरी, खोदजा इस्माइली; 1 सुन्नी मुस्लिम समूह, सुन्नी सुरती या सुन्नी सिंधी या कच्छी (भौगोलिक मूल के संदर्भ में) और हिंदू धर्म के अंतिम समूह बनियान। भारतीय दूतावास के अनुसार मेडागास्कर में भारतीय मूल के लगभग 17,500 लोग होंगे, जिनमें लगभग 2500 भारतीय पासपोर्ट धारक शामिल होंगे। वे वास्तव में पश्चिम के शहरों में दुकानों के एक बड़े बहुमत के मालिक हैं और केंद्र के शहरों में एक गैर-नगण्य हिस्सा है। ब्लैंची एस. 1995, कर्ना एट बानियन्स: इंडीने मेडागास्कर, पेरिस, एल'हरमाटन, 346 पी.

[83]एडमंड आर., 2022, "कॉपोरेशन: "मेडागास्कर, जो कि भारत के लिए सबसे महत्वपूर्ण है" और भारत के अभय कुमार के लिए सबसे महत्वपूर्ण है" मिडी मेडागासिकरा, 14 जून 2022, https://midi-madagasikara.mg/2022/06/14/ सहयोग-मेडागास्कर-गैर-पोल-महत्वपूर्ण-डी-लॉजिक-इंडियन-एन-से-मैग्नेटिक-डी-विकसित-क्षेत्रीय-विकास-क्षेत्र

[84]पब्बी, एम (2007, 18 जुलाई)। भारत ने विदेशी धरती पर पहली सुनवाई चौकी सक्रिय की: मेडागास्कर में रडार। इंडियन एक्सप्रेस।http://archive. indianexpress.com/news/india-activatesfirst-listening-post-on-foreign-soil-radars-in-madagascar/205416/

[85]https://www.rips.or.jp/en/rips_eye/1575/

भारतीय वैश्विक परिषद (आईसीडब्ल्यूए) की स्थापना 1943 में सर तेज बहादुर सप्रू और डॉ. एच.एन. कुंजरू के नेतृत्व में प्रतिष्ठित बुद्धिजीवियों के एक समूह द्वारा की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर एक भारतीय परिप्रेक्ष्य बनाना और विदेश नीति के मुद्दों पर ज्ञान और सोच के भंडार के रूप में कार्य करना था। 2001 में संसद के एक अधिनियम द्वारा, भारतीय वैश्विक परिषद को राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया गया है। परिषद आज एक आंतरिक संकाय के साथ-साथ बाहरी विशेषज्ञों के माध्यम से नीति अनुसंधान आयोजित करती है। यह नियमित रूप से सम्मेलनों, संगोष्ठियों, गोलमेज चर्चाओं, व्याख्यानों सहित बौद्धिक गतिविधियाँ आयोजित करती है और प्रकाशन करती है। इसमें सुभंडारित पुस्तकालय, एक सक्रिय वेबसाइट है, और 'इंडिया क्वार्टरली' पत्रिका का प्रकाशन करती है। आईसीडब्ल्यूए ने अंतर्राष्ट्रीय थिंक टैंक और अनुसंधान संस्थानों के साथ 50 से अधिक समझौता ज्ञापन किए हैं ताकि अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर बेहतर समझ को बढ़ावा दिया जा सके और आपसी सहयोग के क्षेत्रों को विकसित किया जा सके। परिषद की भारत में अग्रणी अनुसंधान संस्थानों, थिंक टैंक और विश्वविद्यालयों के साथ साझेदारी भी है।

भारतीय वैश्विक
परिषद

सप्रू हाउस, नई दिल्ली